हमारे मास्टर साहब
जयराम वर्मा जी

सौजन्य से

राम केवल वर्मा

पूर्व उप सचिव वित्त विभाग, उ.प्र. सचिवालय

PRO मंत्री जयराम वर्मा जी

जयराम वर्मा के नाती कार्यालय कार्यों में व्यस्त विद्यालय के पूर्व प्रबन्धक राकेश वर्मा
Ex. Dy. Manager Grid Corporation of India

मा. श्री जयराम वर्मा की पुत्री एवं दामाद श्रीमती सावित्री एवं श्री पारस नाथ चौधरी
दोनों की अब स्वर्गवासी हो चुके है।

हमारे मास्टर साहब
जयराम वर्मा जी

लेखक

राम केवल वर्मा

पूर्व उप सचिव वित्त विभाग, उ.प्र. सचिवालय

PRO मंत्री जयराम वर्मा जी

632/3, अजय नगर, कमता, चर्चरोड, कल्पना कॉलोनी

के सामने, चिनहट, लखनऊ–226028

मो.: 9919935999

लेखक : **राम केवल वर्मा**
पूर्व उप सचिव वित्त विभाग, उ.प्र. सचिवालय
पीआरओ मंत्री जयराम वर्मा जी
632/3, अजय नगर, कमता, चर्चरोड, कल्पना कॉलोनी के सामने, चिनहट, लखनऊ–226028, मो.: 9919935999

प्रथम : संस्करण 2024

मूल्य : 150 रुपये

सौजन्य से : माता सावित्री फाउण्डेशन, गोरखपुर

प्रकाशक : ज्ञानप्रकाश जखमी
बुद्ध अम्बेडकर कल्याण एसोसिएशन उ.प्र. (रजि.)
356/340/835, राजगार्डेन कालोनी, आलमनगर, लखनऊ–226017, मो. 9415941920, 8181819657
E-mail : baks.gpjakhmi@gmail.com

मुद्रक : **लक्ष्मी ऑफसेट,** 539क/100क/240, देवपुरी भवन, संजय गांधीपुरम, फैजाबाद रोड, लखनऊ–226016

आवरण सज्जा : सन्दीप सुल्तानपुरी

Manvar Shree Jairam Verma ka Vyaktitv
Writen By Ramkeval Verma

धर्मपाल सिंह
मंत्री
सिंचाई, सिंचाई (यांत्रिक) विभाग उ.प्र.

मंत्री
उत्तर प्रदेश

कार्यालय कक्ष सं.: 65–66 मुख्य भवन
दूरभाष स.: 2238079 (का.)
: 2213258 (सी.एच.)

दिनांक :.................................2017

सन्देश

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, पूर्व सांसद एवं मंत्री, उत्तर प्रदेश स्व0 श्री जयराम वर्मा की जीवनी पर एक पुस्तक छपवाई जा रही है। वर्मा जी ईमानदार, कर्मठ, साहसी और मिलनसार व्यक्ति रहे हैं। इनके द्वारा नेता विरोधी दल के पद का दायित्व सफलतापूर्वक निर्वहन किया गया है। ईमानदारी ही उनकी पूँजी थी, ऐसे व्यक्तित्व के धनी वर्मा जी के जीवन पर पुस्तक का प्रकाशन बहुत अच्छा प्रयास है।

मैं पुस्तक के सफल प्रकाशन एवं उसकी सफलता की मंगल–कामना करता हूँ।

आपका,

(धर्म पाल सिंह)

श्री राम केवल वर्मा,
632/3 अजय नगर कमता,
चर्च रोड, पो– चिनहट
जिला लखनऊ।

(ii)

स्वतंत्रदेव सिंह
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
परिवहन, प्रोटोकाल, ऊर्जा
(एम.ओ.एस.) विभाग,
उत्तर प्रदेश

पत्रांक 698/ ... /2018

कक्ष सं० 88 - मुख्य भवन
उत्तर प्रदेश सचिवालय, लखनऊ
दूरभाष : 0522-2238412(कार्या.)
0522-2235595 (आ.)
सी. एच. : 2213302

दिनांक 27.06.2018

सन्देश

महान् स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पूर्व संसद सदस्य एवं मा० डा० सम्पूर्णानन्द, चन्द्रभानु गुप्त, सुचिता कृपलानी, चौधरी चरण सिंह एवं श्री नारायण दत्त तिवारी जी के मंत्रिमण्डल में मंत्री रहे श्री जयराम वर्मा जी के राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन पर आधारित पुस्तक का प्रकाशन किये जाने की सूचना पाकर मुझे अपार हर्ष हुआ। जहाँ तक मेरी जानकारी है कि इस महापुरुष ने भारत की आजादी प्राप्त होने के पहले दबे, कुचले असहाय समाज के विकास हेतु लोगों को शिक्षित करने के उद्देश्य से पूर्व में ही अनेको विद्यालयों की स्थापना करवाकर एक अभूतपूर्व ऐतिहासिक कार्य किया था, साथ ही इस समाज में व्याप्त कुरीतियो को "समाज सुधार" नामक संस्था के माध्यम से दूर करने का किया गया अथक प्रयास हमेशा स्मरणीय रहेगा।

श्री जयराम वर्मा जी सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी सक्रिय थे और आप 01 वर्ष 15 दिन जिला फैजाबाद एवं सेंट्रल जेल वाराणसी में बन्द रहे वे प्रथम बार बाराबंकी विधानसभा से निर्विरोध विधायक चुने गये थे तथा वर्ष 1952, 1957, 1962, 1967 के सामान्य निर्वाचनों से कांग्रेस के टिकट पर निरंतर विधानसभा के सदस्य निर्वाचित होते रहे। वर्ष 1976 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने आपको "नेशनल सीड कारपोरेशन ऑफ इण्डिया" और गर्वमेन्ट फारमर्स का चेयरमैन भी नियुक्त किया था। वर्ष 1970 और 1985 में आप टाँडा विधानसभा से निर्वाचित हुए और महामहिम श्री राज्यपाल ने आपको "प्रोटिम स्पीकर" नियुक्त किया फिर श्री नारायण दत्त तिवारी जी के मंत्रिमण्डल में नियोजन मंत्री बने। वे दो बार विधानसभा के नेता विरोधी दल भी रहे।

हमें पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक के प्रकाशन से भारत की जनता में नई प्रेरणा एवं चेतना का स्रोत उत्पन्न होगा। मैं सम्पादक व सहयोगियों की प्रसंशा करते हुए आभार व्यक्त करता हूँ।

27.06.2018
(स्वतंत्रदेव सिंह)
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
परिवहन प्रोटोकाल, ऊर्जा (MOS)
उत्तर प्रदेश

श्री राम केवल वर्मा जी,
पूर्व शोध अधिकारी,
उत्तर प्रदेश सचिवालय,
632/3 अजय नगर, कमता चर्च रोड,

डॉ० दिनेश शर्मा

उप मुख्यमंत्री
उत्तर प्रदेश

99-100, विधान भ
लखनऊ

दिनांक: 16/5/18

सन्देश

यह हर्ष का विषय है कि महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, पूर्व सांसद एवं डॉ0 सम्पूर्णानन्द, श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्रीमती सुचेता कृपलानी, चौधरी चरण सिंह एवं श्री नारायण दत्त तिवारी के मंत्रिमण्डल में मंत्री रहे श्री जयराम वर्मा के जीवन के ऊपर एक पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। श्री जयराम वर्मा दो बार विधानसभा में नेता विरोधी दल रहे। वह जनता में एक बहुत ईमानदार, कर्मठ, साहसी एवं मिलनसार नेता के रूप में जाने जाते थे।

श्री जयराम वर्मा वर्ष--1946 में बाराबंकी विधानसभा क्षेत्र से निर्विरोध विधायक निर्वाचित हुये थे तथा वर्ष--1952, 1957, 1962 एवं 1967 के सामान्य निर्वाचनों में निरन्तर विधानसभा के सदस्य निर्वाचित होते रहे। वर्ष 1976 में तत्कालीन प्रधानमंत्री, श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा उनको नेशनल सीड कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया और गवर्नमेन्ट फार्म्स का चेयरमैन नियुक्त किया गया था।

श्री जयराम वर्मा को इस प्रदेश के गौरव तथा भारत माता के सच्चे सपूत के रूप में याद किया जाता है। उनके जीवनवृत्त के ऊपर प्रकाशित की जाने वाली पुस्तिका के सफल प्रकाशन के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

(डॉ० दिनेश शर्मा)

श्री रामकेवल वर्मा जी,
632/3, अजय नगर, कामता
चर्च रोड, पो0--चिनहट
जिला--लखनऊ।

संख्या- 112 /वी.आई.पी./मं.ग.क.परि.क./पर्यटन/2018
कक्ष संख्या : 67–68, मुख्य भवन
उ0प्र0 सचिवालय

दिनांक : 04/06/18

–:संदेश:–

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि महान स्वतन्त्रता सेनानी, पूर्व संसद सदस्य एवं माननीय डॉ0 सम्पूर्णानन्द, श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्रीमती सुचिता कृपलानी, चौधरी चरण सिंह एवं श्री नारायण दत्त तिवारी के मंत्रिमण्डल में मंत्री रहे श्री जयराम वर्मा के जीवन–वृत्त पर एक पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। श्री जयराम वर्मा दो बार विधान सभा में विरोधी दल के नेता भी रहे थे। श्री वर्मा जी जनता में अत्यन्त ईमानदार, कर्मठ, साहसी एवं मिलनसार नेता के रूप में विख्यात थे।

श्री जयराम वर्मा जी 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी सक्रिय रहे थे एवं प्रथम बार बाराबंकी विधान सभा क्षेत्र से निर्विरोध निर्वाचित हुए थे साथ ही वर्ष 1952, 1957, 1962 एवं 1967 के आम चुनाव में लगातार विधानसभा के सदस्य निर्वाचित होते रहे। वर्ष 1976 में 'नेशनल सीड कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया तथा गवर्नमेन्ट फार्म्स' के चेयरमैन भी रहे।

श्री जयराम वर्मा जी का भारतीय राजनीति में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है एवं यह प्रदेश उनके इस योगदान के लिए गौरवान्वित महसूस करता है। उनके जीवन–वृत्त पर प्रकाशित हो रही पुस्तिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी तरफ से हार्दिक शुभकामनायें।

(प्रो0 रीता बहुगुणा जोशी)

श्री राम केवल वर्मा,
पूर्व शोध अधिकारी (वित्त),
632/3, अजय नगर, कामता,
चर्च रोड, पोस्ट–चिनहट,
लखनऊ।

स्वामी प्रसाद मौर्य
मंत्री
श्रम एवं सेवायोजन, समन्वय विभाग
उत्तर प्रदेश

कार्यालय : कक्ष सं0 : 86-87
मुख्य भवन उ0 प्र0 सचिवालय
लखनऊ
दूरभाष कार्यालय : 0522-2238124
सी0 एच0 : 0522-2213263

दिनांक........................

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि महान स्वतन्त्रता सेनानी, पूर्व संसद सदस्य एवं माननीय डॉ0 सम्पूर्णनन्द, श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्रीमती सुचिता कृपलानी, चौधरी चरण सिंह एवं श्री नारायण दत्त तिवारी के मंत्रिमण्डल में मंत्री रहे श्री जयराम वर्मा के जीवन–वृत्त पर एक पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। श्री जयराम वर्मा दो बार विधान सभा में विरोधी दल के नेता भी रहे थे। श्री वर्मा जी जनता में अत्यन्त ईमानदार, कर्मठ, साहसी एवं मिलनसार नेता के रूप में विख्यात थें। श्री जयराम वर्मा जी 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी सक्रिय रहे थे एवं प्रथम बार बाराबंकी विधान सभा क्षेत्र से निर्वाचित हुए थे साथ ही वर्ष 1952, 1957, 1962 एवं 1967 के आम चुनाव में लगातार विधानसभा के सदस्य निर्वाचित होते रहे। वर्ष 1976 में नेशनल सीड कॉर्पोरेशन आफ इण्डिया तथा गवर्नमेन्ट फार्म्स के चेयरमैन भी रहे।

श्री जयराम वर्मा जी का भारतीय राजनीति में बहुत ही महत्पूर्ण योगदान रहा है एवं यह प्रदेश उनके इस योगदान के लिए गौरवान्वित महसूस करता हैं उनके जीवन–वृत्त पर प्रकाशित हो रही पुस्तिका के सफल प्रकाशन के लिए मै अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(स्वामी प्रसाद मौर्य)

(स्वामी प्रसाद मौर्य)
मंत्री
श्रम एवं सेवायोजन, समन्वय विभाग
उत्तर प्रदेश

श्री राम केवल वर्मा
पूर्व शोध अधिकारी(वित्त)
632/3, अजय नगर कामता
चर्च रोड, पोस्ट–चिनहट, लखनऊ।

मा. श्री जयराम वर्मा जी चर्खा कात रहे हैं

महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, पूर्व सांसद सदस्य एवं मंत्री उ.प्र. शासन

जयराम वर्मा जी का जीवन परिचय

पिता का नाम	:	स्व. ननकू चौधरी
माता का नाम	:	नैपाली देवी
जन्म	:	4 फरवरी, 1904 फैजाबाद
निवास	:	ग्राम बड़ा गांव इब्राहिमपुर, केदार नगर नाउसांडा टाण्डा अम्बेडकर नगर
जाति एवं धर्म	:	कुर्मी, हिन्दू
शिक्षा	:	हाई स्कूल एवं इण्टर जी.आई.सी. फैजाबाद, बी.ए. एवं स्नात्कोत्तर डिग्री (एम.ए. प्रथम श्रेणी गणित से) इलाहाबाद विश्वविद्यालय
धर्म पत्नी	:	स्व. प्राणा देवी
पारिवारिक विवरण	:	एक पुत्र स्व. कमलापति वर्मा तथा एक पुत्री स्व. सावित्री, पौत्र स्व. राकेश वर्मा एवं पौत्री श्रीमती उषा वर्मा
व्यवसाय	:	कृषि

वर्ष 1946 में प्रथम बार आप बाराबंकी विधान सभा के सदस्य निरविरोध निर्वाचित हुए वर्ष 1952, 1957, 1962 एवं 1967 के सामान्य निर्वाचन में कांग्रेस के टिकट पर निरन्तर विधानसभा के सदस्य निर्वाचित होते रहे। वर्ष 1959 में आप डाक्टर सम्पूर्णानंद जी के मुख्यमंत्रित्व काल में उपमंत्री बने और लगातार श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्रीमती सुचेता कृपलानी के मुख्यमंत्रित्व काल में मार्च 1967 तक लगातार उपमंत्री वित्त एवं न्याय रहे। पहली अप्रैल 1967 को कांग्रेस पार्टी त्यागकर चौ0 चरण सिंह के नेतृत्व में 17 सदस्यों की एक नई पार्टी का गठन 'जन कांग्रेस' के नाम से किया। 01 अपैल 1967 को ही चन्द्रभानु गुप्त अल्पमत में हो जाने के कारण मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र दिया और चौ0 चरण सिंह प्रथम बार नये संविद सरकार के प्रथम मुख्य मंत्री बने। उस समय आप कृषि, सामुदायिक विकास एवं पंचायती राज, गन्ना विकास एवं चीनी मील्स सहित पांच विभागों के मंत्री बने।

कुछ महीनों के उपरान्त पार्टी का नाम 'भारतीय क्रांति दल' (बी.के.डी.) रखा गया और उसके आप प्रदेश अध्यक्ष बने। वर्ष 1970 में भारतीय क्रांति दल (बी.के.डी.) के टिकट पर आप टाण्डा विधान सभा उपचुनाव में निर्वाचित हुए और गन्ना विकास तथा चीनी मिल्स के कैबिनेट मंत्री बने।

वर्ष 1974 में इमरजेन्सी लागू होने के पहले चौ. चरण सिंह से मतभेद हो जाने के फलस्वरूप एवं पं. कमला पति त्रिपाठी के विशेष अनुरोध पर आप भारतीय कांग्रेस पार्टी में सम्मिलित हुए। वर्ष 1976 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने आपको 'नेशनल सीड कारपोरेशन ऑफ इण्डिया' और गवर्नमेन्ट फार्म्स का चेयरमैन नियुक्त किया।

वर्ष 1977 के लोकसभा चुनाव में श्रीमती इन्दिरा गांधी सहित कांग्रेस पार्टी की पराजय के बाद नैतिकतावश आपने श्रीमती गांधी के मना करने के बाद भी उक्त दोनों पदों से त्यागपत्र दे दिया। वर्ष 1980 में लोकसभा के सामान्य निर्वाचन में फैजाबाद संसदीय क्षेत्र से आप एम०पी० चुने गये। मार्च 1985 के सामान्य विधानसभा निर्वाचन में आप पुनः टाण्डा विधानसभा से निर्वाचित हुए और महामहिम श्री राज्यपाल महोदय ने आपको प्रोटीम स्पीकर नियुक्त किया और पुनः मा० श्री नारायण दत्त तिवारी के मंत्रिमण्डल में नियोजन मंत्री बनाये गये। चुनाव से पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने आपको **हिमांचल प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त कर दिया था,** लेकिन विधानसभा क्षेत्र टाण्डा के जनता के अनुरोध एवं भावनाओं को देखते हुए राज्यपाल के पद को ठुकरा कर प्रदेश में ही सेवा करने का संकल्प लिया।

विधान सभा की समितियों में योगदान

विधानसभा की लोकलेखा समिति, सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम समिति में सदस्य रहे। वर्ष 1986 में आप सार्वजनिक उपक्रम एवं संयुक्त निगम समिति के अध्यक्ष रहे।

स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन

अपने देश की आजादी के लिये आपने वर्ष 1941 में रामवली नेशनल हाईस्कूल गोसाईगंज, फैजाबाद के प्रधानाचार्य के पद को त्याग कर सत्याग्रह के आन्दोलन में भाग लिया। आपने श्री महादेव प्रसाद वर्मा को प्रधानाचार्य का पदभार सम्भालने के निर्देश दिये।

सत्याग्रह आन्दोलन में आपको 03 माह 21 दिन का कारावास और रू0 100.00 का जुर्माना हुआ था। 1942 में भारत छोड़ों आन्दोलन में तथा 1945 के आन्दोलन में भाग लेने के कारण पुनः 1 वर्ष 03 माह 15 दिन जिला जेल फैजाबाद तथा सेन्ट्रल जेल वाराणसी में बन्द रहे। वाराणसी जेल में बन्दी रहते समय ही आपकी पत्नी का देहान्त हो गया।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान

शिक्षा के क्षेत्र में श्री जयराम वर्मा का योगदान बहुत ही विशाल है। ये बापू स्मारक इण्टर कालेज नाऊ– सांडा, केदारनगर, अम्बेडकरनगर के 30 वर्षों तक प्रबन्धक रहे। इसी प्रकार सर्वोदय हाई स्कूल कोटवा महमूदपुर, जिला अम्बेडकरनगर में 24 वर्षों तक, जय राम वर्मा बालिका जूनियर हाईस्कूल नाऊ, सांडा, केदारनगर, अम्बेडकर नगर के 3 वर्षों तक प्रबन्धक रहे। इसके अलावा कामता प्रसाद सुन्दर लाल साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या (फैजाबाद) के 15 वर्षों तक अध्यक्ष रहे।

सामाजिक क्षेत्र में योगदान

श्री जयराम वर्मा जी लगभग 15 वर्षों तक उत्तर प्रदेश पिछड़ा वर्ग संघ के अध्यक्ष रहे। संसदीय पिछड़ा वर्ग फोरम के 5 वर्षों तक संयोजक रहे। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के 1938 से लेकर 1967 तक लगातार वरिष्ठ सदस्य रहे। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी का वरिष्ठ उपाध्यक्ष नियुक्त किया था, जो 4 वर्ष तक पद पर रहे। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी की कार्यकारणी के सदस्य एक लम्बे समय तक निर्वाचित होते रहे। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की कार्य समिति के 4 वर्षों तक आमंत्रित स्थाई सदस्य रहे। जिला कांग्रेस कमेटी फैजाबाद के 2 वर्ष तक अध्यक्ष रहे। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कल्याण परिषद उ.प्र. तथा उसकी उपसमिति के 5 वर्षों तक सदस्य रहे।

आचार्य नरेन्द्र प्राद्यौगिकी विश्वविद्यालय फैजाबाद की प्रबन्ध समिति के सदस्य 4 वर्ष तक रहे। संसदीय राजभाषा समिति के 4 वर्ष तक सदस्य रहे। अखिल भारतीय पिछड़ा वर्ग संघ के 15 वर्षों तक उपाध्यक्ष रहे।

श्री जय राम वर्मा जी अखिल भारतीय क्रान्ति दल उ.प्र. के अध्यक्ष तथा अखिल भारतीय क्रान्ति दल कार्यकारिणी के सदस्य लम्बे अरसे तक रहे।

विधानसभा उ.प्र. में दो बार नेता विरोधी दल भी रहे।

उ.प्र. कृषक समाज के संस्थापक सदस्यों में आप रहे अखिल भारतीय कृषक समाज के अध्यक्ष (तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम झाखड़) ने आपको उ.प्र. एवं मध्य प्रदेश कृषक समाज का प्रभारी नियुक्त किया था जिस पर अंतिम सांस तक प्रभारी रहे। आप अखिल भारतीय कृषक समाज की गवर्निंग बाडी के सदस्य लगभग 8 वर्षों तक रहे।

आल इण्डिया श्री गांधी आश्रम के गवर्निंग बाडी के स्थाई सदस्य अंत समय तक रहे। उनके ही अथक प्रयास से 1983 में आल इण्डिया स्तर पर श्री गांधी आश्रम का लाइसेन्स रद्द होने के बचा था। उल्लेखनीय है श्री गांधी आश्रम के प्रभारी श्री करण भाई, श्री जय राम वर्मा, एम०पी० को लेकर प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से वार्ता कर गांधी आश्रम के प्रति उनकी नाराजगी को दूर कराया था और उसी के बाद श्री गांधी आश्रम का लाइसेन्स रद्द होने से बचा था।

वर्ष 1983 में श्री अब्दुलगनी खॉ चौधरी तत्कालीन रेल मंत्री ने फैजाबाद अहमदाबाद– सबरमती एक्सप्रेस को बन्द कर गोरखपुर से अहमदाबाद के बीच चलाने का निर्णय ले लिया था। जिसके कारण फैजाबाद की जनता में बहुत आक्रोश था और जनता फैजाबाद में धरना प्रदर्शन कर रही थी। श्री जय राम वर्मा जी उस समय फैजाबाद के संसद सदस्य थे और उन्होंने श्रीमती इन्दिरा गांधी से वार्ता करके पुनः संचालन चालू करने हेतु आदेश कराया था। इसी प्रकार फैजाबाद से इलाहाबाद के बीच कोई एक्सप्रेस गाड़ी नही थी। आपके अथक प्रयास से ही सरयू एक्सप्रेस गाड़ी चलायी गयी।

आपने भगवान राम की नगरी अयोध्या में क्षेत्रीय पर्यटन कार्यालय खुलवाया।

विदेश भ्रमण

श्री जयराम वर्मा जी वर्ष 1968 में सरकार के आमंत्रण पर कृषि एवं सहकारिता सम्बन्धी अध्ययन हेतु संयुक्त राष्ट्र अमरीका गये थे। अमरीका जाने के पहले उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के आमंत्रण पर उनसे लम्बी वार्ता भी की थी। संसद सदस्य होने के नाते राज्य भाषा समिति की ओर से सरकारी कार्यों में हिन्दी भाषा के प्रयोग सम्बन्धी अध्ययन हेतु रूस, जर्मनी, फांस, हालैण्ड, आस्ट्रेलिया, मिश्र, कनाडा एवं ग्रेट बिट्रैन की 1982 में यात्रा की थी।

चौधरी चरण सिंह और जयराम वर्मा जी की घनिष्ठा, वर्ष 1940 से ही थी। श्री वर्मा जी लगभग 15 वर्षों तक उ0प्र0 पिछड़ा वर्ग के अध्यक्ष रहे तथा संसदीय पिछड़ा वर्ग फोरम के 5 वर्षों तक संयोजक रहे।

वर्ष 1966 तक श्री जयराम वर्मा की पकड़ उ.प्र. कॉग्रेस कमेटी और उ.प्र. सरकार दोनों में बहुत अधिक थी। वे जिसे चाहते थे उसी को जनपद–फैजाबाद से सॉसद या विधायक का टिकट मिलता था। 1952 के लोकसभा आम चुनाव में देश की दो महान हस्तियाँ एवं विद्वान आचार्य जे0बी0 कृपलानी और आचार्य नरेन्द्र देव को क्रमशः अकबरपुर लोकसभा सीट और फैजाबाद लोकसभा सीट से धरासाई कराया था। यह श्री वर्मा जी के रातो–दिन अन्धाधुन्ध प्रचार का ही परिणाम था। देश के दो महान हस्तियों के विरूद्ध जिले से दो ऐसे व्यक्तियों को चुनाव में उतारा था जिन्हें जिले के बाहर कोई जानता तक नहीं था और उन्हें जिताया भी। उल्लेखनीय है कि अकबरपुर सीट से फैजाबाद जिले के तत्कालीन अध्यक्ष जिला परिषद श्री लल्लन सिंह तथा फैजाबाद सीट से श्री मदन गोपाल वैद्य को जिताया था। इस चुनाव में श्री वर्मा जी की प्रतिष्ठा दॉव पर लगी थी और दिनों–रात अन्धाधुन्ध प्रचार के बाद वे बीमार भी पड़ गये थे।

इसी प्रकार अकबरपुर सीट से डा० जेतली की मृत्यु के उपरान्त खाली हुई सीट के उप चुनाव में अकबरपुर में ही जन्में एवं पले देश के महान नेता डा०राम मनोहर लोहिया को धरासाई कर गाँधी आश्रम के श्री करण भाई को विजय दिलायी थी। इसके बाद श्री वर्मा जी की ख्याति पूरे प्रदेश में फैल गयी और लोग कहने लगे कि फैजाबाद जिले में श्री वर्मा जी यदि किसी गधे को खड़ा कर दें तो वह भी विपक्षी दल के बड़े से बड़े नेता को धूल चटा देगा।

एक बार जिला परिषद फैजाबाद के अध्यक्षी के चुनाव में वरिष्ठ मंत्री श्री चन्द्रभानु गुप्त ने अपने किसी हितैषी को कॉग्रेस पार्टी से टिकट श्री जयराम वर्मा की इच्छाओं के विरूद्ध दिला दिया था, तो श्री वर्मा ने श्री हीरा सिंह को निर्दली उतार कर श्री गुप्त के प्रत्याशी को धरासाई करा दिया था। उस समय भी श्री वर्मा की प्रतिष्ठा दाँव पर लगी थी, क्योंकि उन्होंने कॉग्रेस के विरोध में ही प्रत्याशी खड़ा कर दिया था।

श्री जयराम वर्मा की कॉग्रस पार्टी में बढ़ती हनक से खुश होकर श्री चन्द्रभान गुप्त के विरोध के बावजूद तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. सम्पूर्णानन्द ने उन्हें सन् 1959 में उप मंत्री,

स्वायत्त शासन नियुक्त किया था। उस समय सरकार में संसदीय सचिव, उपमंत्री और मंत्री के ही पद होते थे।

लखनऊ के चारबाग स्टेशन पर छोटी लाइन के सामने बने हनुमान मन्दिर को मोटर साईकिल और साईकिल स्टैण्ड के यूनियन वालों ने उच्च स्तर पर जोर लगाकर हनुमान मन्दिर के ध्वस्तीकरण के आदेश करवा लिये थे। उस समय मन्दिर के पुजारी आदि ने श्री आर0के0 पाण्डेय के नेतृत्व में श्री जयराम वर्मा से मिलकर मन्दिर बचाने की जोरदार माँग की थी। श्री वर्मा जी ने तत्कालीन रेल मंत्री, पं० कमला पति त्रिपाठी से हस्ताक्षेप कर हनुमान मन्दिर को बचाया था जिसके बाद श्री वर्मा जी का मन्दिर में न केवल भव्य स्वागत हुआ बल्कि उन्हें मन्दिर का संरक्षक भी बनाया गया। यह भी उल्लेखनीय कि श्री जयराम वर्मा 1962 से 31 मार्च 1967 तक उपमंत्री, वित्त एवं न्याय थे और उस समय पं० कमलापति त्रिपाठी वित्त मंत्री और सैय्यद अली जहीर न्याय मंत्री थे। श्री वर्मा उक्त दोनों मंत्रियों से सम्बद्ध थे।

चौधरी चरण सिंह से मतभेद

चौधरी चरण सिंह से वर्मा जी का मतभेद वर्ष 1983 से बढ़ता ही गया। श्री वर्मा जी को दो बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बनने का चांस मिला लेकिन दोनों बार चौधरी साहब के अड़ंगे से नहीं बन पाये। वर्ष 1968 में जब चौधरी साहब को सरकार में सम्मिलित विभिन्न पार्टी के नेताओं से टकराव बढ़ने लगा और उन्हें त्याग–पत्र देना पड़ा तो संबिद सरकार में सम्मिलित सभी पार्टी के नेताओं का सुझाव था कि संबिद सरकार न टूटे सिर्फ मुख्यमंत्री बदल दिये जाय। उस समय भारतीय कान्तिदल, जनसंघ, कम्युनिस्ट पार्टी सहित सभी पार्टियों श्री जयराम वर्मा (जो सबसे वरिष्ठ मंत्री थे और चौधरी चरण सिंह के दाहिने हाथ थे) के नेतृत्व में सरकार बनाने को तैयार हो गये थे और चौधरी साहब भी सहमत हो गये थे और दूसरे दिन की बैठक में निर्णय करने का विचार हुआ। लेकिन बाद में विश्वस्त सूत्रों से पता चला कि चौधरी चरण सिंह की धर्मपत्नी ने चौधरी साहब को सलाह दी कि यदि श्री वर्मा जी एक बार मुख्यमंत्री बन गये तो वे अगले 4 वर्षों तक मुख्यमंत्री बने रहेगें, तो तुम्हारा क्या होगा? अतएव दूसरे दिन संविद दलों की मीटिंग में चौधरी साहब ने श्री जयराम वर्मा की जगह श्री हरिश्चन्द्र का नाम प्रस्तावित किया जो कभी न तो मंत्री थे और न ही लोग उन्हें जानते ही थे। अतः सभी सहयोगी दलों ने चौधरी

चरण सिंह के प्रस्ताव को ठुकरा दिया और प्रथम संविद 6–7 पार्टियों की सरकार 25–2–1968 को टूट गयी और सरकार गिर गई।

दूसरी बार मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री इन्दिरागांधी के विशेष सलाहकार पंडित द्वारिका प्रसाद मिश्र, पंडित कमलापति त्रिपाठी एवं जयराम वर्मा के अथक प्रयास से पुनः चौधरी चरण सिंह के नेतृत्व में भारतीय क्रान्ति दल और कांग्रेस की मिली जुली सरकार बनी। उस समय कांग्रेस के 137 विधायक और बी०के०डी० के सिर्फ 98 विधायक थे। उस समय भी चौधरी चरण सिंह प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी के उ०प्र० के दौड़े पर कभी आगवानी करने या छोड़ने नही जाते थे और इस हेतु उन्होंने अपने वरिष्ठ सहयोगी मंत्री श्री जयराम वर्मा को ही यह दायित्व दे रखा था। यहाँ तक कि कांग्रेस विधान मण्डल दल के नेता श्री कमलापति त्रिपाठी से वे गम्भीर मसलों एवं नीतियों पर बात तक नहीं करते थे। दोनों पार्टियों के बीच तालमेल श्री वर्मा जी ही करते थे। कुछ समय पश्चात श्री चरण सिंह ने सभी 14 कांग्रेसी मंत्रियों जिसमें श्री नारायणदत्त तिवारी, प्रोफेसर वासुदेव सिंह आदि थे, को मंत्रिमण्डल से निकालना चाहा तो श्री वर्मा जी ने चौधरी साहब से विरोध जताया कि इस कदम से सरकार पुनः गिर जायेगी और कांग्रेस के समर्थन वापसी पर विधान सभा भंग करने की आपकी सिफारिश भी महामहिम श्री राज्यपाल नही मानेगें, क्योंकि हम अल्पमत में हो जायेगें। परन्तु चौधरी साहब की जिद थी कि श्री राज्यपाल को मेरी सिफारिश मानना ही होगा। चौधरी चरण सिंह ने कांग्रेस के सभी 14 मंत्रियों को बरखास्त कर दिया उस समय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी बाढ़ के दौड़े में इलाहाबाद आई थी। कांग्रेसी मंत्रियों की बरखास्तगी का समाचार सुनते ही उन्होंने पंडित कमलापति त्रिपाठी को निर्देश दिया कि फौरन लखनऊ जाकर श्री राज्यपाल को समर्थन वापसी का पत्र दो। उस दिन भी चौधरी साहब ने श्री जयराम वर्मा को निर्देश दिया था कि प्रधानमंत्री की अगुवाई में इस बार पंडित श्री पति मिश्रा जायेगें और आप महत्वपूर्ण बैठक में भाग लेगें। इस प्रकार सभी 14 कांग्रेस मंत्रियों की बरखास्तगी के बाद सरकार पुनः गिर गयी। और महामहिम श्री राज्यपाल ने मुख्यमंत्री की विधान सभा भंग करने की सिफारिश ठुकरा दिया, कि अब आप अल्पमत में है।

इसके बाद सरकार के पुर्नः गठन की हलचल बहुत तेज हो गयी। श्री चन्द्रभानु गुप्त पूर्व मुख्यमंत्री, श्री त्रिभुवन नारायण सिंह को मुख्यमंत्री बनाने के प्रयास में जुट गये।

इसी बीच कांग्रेस के पूर्वमंत्री श्री बल्देव सिंह आर्या और श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा श्री जयराम वर्मा के पैतृक ग्राम बड़ागांव ब्राहिमपुर गये और श्री वर्मा जी को आश्वासन दिया कि आप अपने समर्थकों सहित वी.के.डी. को छोड़ कांग्रेस में आ जाय और सरकार बनाये और यदि सरकार नही बन पाती तो आप श्री कमलापति त्रिपाठी जी की जगह नेता कांग्रेस विधान मण्डल सहित नेता विरोधी दल बने। परन्तु श्री वर्मा जी ने श्री त्रिभुवन नारायण सिंह के नेतृत्व में बनने वाली सरकार में चौधरी चरण सिंह के भारी दबाव के बावजूद शामिल होने से इन्कार कर दिया और कहा कि मैं मंत्रि परिषद में शामिल नही रहूँगा और बी.के.डी. में ही रहकर सरकार की गलत नीतियों का विरोध करूँगा। चौधरी साहब के बहुत दबाव के कारण पार्टी नहीं छोड़ी। श्री त्रिभुवन नारायण सिंह को दिनांक 18–10–1970 को मुख्यमंत्री के पद की शपथ दिलाई गई और 6 माह के अन्दर ही उपचुनाव लड़ना पड़ा क्योंकि ये किसी भी सदन के सदस्य नहीं थे उस चुनाव में श्री सिंह मुख्यमंत्री रहते हुये भी चुनाव हार गये और सरकार पुनः गिर गयी। दिनांक 4.4.1991 को श्रीकमलापति त्रिपाठी ने मुख्य मंत्री की शपथ ली।

इस बीच चौधरी चरण सिंह ने श्री वर्मा जी से कहा कि अब आप विधान सभा में बी.के.डी. पार्टी के नेता का भार संभाले अब मुझसे नही देखा जाता है कि 98 एम0एल0ए0 में से टूटते टूटते सिर्फ 36 ही रह गये है। श्री वर्मा जी के विधान सभा में बी०के०डी० का नेता बनने के बाद चौधरी साहब की हठवाधिता के कारण बहुत से एम०एल०ए०, जो पार्टी छोड़कर चले गये थे, वे एक–एक करके पुनः बी०के०डी० में आने लगे। इस प्रकार 43 विधायक जब पुनः बी०के०डी० में हो गये तो श्री वर्मा जी को नेता प्रतिपक्ष (विरोधीदल) का दर्जा मिल गया और मंत्री स्तर की सुविधायें मिलनी शुरू हो गयी। कुछ दिनों बाद 2 एम०एल०ए० पुनः श्री वर्मा जी के अनुरोध पर पार्टी में सम्मिलित होने के इच्छुक हुये तो वर्मा जी ने चौधरी साहब को अवगत कराया। चौधरी साहब ने कहा कि कल पार्टी की कार्यकारिणी मीटिंग बुला ली जाए तो श्री वर्मा जी ने सुझाया कि मीटिंग बुलाने की कोई आवश्यकता नहीं है और इसमें विधान मण्डल में नेता की हैसियत से मैं विधान सभा अध्यक्ष को सूचना भिजवा दूंगा। इस पर चौधरी साहब ने कहा कि मीटिंग बुला लेने में कोई हर्ज नही है। दूसरे दिन मीटिंग बुलायी गई और प्रस्ताव बनकर तैयार हो गया और जब प्रस्ताव टाइप होकर आया तो चौधरानी ने कहा कि चौधरी साहब जेब में रखा कागज भी लगा देवें और चौधरी साहब ने जेब से एक कागज निकालकर नत्थी कर दिया। दूसरे दिन अखबारो

में समाचार छपा कि विधान सभा में नेता विरोधी दल श्री जयराम वर्मा जी जगह चौधरीचरण सिंह होंगे, श्री जयराम वर्मा जी ने बताया कि चौधरी साहब यदि अपनी इच्छा बता देते तो मैं स्वयं ही स्पीकर को लिखकर दे देता कि मेरी जगह नेता प्रतिपक्ष चौधरी साहब रहेगें। चौधरी साहब के इस व्यवहार से वर्मा जी दुखित भी हुए।

इन बातों से श्री जयराम वर्मा के पुत्र श्री कमलापति वर्मा, जो वाराणसी में काशी विद्यापीठ (विश्वविद्यालय) में समाजशास्त्र के लेक्चरर थे, अपने पिता जी से इतना अधिक नाराज हो गये थे कि उनसे बात करना भी छोड़ दिया था। उनका कहना था जब चौधरी चरण सिंह आपको आगे बढ़ते देखना नही चाहते तो क्यों उनके पीछे लगे हैं। पार्टी क्यो नहीं छोड़ देते? 5–6 महीने दोनों के बीच कोई भी बात तक नहीं होती थी, जो कुछ कहना होता था वे मुझे (रामकेवल वर्मा) कहते थे कि कमलापति को ऐसा बता देवें और उनके पुत्र को जो कहना होता था मुझे कहते कि पिता जी को बता देवें। मैं वर्ष 1971 से 1977 तक वाराणसी में ही जिला संख्या अधिकारी कार्यालय में सीनियर इन्स्पेक्टर था और दोनों के बीच मध्यस्ता करता रहा। आखिरकार इमरजेन्सी लागू होने के एक माह पहले पंडित कमलापति त्रिपाठी के विशेष आमंत्रण पर श्री वर्मा जी ने लखनऊ के गंगा प्रसाद मेमोरियल हाल में अपने हजारों समर्थकों की बैठक में सर्वसम्मति से कांग्रेस में विलय करने का निर्णय लिया जिसमें पूरा हाल खचाखच भरा था और बाहर भी सैकड़ो समर्थक खड़े थे। उस दिन रात्रि में कैसरबाग पार्क में पंडित कमलापति त्रिपाठी, मुख्यमंत्री हेमवती नन्दन बहुगुणा, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष लक्ष्मीशंकर यादव आदि की उपस्थिति में श्री जयराम वर्मा ने अपने हजारों समर्थकों के साथ कांग्रेस पार्टी में सम्मिलित हुए और रात्रि का भोज भी कांग्रेस पार्टी द्वारा दिया गया। **श्री जय राम वर्मा जी कालीदास मार्ग के बंगला नं0–1 में लगभग 18 वर्ष बितायें उस समय बंगले का गेट दोनों तरफ से खुलता था।**

पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह ने श्री जयराम वर्मा जी सहायता मांगी

जनता पार्टी जो 1977 के लोकसभा आम चुनावों में कांग्रेस पार्टी को हराकर श्री मोरार जी देसाई के नेतृत्व में सत्ता में आयी थी, वह 1979 के अन्त में ताश के पत्तों की तरह बिखरती गयी। श्री राजनारायण सिंह सहित उनके तमाम मंत्री जनता पार्टी सरकार से त्याग–पत्र देकर एक एक कर अलग होते गये और अन्त में उपप्रधानमंत्री चौ० चरण सिंह ने

भी जब त्याग–पत्र दे दिया तो मजबूरन प्रधानमंत्री श्री मोरार जी देसाई को अपने मंत्रिमण्डल का त्याग पत्र देना पड़ा, इस प्रकार चौधरी चरण सिंह दिनांक 28–7–1979 को कांग्रेस के समर्थन से प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। उन्हें 15 दिन के अन्दर संसद भवन में अपना बहुमत सिद्ध करने के निर्देश तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम श्री नीलम संजीव रेड्डी ने दिये थे। ज्यो–ज्यों समय नजदीक आता गया चौ० साहब की चिन्तायें बढ़ती गयी। उस समय फैजाबाद के श्री महादेव प्रसाद वर्मा एवं कानपुर के श्री नरेन्द्र सिंह ने चौधरी साहब को सुझाव दिया कि ऐसे समय में आप अपने पुराने घनिष्ठ साथी श्री जयराम वर्मा का सहयोग लें, क्योंकि उन्हें श्रीमती इन्दिरा गांधी बहुत मानती हैं और उन्होंने उनको कांग्रेस कार्यसमिति का स्थाई सदस्य भी बना रखा है। वह दोनो लोग प्रधानमंत्री चौ0 चरण सिंह का पत्र लेकर चण्डीगढ़ गये जहां वह अपने पुत्र श्री कमलापति वर्मा की किड्नी का इलाज करवाने गये थे। बाद में श्री वर्मा जी उन लोगों के साथ दिल्ली आये। रात्रि में ही श्री वर्मा जी ने श्रीमती इन्दिरा गांधी से विस्तार से समर्थन करने के बारे में बात की। श्री वर्मा जी ने चौ0 चरण सिंह को श्रीमती इन्दिरा गांधी का उक्त समर्थन देने के सम्बन्ध में दो शर्तों से अवगत कराया। जिसमें पहली शर्त थी जो शाह कमीशन उनके खिलाफ बैठाया गया था, उसे भले न उठावे, परन्तु उसको परसू (Porsue) न करें और दूसरी शर्त थी एक वर्ष बाद संसद भंग कर आम चुनाव की संस्तुति कर देवें। श्री वर्मा ने उक्त दोनों शर्तों से प्रधानमंत्री चौ0 चरण सिंह को अवगत कराया, जिस पर उन्होंने अपने मंत्रिमण्डलीय सहयोगियों से विचार विमर्श के बाद निर्णय लेने की बात कही। दूसरे ही दिन उन्हें संसद में विश्वास–मत भी हासिल करना था। विश्वस्त सूत्रों से पता चला कि उनके कुछ सहयोगियों ने चौ० साहब को बरगला दिया कि आप श्रीमती इन्दिरा गांधी से भेंट ही न करें क्योंकि उनकी यह मजबूरी है कि वह संसद में आपका समर्थन करेगी। क्योंकि श्री जगजीवन राम उपप्रधानमंत्री भी प्रधानमंत्री बनने का दावा ठोंक रहे हैं। दूसरे दिन सारे अखबारों में समाचार बड़े–बड़े अक्षरों में छपा कि प्रधानमंत्री चौ0 चरण सिंह अगले 24 घंटे में श्रीमती इन्दिरा गांधी से भेंट नही करेंगे। अतः ऐसी दशा में श्रीमती इन्दिरा गांधी ने राष्ट्रपति महोदय को कांग्रेस समर्थन वापसी का पत्र भिजवा दिया और इस प्रकार चौ0 चरण सिंह को संसद में विश्वास मत हासिल करने का मुकाबला करने से पहले ही मजबूरन अपने मंत्रि–मण्डल का त्याग पत्र राष्ट्रपति महोदय को सौपना पड़ा। आजादी के बाद चौ0 चरण सिंह एक मात्र ऐसे प्रधानमंत्री हुए हैं जिन्हे संसद भवन के लोकसभा में प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठने का सुअवसर प्राप्त ही नही हुआ। चूँकि केन्द्र में राष्ट्रपति शासन

लगाने का प्रावधान नही है और चुनाव आयोग को मतदाता सूची का प्रकाशन भी कराना होता है, अतएव चौ0 चरण सिंह दिनांक 14/01/1980 तक कार्यवाहक प्रधानमंत्री बने रहे।

श्री जयराम वर्मा जी उत्तर प्रदेश में ईमानदारी के एक अद्भुत मिसाल थे। 1985 में लोकसभा के आम चुनाव में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने उत्तर प्रदेश के बाहुल्य पिछड़े वर्ग के जिलों में कांग्रेस प्रत्याशियों के प्रचार हेतु एक कार और पेट्रोल आदि के लिए धनराशि की व्यवस्था कराई थी। चुनाव समाप्त होने के बाद मुझे (राम केवल वर्मा) को साथ लेकर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी आफिस गये और कोषाध्यक्ष श्री रस्तोगी के कक्ष में बैठ गये। जब हम तीन लोग ही उस कक्ष में रह गये तो उन्होने अपनी अटैची खोलकर रू० 48000/– जब उन्हें वापिस किया तो रस्तोगी जी कुछ देर तक श्री वर्मा जी को देखते रहे और फिर बोले कि यह आप क्या कर रहे हैं। मुझसे तो लोग बार–बार पैसे मांगते है और एक आप हैं कि इतना दौड़ा करने के उपरान्त भी इतनी लम्बी धनराशि वापिस कर रहे हैं तो श्री वर्मा जी ने जबाब दिया कि मेरे और अन्य लोगों में कुछ तो अन्तर होना ही चाहिए।

वर्ष 1985 में जब श्री वर्मा जी नियोजन मंत्री बने तो उन्हें तुरन्त ही मीराबाई गेस्ट हाउस में दो सूट आवंटित कर दिये गये। वे लहसुन और प्याज का इस्तेमाल नही करते थे इसलिए उनके और राम अजोर नौकर के लिए दोनो वक्त का खाना ड्राइवर मेरे घर से ले जाता था। गेस्ट हाउस में मंत्री जी से मिलने आने वाले संसद सदस्यों, विधायकों, अधिकारियों एवं शुभचिंतकों के लिए चाय पानी की व्यवस्था की जाती थी और दो माह में रू0 4500 का बिल आया था। श्री गनेशी राम चौरसिया निजी सचिव ने मंत्री जी से निवेदन किया कि वे चेक से भुगतान कर देंगे। मंत्री जी ने साफ मना कर दिया और अपने पास से रू0 4500 मुझे दिया कि जाकर भुगतान कर देना । निजी सचिव बहुत समझाते रहे कि माननीय मंत्रियों को जब तक बंगला का आवंटन नहीं होता तब तक गेस्ट हाउस में मंत्री जी के रहने, खाने पीने का सारा खर्चा सरकार ही वहन करती है। उन्होने हंस कर कहा कि मैं जानता हूँ लेकिन मेरे और अन्य मंत्रियों में अन्तर है।

इसी प्रकार जब बाबू जी संसद सदस्य थे तो लोग उनसे मिलने आते थे और अपने कार्य हेतु सिफारिस पत्र लिखवाते थे, उनकी चाय वे कभी नही पीते थे। उसका भुगतान मैं करता था अथवा मेरे मित्र न्यायमूर्ति श्री पी० सी0 वर्मा करते थे और दोनो के न रहने पर वे

स्वयं अपने नौकर को पैसा देकर भुगतान करते थे। ट्रेन से दिल्ली आदि जाने पर वे पाकेट खर्च में सिर्फ कुली और टैक्सी आदि का किराया ही भरते थे जबकि अन्य मंत्री गण रू0 10000 से 20000 के बीच चार्ज करते थे। यह भी व्यवस्था है कि इसके लिए रसीद आदि की की जरूरत नही होती और न ही इसका ऑडीट होता है।

मुझे याद है कि जब वे नियोजन मंत्री थे तो दो बार ऐसे मौके आये जब प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी से मिलने उन्हें दिल्ली जाना था। जाने के दिन प्रातः मुझसे बताने लगे कि प्रोग्राम रद्द कर दे रहा हूँ। जब मैने कारण पूछा तो बताया कि पासबुक में पैसे कहाँ हैं। मैने निवेदन किया कि आप दौड़े पर जायें पैसे की व्यवस्था मैं कर दूँगा फिर आप से ले लूँगा तब वे दौड़े पर गये। यह भी उल्लेखनीय है कि बीसों वर्ष मंत्री और संसद सदस्य रहने के बाउजूद उनके पास न तो गाड़ी थी और न ही लखनऊ में अपना कोई मकान था। वे लखनऊ आने पर रॉयल होटल के उत्तर प्रदेश कृषक समाज कार्यालय में जिसके वे प्रभारी थे, में ही रूकते थे। उसी स्थान पर अब वर्तमान में बापू भवन बना है। जिस समय माननीय मंत्री जी ने अपना शरीर छोड़ा उनकी पासबुक में मात्र 5073.09 रूपये थे, जो किन्ही कारणवश अभी तक उनके पौत्र राकेश वर्मा को नहीं मिल पाया है।

तामझाम के हिमायती नही

श्री वर्मा जी जब कार से दौड़े पर जाते थे तो उनकी कार के पीछे पुलिस की गाड़ी अवश्य चले, इसके हिमायती नही थे।

यहाँ तक कि रात्रि दौड़े में भी कार के पीछे कोई सरकारी गाड़ी नही रहती थी।

मुझे याद है कि जब वे नियोजन मंत्री थे तो दो बार ऐसे अवसर आये थे जब उन्हें कैबिनेट की मीटिंग में जाना थ और उनके सैडो की पत्नी की अचानक तबियत बहुत ज्यादा खराब हो गई और उन्हें डाक्टर को दिखाने हेतु जाना था। निजी सचिव ने उन्हें छुट्टी देने से साफ मना कर दिया फिर मेरे पास वह बहुत गिड़गिड़ाया तो मुझे दया आ गई और मैने उसे जाने की स्वीकृति दे दी। मैं सदैव की भाँति बाबू जी को कैबिनेट कक्ष तक ले गया और रास्ते में बाबू जी को सब कुछ बता दिया करता था। बाबू जी मुस्करा कर रह जाते थे और कभी भी यह नही कहते थे कि उसे छुट्टी क्यों दिया यह बाबू जी की महानता थी। यह उल्लेखनीय है कि जब बाबू जी संसद सदस्य थे तब भी मंत्रियों के यहाँ जाते

समय साथ में मैं ही रहता था। विधायक एवं मंत्रिगण उनका बहुत आदर करते थे। श्री जयराम जी की ईमानदारी, सादगी, मृदुल व्यवहार और सबसे अधिक (लगभग 20 वर्षों तक मंत्री और संसद सदस्य) होने के कारण उनकी सीनियारिटी को देखते हुए सभी विधायक एवं मंत्रिगण उनका बहुत आदर एवं सम्मान करते थे। जब बाबू जी कैबिनेट की मीटिंग में जाते थे तो मैने देखा कि सभी मंत्रिगण मंत्रिपरिषद कक्ष के दरवाजे पर ही पत्रावली ले लेते थे। मैं भी जब पहली बार पत्रावली बाबू जी के हाथ में देना चाहा तो दरवाजे पर खड़े माननीय मुख्यमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने मुझे निर्देश दिये कि पत्रावली कक्ष के अन्दर जहाँ वर्मा जी बैठते हैं वहाँ रक्खा करो। तब से मैं हर बार कैबिनेट मीटिंग के अन्दर जाकर ही पत्रावली रखता था जबकि कक्ष के अन्दर अधिकारियों के जाने की मनाही थी। यह बाबू जी के सम्मान की बात थी।

श्री जयराम वर्मा जी जब बाहर दौड़े पर जाते थे तो उनके बंगले पर किसी पी० ए० आदि की ड्यूटी आज कल की तरह से नही लगती थी। वे कहा करते थे कि जो मुझे कोई बात करनी होगी तो मैं उसे कार्यालय में टेलफोन पर कर लूँगा। बंगले पर बेचारों को दिन भर बैठाये रखने से क्या फायदा। ऐसे उदार थे मंत्री जी। मैने यह भी देखा कि जब वे बंगले से ऑफिस के लिए निकलते थे तो अपने कमरे की लाइट और फैन स्वयं ही बन्द कर देते थे। चपरासियों के उपर नही छोड़ते थे।

एक बार बाबू जी की इकलौती पौत्री के ससुर अपने किसी रिस्तेदार की सिफारिश कराने सचिवालय आये और साथ में उस लड़के के छोटे भाई को ले आये थे। बात चीत के दौरान उन्होने अपने समधी श्री मैकूलाल जी से पूछा कि यह हस्ताक्षर क्या उसी बच्चे के हैं ? तो उन्होंने बताया कि नही हस्ताक्षर तो इस बच्चे से करवा दिया है जो मेरे साथ में आया है। मंत्री जी ने अपने समधी से कहा कि इस प्रार्थना पत्र पर उस बच्चे से सही हस्ताक्षर करवा कर डाक से मेरे पास प्रार्थना पत्र भिजवा देना मैं जोरदार सिफारिश भी कर दूँगा। इसी बीच कुछ संसद सदस्य आ गये और रिस्तेदार जी मेरे कक्ष में आ गये। मैने उनके लिए चाय पानी की व्यवस्था हेतु चपरासी को भेज रखा था लेकिन वे गुस्सा कर जाने लगे तो मैने बाबूजी को जाकर बताया । उनके निर्देशानुसार मै तुरन्त ही विधानसभा की पोर्टिको तक गया लेकिन वे गुस्सा कर मोटरसाइकिल से चले गये। बाबूजी ने मुझे बताया यदि दूध के गिलास में मक्खी गिर जाय और कोई मक्खी निकाल कर पुनः दूध पीने को देवे तो उसे कैसे

पिया जा सकता है? यह उनके सिद्धान्त की बात थी। जिससे वे समझौता नही करते थे।

श्री जयराम जी में एक विशेष गुण यह था कि यदि उनकी समझ में आ जाय कि किसी व्यक्ति के साथ अन्याय हो रहा है और उसकी कहीं सुनवाई नही हो रही है तो वह व्यक्ति चाहे जिस जिले का हो, चाहे जिस जाति का हो, उसके कार्य को पूरा कराकर ही दम लेते थे। मुझे वह घटना याद है कि जब श्री महेन्द्र सिंह गंगवार एडीशनल आई० जी० पुलिस को उनकी वरिष्ठता को नजरन्दाज करते हुए किसी सक्सेना आई० पी० एस० को आई0 जी0 पुलिस बनाया जा रहा था । श्री महेन्द्र सिंह श्री जयराम वर्मा के पैतृक ग्राम गये और उन्हे बताया कि उनसे वरिष्ठ आई० पी० एस० श्री टण्डन हैं जो दिल्ली छोड़ना नही चाहते और उन्हे नजरन्दाज कर उनसे कनिष्ठ श्री सक्सेना को आई जी पुलिस बनाया जा रहा है। तब श्री जयराम वर्मा जी, श्री गंगवार के साथ लखनऊ आये और मुझे टेलीफोन करवा कर बुलाया और बताया कि मुझे आज ही रात्रि दिल्ली जाना है। मेरे पूछने पर विस्तार से उन्होंने बताया। दिल्ली पहुंचने पर तत्कालीन गृह मंत्री ज्ञानी जैल सिंह ने वर्मा जी को बताया कि मैडम ने उक्त मसले को फाइनल कर दिया है उसे वही बदल सकती हैं। श्री जयराम वर्मा जी ज्ञानी जैल सिंह को लेकर प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से मिले और उन्हें समझाया कि 6 मांह उत्तर प्रदेश में आम चुनाव होने जा रहा है और यदि श्री महेन्द्र सिंह को आई० जी० न बनाकर उनके कनिष्ठ को आई० जी० बनाया गया तो सारी विरोधी पार्टियां कांग्रेस को एन्टी बैकवर्ड पार्टी कहकर दुशप्रचार करेंगी और कांग्रेस को चुनाव में भारी छति उठानी पड़ेगी। यह बात श्रीमती इन्दिरा गाँधी की भी समझ में आ गई और उन्होंने तत्काल श्री महेन्द्र सिंह गंगवार को आई0 जी० बनाने की हरी झंडी उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को दे दी।

यह भी एक विडम्बना थी कि कुछ दिन बाद दस्युसुन्दरी फूलन देवी ने बेहमई में 22 ठाकुरों को एक लाइन में खड़ा कर गोलियों से भून डाला तो यह समाचार फैलते ही उत्तर प्रदेश के समस्त ठाकुर विधायक और मंत्री गण मुख्य मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के ऊपर दबाव डाला कि आई० जी० पुलिस को फौरन हटाया जाय उन्होंने यह भी शिकायत की, कि आपका आई0 जी0 पुलिस हजरत महल पार्क में लखनऊ महोत्सव देख रहा है और बेहमई में 22 ठाकुरों को फूलन देवी ने गोली से उड़ा दिया । चूँकि श्री गंगवार की पदोन्नति प्रधानमंत्री के निर्देश पर हुई थी, अतः उन्हें पद से हटाते हुए डायरेक्टर

जनरल पुलिस के पद पर तैनाती दी गई। उस समय आई0 जी0 से ऊपर के पद स्वीकृत नही थे और यह पद उन्हीं के लिए स्वीकृत किया गया।

श्री महेन्द्र सिंह गंगवार कुछ दिन के बाद फिर से श्री वर्मा जी से मिले और बताया कि मुझे पदोन्नति तो कर दिया गया परन्तु मेरा वेतन आई0 जी0 से कम हो गया । पता चला कि स्पेशल पे रू0 350 / – कट गया था। श्री वर्मा जी ने पुनः प्रधानमंत्री से बात किये और बताया कि आपके मुख्यमंत्री कहते हैं कि मैने उनकी पदोन्नति कर दी और वे कहते हैं कि मेरा वेतन ही आई0 जी0 से कम हो गया तो ऐसे प्रमोशन से क्या फायदा। इस प्रकार फिर उनके स्केल को बढ़ाया गया। उन दिनों वर्मा जी के लखनऊ आने जाने और मिलाने की व्यस्था मैं ही करता था और लगभग हर 15 वें दिन श्री गंगवार जी बाबू जी के कार्यक्रम के बारे में मुझसे पूछताछ करते थे।

बरेली के श्री भानू प्रताप सिंह, श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के मुख्यमंत्रित्व काल में कृषि, आबकारी विभाग के मंत्री थे। वह भी बहुत ईमानदार और तेज मंत्री थे। उनके पुत्र की कुछ हरकतों को लेकर उनके खिलाफ उनके विरोधियों ने मीडिया के माध्यम से बहुत दुष्प्रचार कराया और विधान सभा में मामला उछाल कर उन्हें मंत्रि मण्डल से बरखास्त कराने की मांग की। श्री भानु प्रताप सिंह ने श्री जयराम वर्मा जी से इस सम्बन्ध में अपनी मदद मांगी। उस समय भी श्री जयराम वर्मा जी ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी से श्री भानु प्रताप सिंह की बहुत पैरबी की और उनकी ईमानदारी पार्टी के प्रति वफादारी आदि की प्रशंसा करते हुए यह बताया कि लड़के के आचरण को लेकर श्री भानु प्रताप सिंह को मंत्रिपरिषद से निकलवाना उचित नही है। इस प्रकार श्री भानु प्रताप सिंह को मंत्रिमण्डल में बरकरार रहे। श्री वर्मा जी ने श्री सिंह को यह भी समझाया था कि आप कुर्मी बिरादरी की मीटिंगों में जाया करें क्यों कि सभी लोग आपको ठाकुर समझते हैं। इसके बाद से अक्सर श्री भानू प्रताप सिंह बाबू जी से लखनऊ आने पर मुलाकात करते थे। और अपने बंगले पर चाय के लिए आमंत्रित करते थे। यह भी संयोग है कि जब श्री वर्मा जी 1985 में नियोजन मंत्री बने तो वही बंगला उन्हें आवंटित हुआ जिसमें श्री सिंह जी रहते थे।

डॉ. आर.वी.यस. यादव–सर्जन, जिन्होंने वर्मा जी के पुत्र स्व. कमला जी का गुर्दा प्रत्यारोपण किया था; उनके साथ–श्री राम अशीष वर्मा गुर्दा देने वाले।

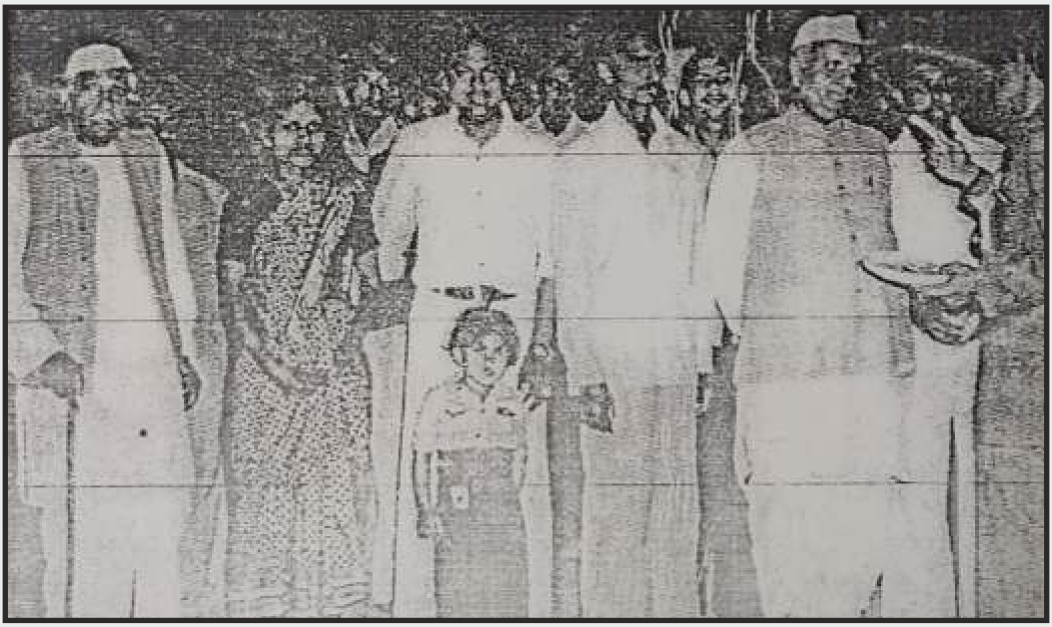

डॉ. आर.वी.यस. यादव–सर्जन, प्रो.–श्यामलाल यादव–पूर्व केंद्रीय उपसभापति राज्य सभा के साथ चंडीगढ़ में वर्मा जी एवं उनके ठीक सामने में श्री राम अशीष वर्मा, गुर्दादाता।

श्री जयराम वर्मा जी स्वाभिमानी व्यक्ति थे

श्री जयराम वर्मा जी को 24 अप्रैल 1985 को तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व० श्री राजीव गाँधी के निर्देश पर उत्तर प्रदेश सरकार में नियोजन मंत्री की शपथ दिलाई गई। शपथ ग्रहण के दिन सायंकाल मैने बाबू जी से पूछा कि आपने तो महामहिम श्री राज्यपाल से शपथ ग्रहण के बाद हाथ मिलाया था लेकिन मुख्यमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी जी से हाथ नही मिलाये, क्या भूल गये थे? इस पर उन्होंने बताया कि श्री राज्यपाल जी ने मुझे मंत्री बनने पर बधाई दी तो मैने उनसे हाथ मिलाया, लेकिन श्री तिवारी जी ने जब मुझे विश नही किया तो मैं क्यों हाथ मिलाता? इस प्रकार हम देखते हैं कि उनमें कितना स्वाभिमान था। जबकि आज कल के समय में बहुत से मंत्री हाथ मिलाना तो दूर रहा बहुत से मंत्री उनके पैरों पर माथा झुका कर लेट जाया करते हैं।

श्री जयराम वर्मा जी तुरन्त ठोस निर्णय लेते थे –

श्री जयराम वर्मा जी 1985 में जब उ0प्र0 सरकार में नियोजन मंत्री थे तो कुछ सूचनायें भारत सरकार को तुरन्त भेजनी थी, उस समय श्री कुश वर्मा आई०ए०एस० संयुक्त सचिव नियोजन के पद पर तैनात थे, उन्होंने लगभत 11 बजे फोन कर वांछित सूचना तुरन्त उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। लगभग 2 बजे लंच पर जाने से पहले उन्होंने पुनः दूरभाष पर सूचना जब भिजवाने के लिए जब फोन किया तो पता चला कि श्री कुश वर्मा लंच पर चले गये, शाम 4:30 बजे जब फिर टेलीफोन किया तो पता चला कि वह अपने घर चले गये उन्होंने तुरन्त मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी को वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए कहा कि मैं कार्यालय में बैठा हूँ और वे बिना सूचना उपलब्ध कराये अपने घर चले गये। अतः कल से मेरे विभाग में वह नही रहेंगे। उन्हें तुरन्त हटायें। दूसरे दिन श्री कुश वर्मा को नियोजन विभाग से स्थानान्तरित कर दिया गया। इस संदर्भ में एक घटना याद आती है जब मा0 पंडित गोविन्द वल्लभ पंत उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री थे। उस समय अपने वरिष्ठ सहयोगी मंत्री बहराइच के ठाकुर हुकुम सिंह ने एक दिन अपने विभागीय सचिव को दिन में 3 बार बुलवाया क्योंकि कई संसद सदस्य अपने कार्य कराने कि लिए उनके कक्ष में बैठे थे। विभागीय सचिव तीनों बार बुलाने के बाद भी मंत्री से मिलने नही आये। चौथी बार फोन करने पर पता चला कि सचिव लंच करने चले गये। उस समय मंत्री

नाराज होकर उठे और सीधे मुख्यमंत्री पंत के पास जाकर अपना इस्तीफा सौंप दिया। मा0 मुख्यमंत्री त्याग पत्र देखकर भौचक्के रह गये। जब कारण पूछा गया तो ठाकुर हुकुम सिंह ने जबाब दिया कि जब आपका सचिव मेरा कहना ही नही मानता है तो मंत्री बने रहने से क्या फायदा। तीन बार बुलाने के बाद भी नही आये और लंच पर चले गये। यह सुनकर मुख्यमंत्री श्री पंत जी उठे अपनी छड़ी उठाई और सचिव के कक्ष पहुँच गये। उस समय तक सचिव लंच से वापस नही आये थे। उन्होंने तुरन्त सचिव का कमरा सील करवा दिया। सचिव जब लंच से आया और अपना कमरा सील पाया तो मुख्यमंत्री के यहाॅ जाकर बहुत गिड़गिड़ाया लेकिन मुख्यमंत्री ने उसे जवाब दे दिया कि तुमने मेरे सहयोगी मंत्री का अपमान किया है अब यू0 पी0 में तुम्हारे लिए कोई स्थान नही। इसके पहले कि मैं तुम्हारे खिलाफ कोई एक्शन लूँ तुम दिल्ली जाकर अपनी पोस्टिंग कहीं और करा लो।

पढ़ाई—लिखाई का समय

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' आपके माता—पिता आपकी प्रतिभा तथा चाल—चलन से काफी प्रसन्न रहते थे। माँ—बाप को प्रसन्न रखना ही एक अप्रत्यक्ष वरदान सिद्ध होता है। कहा गया है— बे अदब, बे नसीब, ब अदब, ब नसीब, । गाँव में बड़ा घर था आपका परिवार। आर्थिक स्थिति खराब नहीं थी । उस समय आर्थिक स्थिति का आंकलन जिन बिन्दुओं द्वारा तथा जिस अनुपात में किया जाता था उसके अनुरूप आपकी आर्थिक स्थिति ठीक और गाँव में, समाज में अच्छी मानी जाती थी। क्योंकि उस समय गरीबी ज्यादा थी। कुछ भी सम्पन्न खाता पीता परिवार धनी मान लिया जाता था। जहाँ कोई घना वृक्ष नहीं होता वहाँ रेंड़ का पेड़ ही काफी मान लिया जाता है।

आपकी पढ़ाई में कहीं कोई व्यवधान नहीं आया। आपकी पढ़ाई—लिखाई मां—बाप पर भार नहीं बन पाई क्योंकि आप असाधारण प्रतिभा सम्पन्न सिद्ध हुए। हाई स्कूल बोर्ड परीक्षा में आपका सर्वप्रथम स्थान रहा। आपको वजीफा मिलता था जब तक आप पढ़ते रहे। आपके श्रम तथा प्रतिभा नें माँ—बाप के आर्थिक भार को हल्का कर दिया था। एम.ए. गणित में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए थे। नौकरी की चाह नहीं हुई। चाह हुई कुछ करने की कुछ बनने की।

उस समय पढ़ाई—लिखाई का चलन नहीं था। पढ़ाई—लिखाई क्या है जैसे लोग जानते ही नहीं थे। कुर्मी बिरादरी के यहाँ पढ़ाई—लिखाई नहीं, खेती में खटने की प्रथा

ज्यादा थी। ग्रामीण परिवेश सबको दबाये रखता था। उस समय से विशेष कर आज का ग्रामीण परिवेश कुछ सुधरा है फिर भी शहरी परिवेश के मुकाबले अभी भी शिक्षा–दीक्षा में पीछे ही है। उस समय के ग्रामीण परिवेश ने इस बालक के कंधे पर हाथ रख कर, दुलारकर, पुचकार कर, जैसे कहता रहा शाबाश बेटे। साबाश। बढ़ते रहो, चिंता न करो हम तुम्हारे साथ हैं। तुम्हें पिछड़े वर्गों का देवदूत बनना है। इन्हें संवारना है, उभारना है। इनके परिश्रम का फल इन्हें दिलाना है। बेटे यह सब तुम्हें करना है।

इस बालक के कानों ने ग्रामीण परिवेश की अव्यक्त पीड़ा को खूब सुना, गुना, धुना। एक ललक जागी। ऐसी ललक जागी कि सारा जीवन किसानों को ही समर्पित कर दिया।

आपकी रुचि–कृषि, सहकारिता, शिक्षा एवं ग्रामोद्योग में विशेष थी। इनके विकास के लिए अपने मुख से 'ग्रामीण परिवेश' के मंत्र को शुद्ध भाव से जीवन भर जपते रहे। गाँवों के विकास के लिए दिये गये मंत्र को सिद्ध करते रहे।

टाण्डा क्षेत्र में कितने महानपुरुष हुए कोई जानकारी नहीं है। जानकारी के लिए कोई आधार भी नहीं है। कहीं कुछ भी लिखा–पढ़ा नही गया। इस अभाव को पूरा किया जाना चाहिये था। खैर जो हुए हों उन्हें श्रद्धांजलि है। अज्ञात लोग टाण्डा क्षेत्र में पैदा होकर समाज–क्षेत्र – टाण्डा के लिए जो कुछ भी किया होगा उनके प्रति आभार है और नमन है। क्रमशः उन्हीं अज्ञात महानपुरुषों की श्रेणी में जयराम वर्मा भी हैं जिन्होंने अपने कर्मों से इस क्षेत्र का गौरव बढ़ाया है।

राजनीति के माध्यम से जनता की सेवा करने का संकल्प लिया। जहाँ आप पैदा हुए इस क्षेत्र विशेष में शायद आप पहले व्यक्ति हैं जिन्हें राष्ट्रीय स्तर तक ऊँचे राजनेता जानते थे। पंडित जवाहर लाल नेहरू, इन्दिरा गाँधी राजीव गाँधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, बाजपेयी आदि सभी इनसे परिचित थे। तथा इनकी विशेषताओं से भी व्यक्ति की विशिष्टता उसे ऊँचा उठाती है।

वर्मा जी का सादा जीवन उच्च विचार

1941 में सत्याग्रह में जेल से छूटने के बाद गोसाईगंज में रामबली नेशनल इण्टर कालेज की स्थापना की, जहाँ आप कुछ दिनों तक प्रधानाचार्य पद पर आसीन रहे। बाराबंकी में विधान सभा सदस्य चुने जाने के बाद आपने प्रधानाचार्य पद से त्यागपत्र दे

दिया। बीस वर्षों तक विद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष रहे। आपने शिक्षा के बाद जीवन का प्रारम्भ देश को आजाद कराने में लगाया। तत्पश्चात अध्यापन पेशे में आये। इसीलिए आप मास्टर साहब के नाम से ज्यादा चर्चित हुए।

'सादा जीवन उच्च विचार' भारतीय दर्शन जिसे अपना कर जीने से समाजवाद स्वतः जन्म पाता है। जिस भी समाज में लोग जीवन को सादा रखेंगे, विचार ऊँचा होगा, उस समाज में व्यक्तिवादी दृष्टिकोण नहीं होगा समष्टिवादी दृष्टिकोण जन्मेगा । व्यक्तिगत स्वार्थपरता ही परिवार से समाज, समाज से देश स्तर तक विकार पैदा करती है। धन लिप्सा, ऐश्वर्य, भोग की लिप्सा बढ़ती है भौतिकवादी दृष्टिकोण को जन्म मिलता है। समाज में धन संग्रह की प्रवृत्ति का विकास होता है। धन संग्रह समाजवाद को नष्ट करता है। धन संगह की प्रवृत्ति समाजवाद के लिए कैंसर है जिसका परिणाम आज प्रत्यक्ष है। धन से सम्मान की प्रवृत्ति का विकास होता है। योग्यता कला का हास होने लगता है तब, क्योंकि समाज में जिन स्रोतों से व्यक्ति को इज्जत–आवरु मिलती है, व्यक्ति उन्हीं श्रोतों को अपनाने की भरसक कोशिश करता है जब समाज में आदर, योग्यता, आचरण, चरित्र से मिलता है तब व्यक्ति का ध्यान इस ओर लगता है। योग्य चरित्रवान बनने की होड़ समाज में दिखाई पड़ती है। जब इसके विपरीत समाज में धन से सम्मान प्राप्त होने लगता है तब धनाड्य पूँजीपति बनने की होड़ समाज में होने लगती है। समाजवाद यहीं नष्ट होता है। भारतीय दर्शन अपरिग्रह की शिक्षा देता है। अधिक सम्पदा समाज में बाँट दो। धन सांग्रह से समाज में प्रत्येक वयक्ति को उसका लाभ नहीं मिल पाता। इसलिए अधिक धन संग्रह पाप बताया गया है। भारतीय दर्शन में । यह है भारतीय संस्कृति। जिसकी अब होली जलाई जा रही है। वर्मा जी का जीवन सरल, सहज एवं सादा था। विचार ऊँचे थे।

राजनैतिक पद

1946 में प्रथम बार आप बाराबंकी से विधान सभा से निर्विरोध सदस्य निर्वाचित हुये। 1952, 1957, 1962 तथा 1967 के सामान्य निर्वाचनों में कांग्रेस के टिकट पर निरन्तर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित होते रहे हैं। 1 अप्रैल, 1967 को कांग्रेस दल त्याग दिया। 1970 में भारतीय क्रा० दल के टिकट पर उप निर्वाचन में आप विधान सभा के लिये निर्वाचित हुए। 1980 में कांग्रेस के टिकट पर फैजाबाद से लोक सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। मार्च, 1985 के सामान्य निर्वाचन में पुनः टाण्डा विधान सभा के लिए चुने गये हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार में 1959–1960 में स्वायत्त शासन उप–मंत्री रहे हैं। 1962 में तथा पुनः 1963 में भी उप–मंत्री वित्त एवं न्याय बनाये गये और 14 मार्च, 1967 तक इस पद पर रहे। 1967–68, 1970 तथा 1985 में भी आप उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल में मंत्री पद पर रहे हैं।

विधान सभा की लोक लेखा समिति तथा सार्वजनिक उपक्रम एंव निगम समति के सदस्य रहे हैं। 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में, तीन मास 21 दिन का कारावास और एक सौ रुपया जुर्माना, 1942 के भारत छोड़ों आन्दोलन में तथा 1945 में एक वर्ष 3 माह तथा 15 दिन जिला जेल, फैजाबाद तथा सेन्ट्रल जेल, वाराणसी में बन्दी रहे। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी होने के कारण केन्द्र तथा राज्य सरकार से पेंशन मिलती थी।

बापू स्मारक इण्टर कालेज, नाऊसांडा के 30 वर्षों तक सर्वोदय हाईस्कूल, कोटवा, मुहम्मदपुर, के 24 वर्षों तक, जयराम वर्मा बालिका जू० हा०, नाऊसांडा (फैजाबाद) के 3 वर्षों तक प्रबन्धक, का० सु० साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फैजाबाद के 15 वर्षों तक अध्यक्ष रहे हैं। जिला सहकारी सभा, फैजाबाद उत्तर प्रदेश पिछड़ वर्ग संघ के अध्यक्ष, संसदीय पिछड़ा वर्ग फोरम के 5 वर्षों तक संयोजक, पी०सी०सी० के 1938 से 1967 तक सदस्य, ए०आई०सी०सी० के 1952 से 1967 तक सदस्य, पी०सी०सी० कार्यकारिणी सदस्य, कांग्रेस कार्यसमिति के 4 वर्षों से स्थायी आमंत्रित सदस्य, जिला कांग्रेस कमेटी, फैजाबाद 2 वर्ष अध्यक्ष, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कल्याण परिषद, उत्तर प्रदेश तथा उसकी उप समिति के 5 वर्षो तक सदस्य, नरेन्द्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, फैजाबाद की प्रबन्ध समिति के सदस्य, संसदीय राज भाषा समति के 4 वर्षों तक सदस्य के पदों पर रहे हैं। अखिल भारतीय पिछड़ा वर्ग संघ के 15 वर्षों से उपाध्यक्ष, कांग्रेस कार्यसमिति के गत 4 वर्षों तक उपाध्यक्ष थे। सन् 1968 में सरकार के आमंत्रण पर कृषि एवं सहकारिता सम्बन्धी अध्ययन हेतु अमरीका तथा संसदीय राज भाषा समति में हिन्दी के सरकारी कामों में प्रयोग संबंधी अध्ययन हेतु रूस, जर्मनी, फ्रांस, इंगलैंड, आस्ट्रेलिया, मिस्र तथा कनाडा की 1982 में यात्रा की है।

राजनैतिक जीवन :

उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम०ए० 1932 में किया था। एम० ए० गणित से प्रथम श्रेणी में पास हुये थे। 1936 में होबर्ट हाई स्कूल टाण्डा में अध्यापक होकर पढ़ा रहे थे। इसके प्रबन्धक श्री त्रिलोकी नाथ जी थे। वर्मा जी कालेज की जमीन पर घर बनवा

लिया था। प्रबंधक को यह आश्वासन देकर किं न रहने पर यह घर कालेज का हो जायेगा। मेरा इस पर कोई कब्जा नही रहेगा। कांग्रेस पार्टी में शरीक हुये थे। ये सरकार विरोधी थे इसलिए इन पर निगाह ब्रिटिश सरकार की रहती थी। किसी भी आन्दोलन में आप ढूढ़े जाते थे। आप 1936 में कालेज के घर से जेल गए। इनकी गिरफ्तारी टाण्डा स्कूल के घर से हुई । सन् 1940 महादेव जी और आप दोनों ने स्कूल की स्थापना गोसाईंगंज में की जो अब रामबली नेशनल इंटर कालेज के नाम से जाना जाता है। प्रारम्भ में आप इसके प्रधानाचार्य हुए। स्कूल में तिरंगा लहराता रहता था। उसे उतरवाने के लिए ब्रिटिश हुकूमत ने प्रयास किया। तिरंगा नहीं उतरा। सन् 1942 में असहयोग आन्दोलन में शरीक हुए। इसी साल आप जेल भी गये।

1946 में आप पहली बार बाराबंकी से र्निविरोध विधायक हुए। 26 जनवरी 1950 से अपना संविधान लागू हुआ। यद्यपि कि 1936 में सेमी गर्वनमेंट थी। जिसका गवर्नर अंग्रेज होता था। 1946 से दिसम्बर 1950 तक अंग्रेजों का संविधान था। 1952 में अकबरपुर से विधायक निर्वाचित हुए। सन् 1957 में टाण्डा विधान सभा से कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी के रुप में खड़े हुए। इनका मुकाबला जीतबहादुर सिंह, प्रधानाचार्य, चोरमरवा से हुआ। आप विजयी हुए।

सन् 1959 में आप डॉ. सम्पूर्णानन्द के मंत्रिमण्डल में उपमंत्री बने। सन् 1962 में आप टाण्डा से फिर चुनाव जीत गये। आपका मुकाबला पंडित सत्यनारायण जी से था। अबकी बार आप उपमंत्री, वित्त एंव न्याय और वर्ष 1967 तक वित्त एवं न्याय के उपमंत्री भी रहे।

सन् 1962 में भारत–चीन युद्ध हुआ था। उस समय कुछ लोग कांग्रेस का विरोध कर रहे थे। इसलिए सी० आई० डी० चौकन्ना थी। ऐसे लोगों को गिरफ्तार किया जा रहा था। गलत ढंग से एक आदमी पकड़ा गया जो पक्का कांग्रेसी था। किन्तु उस व्यक्ति के दुश्मन ने झूठा इल्जाम लगाकर पकड़वाया। आप सचेत हुए। इसी समय टण्डा ब्लाक पर सभा थी । उस समय वहाँ जो भाषण दिया उस भाषण का मुख्य अंश इस प्रकार है :–

'इस समय देश पर संकट है। देश विपत्ति से घिरा है। देश की सुरक्षा सर्वोपरि है। ऐसी परिस्थिति में पुलिस एवं खुफिया विभाग का उत्तरदायितव बढ़ जाता है। उन्हें चौकन्ना होकर देखना है कि कोई गद्दार देश–द्रोही बचने न पाये। उसकी गिरफ्तारी

अवश्य की जाये । क्योंकि यदि कोई ऐसा व्यक्ति बच जाता है तो उससे हानि देश की होगी इसका उत्तरदायित्व पुलिस पर है, पुलिस दंडित होगी। यदि अपने कर्तव्यों की उपेक्षा करती है परन्तु पुलिस को यह भी देखना है कि कोई निर्दोष किसी झूठी शिकायत पर उसका उत्पीड़न न हो। यदि पुलिस द्वारा तथ्य की जानकारी करने में कोई चूक हुई तो वह भी दण्ड से वंचित नहीं रह पायेगा।

इस संस्मरण या उदाहरण से यह सिद्ध होता है कि वर्मा जी में सही कार्य के प्रति कितना लगाव था। पुलिस के उत्पीड़न की जानकारी जैसे आप को उसी समय से प्रारम्भ हो गई थी। अब क्या, अब तो पैसा बड़े अपराध को पी जाता है। अपराधी मूछों पर ताव दिये रहता है। इतना ही नहीं वही समाज का अगुवा, पथप्रर्दशक भी बना हुआ है। जिसके पास इस समय लक्ष्मी है। ऊँचे पद पर है। अपराध प्रवृत्ति का आशय केवल हिंसा ही नहीं वरन भ्रष्ट आचरण का होना भी है। अपने स्वार्थ के लिए देश हित समाजहित न देखना भी अपराध ही है। आज का नेता अधिकारी–कर्मचारी, समाज–हित, देश–हित कहाँ देख रहा है।

वर्मा जी इसलिए अब बहुत याद आने लगे हैं। उनकी भावना उनका कर्म ऊँचा पवित्र था। अपने लिए नही समाज के लिए सारी जिंदगी गुजार दी।

आप में सूक्ष्म निरीक्षण करने की आदत एवं स्वभाव में विलक्षणता कूट–कूट कर भरी था।

एक बार उनके पुत्र कमलापति के स्थान पर कमला पती टाइप हो गया। वह प्रपत्र कहीं जाना था। किसी भी पत्र को सरकारी–गैर सरकारी को गौर से देखना आपका स्वभाव था। पढ़ा देखा, इमला गलत था। बुलवाया टाइपिस्ट को कहा देखो यह किसी मंत्री के यहाँ से अशुद्ध कागज जाना मंत्री पद का अपमान है ध्यान रखा करो।

1967 के चुनाव में अकबर पुर से कैलासविहारी के मुकाबले विजयी हुए। सरकार बनी। चन्द्रभान गुप्ता मुख्यमंत्री बने। चन्द्रभान गुप्ता पूंजीवादी विचारधारा के थे। वर्माजी की विचारधारा गांधी वादी थी। दोनो की विचारधारा में मेल नहीं। इसलिए टकराव होना स्वाभाविक है। जहाँ मतैक्य नहीं वहाँ एकता कैसी? अतः कांग्रेस के टूटने की परिस्थितियाँ बनने लगी। किसान मजदूर का विकास, गरीबों का विकास इनकी जिंदगी का मुख्य लक्ष्य था। इन दोनों वर्गों की दीनता–पीड़ा इन्हें साल रही थी। किसानों के पक्षधर पश्चिम के

चौधरी चरण सिंह और पूरब के पक्षधर जयराम वर्माजी का मेल हुआ। दोनों का लक्ष्य एक था। इसलिए दोनों के संगठन से कांग्रेस में दरार पड़ी। फैजाबाद में रामचन्दर आजाद, राजबहादुर द्विवेदी ने कांग्रेस छोड़ दिया। पहली अप्रैल सन् 1967 में गुप्ता सरकार अल्पमत में हो गयी। चौधरी चरण सिंह मुख्यमंत्री हुए। यह सरकार 10 माह चली। इस सरकार में आप कैबिनेट मंत्री हुए। आपको कृषि, पंचायत राज, सामुदायिक विकास, गन्ना एवं चीनी मील विभाग मिले।

अन्न का संकट था। आपने प्रदेश स्तर के अधिकारियों की मीटिंग बुलवाई। बाहर से गेंहूँ आ रहा था। किसानों ने कितना गेहूँ बोया है। मुझे सही आंकड़ा चाहिए। जिस किसान ने जितना गेहूँ बोया है, सही–सही आंकड़ा चाहिए। आंकड़ा आने पर उन्हें विश्वास हुआ इस वर्ष अनाज बाहर से नहीं मंगाना पड़ेगा।

पत्रकारों ने पूछा–इस साल गेहूँ की स्थिति कैसी रहेगी?, 'अच्छी रहेगीं । बाहर से नहीं मंगाना पड़ेगा। हम बाहर भी देंगें।' जब गेहूँ तैयार हुआ, कटा, आप की बात सही हुयी।

वर्मा जी की ईमानदारी का एक संस्मरण श्री रामकेवल वर्मा ने फिर सुनाया–चीनी मिल मालिक कानपुर का आया। वर्मा जी बंगले पर नहीं थे। उसने अपना ब्रीफकेश उनके बंगले पर रख दिया और कह कर गया–वर्मा जी को दे देना। वर्मा जी आये ब्रीफकेस खोला नोटों की गड्डियों से भरा हुआ था। उसमें पत्र भी था। उस समय गन्ना सचिव कौसिव थे। उनसे उस मिल मालिक को बुलाने के लिए कहा– आने पर, 'समाज दूषित है। इसलिए मैं दंड नहीं दे रहा हूँ। तुम्हारी पहली गलती है। भविष्य में फिर गलती हुई तो मिल गड्ढे में डाल दूँगा।' उनकी ईमानदारी अद्वितीय थी, बेजोड़ थी । दस महीने के बाद यह सरकार गिर गई। जन कांग्रेस के स्थान पर भारतीय क्रांति दल वी० के० डी० का गठन हुआ। चौधरी चरण सिंह इस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हुए। सन् 1969 में अकबर पुर से भारतीय क्रांति दल पार्टी से प्रियदर्शी जेटली के मुकाबले चुनाव लड़े। इस चुनाव में आपकी हार हुई। जेटली कांग्रेस पार्टी से विजयी हुए।

मतगणना के दौरान की स्थिति का वर्णन करते हुए श्री रामकेवल वर्मा ने कहा, 'मास्टर साहब बिलकुल हारने के कगार पर हैं। सब लोग इनके समर्थक भाग लिये हार सुनिश्चित जानकार। किन्तु मास्टर साहब अंतिम क्षण तक नोट करते रहे। अंत में वहाँ से

निकले। मैं भी उन्हीं के साथ–साथ निकला। विरोधी पीछे से मास्टर साहब को इशारे से चिढ़ा रहे थे। मैं देख रहा था।

'इशारे से क्या चिढ़ा रहे थे ?

'छड़ी से चलते हुए उनके चाल की।'

श्री राम चन्दर आजाद की काउन्टिंग हो रही थी। आजाद जीत रहे थे। मास्टर साहब कुर्सी पर बैठे थे। इसी बीच डी० एम० श्री सैय्यद इबराहिम आये। उन्हें देख कर मास्टर साहब उठ खड़े हुए। उनके सम्मान में। 'ऐसा क्यों?'

इसलिए कि मास्टर साहब हार चुके थे। किसी पद पर नहीं थे इसलिये उठकर यह आदर्श प्रस्तुत किया वहाँ के मौजूद लोगों को कि अधिकारी को सम्मान मिलना चाहिए। अनुशासन कायम रखने के लिए अनुशासन का महत्व है।

वर्मा जी छोटी गलतियों पर विशेष ध्यान रखते थे न होने देते थे और न किसी में देखना ही चाहते थे। तुरन्त इशारे से या डांटकर सचेत एवं सावधान कर दिया करते थे।

कांग्रेस पार्टी में भी श्री मदन मोहन वर्मा, अवधेश सिंह, हयात मु०, टाण्डा, विश्वनाथ कपूर, फैजाबाद, कुंवर साहब, हंसवर, मु० शफी उर्फ शाह जी हंसवर, कांग्रेस पार्टी में ही थे। इन लोगों से वर्मा जी की वैचारिक स्तर पर सदैव विषमता ही रही। यद्यपि की व्यक्तिगत सम्बन्ध बहुत ही मधुर रहे। ये लोग वर्मा जी को काफी सम्मान देते थे। वर्मा जी पिछड़ा वर्ग संघ के अध्यक्ष थे। पहले समाज में कुरीतियाँ आज की अपेक्षा जयादा थी। पिछड़े वर्ग तथा अनुसूचित जातियों में बाल–विवाह प्रथा जोरों पर थी। अशिक्षा ज्यादा थी। वर्मा जी ने बाल–विवाह पर रोक लगाने का काफी प्रयास किया। उन्होंने लोगों में इस कुरीति के प्रति चेतना जागृत किया। दौड़–दौड़ कर लोगों को बाल–विवाह से होने वाली हानियों के संदर्भ में ज्ञान कराया, समझाया बुझाया। जो समझाने पर भी नहीं मानते थे उन पर मुकदमें भी चलवाये। शत्रुता भी खरीदा। किंतु इसका प्रभाव जन मानस पर अच्छा पड़ा। डर की वजह से बहुतेरों ने बाल–विवाह करना बन्द किया होगा। इस प्रकार वर्मा जी की उदारता और कठोरता दोनों इस कुरीति को रोकने में सहायक हुई। सामयिक परिष्कार आप के द्वारा ही हुआ ।

श्री बिनोवा भावे का भूदान आन्दोलन पूरे देश में चल रहा था । विनोवा जी पूरे

भारत की पैदल यात्रा करते हुए भूमि दान करा कर भूमिहीनों में बांटते थे। तत्काल सरकारी खर्च पर ही पट्टा करा दिया जाया करता था। उस समय कांग्रेस का शासन था इसलिए पट्टा निःशुल्क हो जाता था ।

बिनोवा जी फैजाबाद जिले में पहुँचे। वर्मा जी तब गोसाईंगंज में प्रधानाचार्य थे। नया स्कूल खुला था। बिनोवा जी गोसाईंगंज पहुँचे थे गोसाईंगंज से आप बिनोवा की मंडली के साथ–साथ पैदल सोहावल तक गये। इसके बाद जिले स्तर पर भूदान आंदोलन समिति का गठन हुआ। वर्मा जी अध्यक्ष हुए। इन्होंने पूरे जिले में भ्रमण करके भूदान करवा कर गरीबों को जमीन पट्टा करवाया। वर्मा जी में दलितों–शोषितों के प्रति विशेष लगाव था। इनके हित से सम्बंधित कार्यों में आप काफी रुचि लेते रहे और इनके हित की बात आप हमेशा सोचते रहे। इस वर्ग का हित कैसे होगा इस विषय पर आप काफी रिसर्च करते रहे। पूरा जीवन इसी में खपा दिया।

राजनैतिक जीवन :

सन् 1970 में रामचन्दर आजाद से टाण्डा विधान सभा से इस्तीफा दिलाया गया। वर्मा जी को लड़ाया गया। चुनाव में मुकाबला रामनारायण त्रिपाठी पूर्व विधान सभा उपाध्यक्ष से था। वर्मा जी लगभग 16000 वोटों से विजई हुए थे। चौधरी चरण सिंह की दुबारा सरकार बनी। वर्मा जी मंत्री हुए। कुछ माह सरकार चली। इसके बाद कांग्रेस दो भागों में बँट गयी।

1. संगठन कांग्रेस 2. सत्ता कांग्रेस

उत्तर प्रदेश संगठन कांग्रेस के नेता श्री चन्द्रभान गुप्त जी थे। एवं सत्ता कांग्रेस के नेता श्री कमलापति त्रिपाठी थे। चन्द्रभान गुप्ता और चौधरी चरण सिंह में समझौता हुआ। सत्ता कांग्रेस को छोड़कर उत्तर प्रदेश में संगठन कांग्रेस क्रांतिदल, एवं अन्य छोटी पार्टियों को मिलाकर संयुक्त विधायक दल बना जिसका नेता श्री त्रिभुवननरायण सिंह को बनाया गया। श्री त्रिभुवननारायण सिंह उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री बने। सभी दलों की मिली–जुली सरकार बनी। वर्मा जी अपने नेता चौधरी चरण सिंह का विरोध न करने के कारण गठबन्धन का विरोध तो नहीं किया किन्तु इस गठबन्धन से सहमत नहीं थे। सरकार में सम्मिलित होने के लिए त्रिभुवननारायण सिंह के नेतृत्व वाले मंत्रिमंडल में इनको सम्मिलित करने के लिए आमंत्रित किया गया। परन्तु सरकार में सम्मिलित होने से

इनकार कर दिया। राजनारायण चौधरी, सी० बी० गुप्ता आदि ने सरकार में सम्मिलित होने के लिए दबाव तो डाला किन्तु ये सरकार में सम्मिलित नहीं हुए। कुछ समय बाद सत्ता कांग्रेस के नेता श्री कमला पति त्रिपाठी ने वर्मा जी के पास उनके निवास बड़गाँव में बलदेव सिंह आर्य, ईश्वर शरण सिंह (भाई जी) एवं अपने पुत्र श्री लोकपति त्रिपाठी को इस संदेश के साथ भेजा कांग्रेस सत्ता में साथियों सहित वापस आ जाये और मुख्यमंत्री बने। परन्तु वर्मा जी ने कहा कि मैं पद के लिये अपने सिद्धान्तों को छोड़ नहीं सकता मैं मुख्यमंत्री नहीं बनूंगा। इस प्रकार एक बार मुख्यमंत्री की कुर्सी वर्मा जी के सिद्धान्तों से टकरा कर वापस लौट गई। भावना में बड़ी शक्ति है। भारत माँ की वेदना ने पत्नी की वेदना को हल्का किया होगा। माँ को पीड़ा अपमान से मुक्त कराने के लिए ही तो तप कर रहे थे। इसी बीच यह भी एक तप परीक्षा के लिए जैसे आ गया हो।

माफी मांग लो छोड़ दिया जायेगा। इन्होंने कहा माफी नहीं मांग सकता। माँ का दर्जा ऊँचा होता है पत्नी से । भीतर–भीतर तो टूटे होंगे अवश्य पर बाहरी तौर पर कहीं भी टूटने की रेखा वर्मा जी के मुख मंडल पर अंकित नहीं होने पाई। उनके हाव–भाव, तौर–तरीकों में कहीं कोई भी खरोंच परिलक्षित नहीं हुई। यह था वर्मा जी का व्यक्तित्व। एक माह के लिए वर्मा जी पेरोल पर जेल से आये थे।

भाई जगमोहन का निधन :

पत्नी के बाद उनके छोटे भाई जगमोहन जी का निधन हो गया। भाई ही खेती–बारी सम्भाल रहे थे। छोटे भाई निःसन्तान थे। इनकी पत्नी जिसे लोग मोटको कहते हैं, वे अब भी हैं। लिखते समय तक भाई के निधन का प्रभाव आ पड़ा।

सुत वित्त नारि भवन परिवारा।
मिलहिं जग बारंबारा।।
मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता।।

मानसकार की यह पंक्ति अनुभवगम्य है कि नहीं किन्तु भाई का भाई के प्रति अनुराग उनकी गहराई का अनुमान हर भाई करता है। नैसर्गिक ममत्व को कौन रोक पाता है। किसका हृदय भाई के निधन से न छलछलाता होगा। वर्मा जी भाई के कर्मकाण्ड पर बैठे थे। मेरे पिता स्वर्गीय लक्ष्मीनारायण पुरोहित थे। घंट बंधा था जब तक आप कर्म कांड के लिए बैठे थे पिता जी प्रतिदिन प्रातः उनके पास जाया करते थे। तब मैं पढ़ रहा था।

कभी–कभी मैं भी पिता जी के साथ जाया करता था।

बचपन से ही विशेष व्यक्तियों के प्रति आकर्षण है। मैं इन्हें गौर से देखता था। इनके क्रिया–कलाप, बात–चीत, हाव–भाव को देखता रहता था।

मैने इनके आँखों में आँसू देखा था और एक आदमी से बतियाते हुए सुना था। आज भी याद है। कह रहे थे–

ष्अब तक मैं निश्चिन्त था। किन्तु अब भाई के चले जाने से बहुत कमजोर महसूस कर रहा हूँ। खेती–बारी कौन संभालेगा।''

कांग्रेस के नेतृत्व में सरकार बनाकर प्रदेश के मुख्य मंत्री बन जाये। परन्तु वर्मा जी ने कहा, 'मैं पद के लिए अपने सिद्धान्तों से नही हट सकता। मैं मुख्यमंत्री नहीं बनूँगा'।

इस प्रकार एक बार मुख्यमंत्री की कुर्सी वर्मा जी के सिद्धान्तों से टकरा कर इनके चौखट से वापस लौट गई।

वर्मा जी की पत्नी का निधन

वर्मा जी के दो संताने थी। कमला और सावित्री । वर्मा जी जेल में थे तभी इनकी पत्नी का निधन हुआ। आप तरुण ही थे। आजादी के लिए जेल गए थे। निधन पत्नी का जेल में सुनना–जानना एक दारुण कहानी है।

मन तो मन है। मन को साधना पड़ता है, तपाना पड़ता है। मन को नियंत्रण में रख पाना कठिन होता है। हर एक के लिए वर्मा जी भी एक साधारण युवा ही थे कोई योगी तपस्वी नहीं। युवावस्था काम भावना का काल है। काम की मार तो हर नर–नारी पर पड़ती है। अचानक तरुण पत्नी का निधन उन्हें तोड़ा मरोड़ा होगा। भीतर जख्मी हुआ होगा। हृदय विह्वल हुआ होगा। अंधेरा छाया होगा। मनःस्थिति ने उन्हें गींजा होगा। स्थिति असहज, असमान्य हुई होगी। बेचौनी का झोंका आया होगा।

माननीय श्री जयराम वर्मा जी ने बताया कि 1967 में श्री चौधरी चरण सिंह जब पहली बार संविद सरकार में मुख्यमंत्री बने तो वे अपने साथ मंत्री जयराम वर्मा और श्रीपति मिश्र को साथ लेकर देवरहवा बाबा के दर्शन के लिए गये। देवरहवा बाबा से चौधरी चरण सिंह ने अपने राजनैतिक भविष्य के बारे में पूछा तो बाबा ने बताया कि तुम दो बार

मुख्यमंत्री बनोगे और उछलकूद करते प्रधानमंत्री की कुर्सी पा जाओगे।

श्री जयराम वर्मा ने अपने जीवन के आखिरी छणों के बारे में पूछा तो बाबा ने बताया कि तुम्हारा स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक रहेगा। तुम किसी के मोहताज नही रहोगे। शरीर ऐसे शान्त हो जायेगा कि किसी को भनक तक नही लगेगी कि यह क्या हो गया। पंछी कब उड़ गया किसी को पता तक नही चलेगा।

श्रीपति मिश्रा ने अपने लड़के के भविष्य के बारे में पूछा कि क्या वह राजनैतिक जीवन में एक सफल नेता बन पायेगा तो बाबा ने बताया कि वह कभी भी नेता नही बन पायेगा।

देवरहवा बाबा की बताई गई बातें पूर्णतः सत्य निकली। चौधरी चरण सिंह दो बार मुख्यमंत्री बने और देश के प्रधानमंत्री भी बन गये।

जयराम वर्मा जी 13/01/1987 को दिल का दौरा पड़ने से खत्म हो गये। बंगले से जाते समय स्वयं छड़ी लेकर गाड़ी में बैठे। चौधरी नरेन्द्र सिंह कृषि मंत्री और डा० एस० सी० राय प्रमुख अधीक्षक बलरामपुर अस्पताल के कहने के बावजूद भी स्ट्रेचर पर नही बैठे और छड़ी लेकर एम्बुलेंस में बैठ गये। मैं उनके साथ ही रहा और बलरामपुर अस्पताल पहुँचते ही वर्मा जी ने शरीर त्याग दिया। श्रीपति मिश्रा का लड़का कभी भी नेता नही बन पाया।

चंडीगढ़ में वर्मा जी के साथ डा. आर. वी. यस. यादव–सर्जन, श्री राम अशीष वर्मा तथा अन्य प्रतिष्ठित आगन्तुकगण

अखिल भारतीय गुर्दा प्रत्यारोपण खेलकूद-1980, चंडीगढ़ में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कार देते हुए आदरणीय वर्मा जी।

जयराम वर्मा जी की वंशवली

पिता का नाम	–	श्री ननकू चौधरी
माता का नाम	–	श्रीमती नैपाली देवी
नाना का नाम	–	श्री सन्तबक्स चौधरी
नानी का नाम	–	श्रीमती लक्ष्मी देवी
पत्नी का नाम	–	श्रीमती प्राणा देवी
पुत्र का नाम	–	श्री कमलापति वर्मा
पुत्रवधू का नाम	–	श्रीमती पुष्पावती वर्मा
पौत्र का नाम	–	श्री राकेश वर्मा
पौत्री का नाम	–	श्रीमती ऊषा वर्मा
छोटे भाई का नाम	–	श्री जगमोहन वर्मा (सन्तानहीन)
छोटे भाई की पत्नी का नाम	–	श्रीमती फुलरा देवी
पौत्र के पत्नी का नाम	–	श्रीमती दीप्ति वर्मा पत्नी राकेश वर्मा
पौत्र के बच्चों का नाम	–	पल्लवी वर्मा, प्रेरणा वर्मा (पुत्री राकेश वर्मा)

जयराम वर्मा जी के चचेरे भाइयों का नाम

चचेरे भाई का नाम	–	श्री रामप्रताप वर्मा
श्री राम प्रताप वर्मा की पुत्रियाँ	–	श्रीमती यशोदा वर्मा श्रीमती प्रेमा वर्मा श्रीमती सीमा वर्मा (पुत्री श्रीमती यशोदा वर्मा) श्रीमती सीमा वर्मा पत्नी श्री विपिन कुमार चौधरी (पूर्व एम.डी. पैक फेड, उ.प्र.)
श्री रामप्रताप वर्मा के पुत्रों का नाम	–	श्री सुरेन्द्र वर्मा, श्री देवेन्द्र वर्मा, श्री संदीप वर्मा
चचेरे भाई का नाम	–	श्री पाटनदीन वर्मा

		श्रीमती तालुका देवी (पुत्री श्री पाटनदीन वर्मा)
भतीजे का नाम	–	श्री बाबूराम वर्मा
श्री बाबूराम वर्मा की पुत्रियाँ	–	श्रीमती सुशीला वर्मा श्रीमती कुसुमलता वर्मा श्रीमती उर्मिला वर्मा श्रीमती प्रमिला वर्मा श्रीमती नीलम वर्मा
श्री बाबूराम वर्मा के पुत्र का नाम	–	श्री बृजेश वर्मा
चचेरे भाई का नाम	–	श्री रामनयन वर्मा
भतीजे का नाम	–	श्री ठाकुर प्रसाद वर्मा
श्री ठाकुर प्रसाद वर्मा की पुत्रियाँ	–	श्रीमती शशि वर्मा, श्रीमती निशा वर्मा श्रीमती पूनम वर्मा, श्रीमती सुनीता वर्मा
श्री ठाकुर वर्मा के पुत्रों का नाम	–	श्री राजेश वर्मा, श्री शैलेश वर्मा, श्री विपिन वर्मा
चचेरे भाई का नाम	–	श्री दौलतराम वर्मा
चचेरे भतीजे का नाम	–	श्री सभाजीत वर्मा
श्री सभाजीत वर्मा की पुत्रियाँ	–	श्रीमती मंजू वर्मा, श्रीमती मीना वर्मा
श्री सभाजीत वर्मा के पुत्रों का नाम	–	श्री अमरेश वर्मा, श्री भूनेश वर्मा, श्री हेमन्त वर्मा

जयराम वर्मा जी के पौत्र राकेश वर्मा का विवाह जनपद फर्रुखाबाद के अन्तर्गत कायमगंज, निवासी–विजय प्रेम गंगवार, अधीक्षण अभियन्ता, सिचाई विभाग, की पुत्री दीप्ति वर्मा के साथ सम्पन्न हुआ। वर्मा जी का परिवार सुसंस्कृत एवं सभ्य है। परिवार के सभी लोग परास्नातक (पोस्ट ग्रेजुएट) हैं।

बड़ागाँव, इब्राहिमपुर, इल्तिफातगंज से अकबरपुर जाने वाली सड़क पर स्थित है। इल्तिफातगंज से दक्षिण दिशा में जाने पर लगभग 5 किमी0 के बाद यह गाँव स्थित है, जो बायीं तरफ पड़ता है। अकबरपुर से इल्तिफातगंज आते समय लगभग 15 किमी0 की दूरी

पर दायीं तरफ बड़ागाँव, इब्राहिमपुर स्थित है। जयराम वर्मा जी के पौत्र राकेश वर्मा सड़क दुर्घटना में घायल हो गये थे जिनका मेदान्ता हास्पिटल, गुड़गाँव हरियाणा में इलाज चल रहा था वे आई०सी०यू० में भर्ती थे इलाज के दौरान दिनाँक 08.10.2018 को उनका देहान्त हो गया। वे अपने पीछे परिवार में पत्नी श्रीमती दीप्ति वर्मा तथा दोनों पुत्रियाँ पल्लवी वर्मा व प्रेरणा वर्गा को छोड़कर स्वर्गवासी हो गये ।

गाँव का जीवन तथा चर्माजी का बचपन

आज गाँव का बहुत विकास हो चुका है। वैज्ञानिक खेती, सिंचाई के नये–नये साधन, नये–नये बीज, कीटनाशक दवायें, कृषि के आधुनिक संयन्त्र, जुताई के लिए ट्रैक्टर, कल्टीवेटर, रोटावेटर, कटाई के लिये कम्बाइन मशीन, फौव्वारा द्वारा सिंचाई करने की स्पेंकिलर मशीन, नहर, नलकूप, पम्पिंग सेट, इंजन, बिजली से चलने वाली अनेक मशीनें, बिजली की रोशनी में जगमगाता गाँव, सौर ऊर्जा से चलने वाले संयन्त्र एवं सौर ऊर्जा लाइट, रसोई गैस, वाशिंग मशीन, फ्रीज, एल0ई0डी0–टीवी, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, मोबाइल, पक्की सड़कें, सी०सी० रोड, इण्टरलॉकिंग एवं खड़न्जा, गाँवों को मुख्यमार्ग से जोड़ने वाली प्रधानमंत्री योजना की सड़कें, चार पहिया लक्जरी वाहन, अच्छे–अच्छे बड़े मकान, शहर जैसा दिखता गाँव, स्कूल, अस्पताल, बैंक, पोस्ट आफिस आदि सभी संसाधन आज गाँवों में उपलब्ध हैं। आने–जाने के लिये परिवहन निगम की बसें, प्राइवेट बसें, जीप, विक्रम–टैम्पो, आटो एवं अन्य परिवहन के साधन तथा गाँव से जोड़ते हुये रेलमार्ग हो चुके हैं। आधुनिक भारत में विकास की गति एवं समृद्धि गाँवों तक दिखायी देने लगी है।

आज के गाँव में तथा वर्मा जी के बचपन के समय के गाँव में धरती और आकाश का अन्तर दिखायी देता है। उस समय वर्षा पर आधारित खेती होती थी। सिचाई के लिये नहर, नलकूल, पम्पिंग सेट, इंजन एवं बिजली से चलने वाले संयन्त्र नहीं थे। जुताई के लिये ट्रैक्टर, कटाई के लिये कम्बाइन मशीन, मड़ाई के लिये थ्रेसर, आने–जाने के लिये परिवहन निगम की बसें, टैक्सी, जीप और प्राइवेट बसें भी नहीं थीं। गाँवों स्कूल, अस्पताल, बैंक और पोस्ट ऑफिस आदि का अभाव था, इनकी संख्या बहुत कम थी। कृषि का कार्य मानवश्रम द्वारा होता था, जुताई का कार्य बैलों द्वारा देशी हल से किया जाता था, ढुलाई का कार्य बैलगाड़ी एवं इक्का–तांगा द्वारा होता था। गाँव के लोग ब्रह्ममुहूर्त में ही जाग जाते थे। पुरुष लोग गाय–बैल, भैंस तथा अन्य जानवरों को चारा खिलाते थे,

महिलायें जाँता – चकिया द्वारा आँटा पीसने का कार्य, मूसल द्वारा ओखली एवं पत्थर की बनी कांड़ी से धान, सांवाँ, कोदो, काकून, जड़हन–धान, बगरी धान आदि से चावल निकालने का कार्य करती थीं। प्रातःकाल तीन बजे से ही किसान हल–बैल लेकर खेतों में जाते थे और खेत की जुताई का कार्य करते थे। गाँव के लोग बहुत परिश्रमी होते थे, आपस में मिल–जुलकर एक दूसरे का सहयोग कर कृषि कार्य करते थे। उस समय खरीफ की फसलों में देशी धान में बगरी का धान, चाइना फोर धान, जड़हन धान, सांवाँ, कोदो, काकुन, उरद, अरहर, ज्वार–बाजरा, मक्का, मूंगफली, तिल, शकरकन्द, सनई, आदि फसलें पैदा की जाती थीं। रबी की फसलों में गेहूं, जौ, चना, मटर, आलू, सरसों, अलसी, तिउरा, टमाटर, बैंगन, गोभी, शलजम, गाजर, धनिया, मिर्चा, लहसुन, प्याज, चुकरकन्द, पालक, मेंथी, गन्ना आदि फसलें पैदा की जाती थीं। सिंचाई के साधन के रूप में चरखी, डोगला, रहट, ढेंकुर, कुआँ, पोखरा एवं तालाब आदि से सिंचाई की जाती थी। आने–जाने के लिये बैलगाड़ी, इक्का–तांगा, पीनस आदि के ही साधन उपलब्ध थे। सरसों, अलसी, तिउरा, महुवा की कोइनी आदि से तेल निकालने के लिये बैल द्वारा चालित देशी कोल्हू से तेल निकालने का कार्य किया जाता था। गन्ना की पेराई का कार्य बैलों से चलने वाले देशी कोल्हू से किया जाता था। देशी कोल्हू से निकलने वाले गन्ने के रस से गुड़, राव, भेली आदि तैयार किया जाता था।

जहाँ गन्ने की पेराई होती थी उसे कोल्हार कहा जाता था। उस समय गन्ना की पेराई बहुत होती थी, गाँव में जगह–जगह कोल्हार चलते थे, रातभर गुड़, राव, भेली बनाने का कार्य होता था। कोल्हार में लोगों को बुला – बुलाकर गुड़–भेली खिलाया जाता था, गुड़ पकाने वाले कड़ाहे में आलू को छीलकर लोहे के तार या रस्सी में छेदकर कड़ाहे में डाल देते थे, आलू रस में पककर बहुत मीठी हो जाती थी, उसको लोग बड़े चाव से खाते थे। कोल्हार में आलू को आग में भूनकर भी खाते थे। मटर की घुघरी बनाकर खाते उसके बाद गन्ने के रस को पीकर लोग मस्त हो जाते थे। गन्ने के खेत में लोग सुबह से ही गन्ने को चूसते थे और पेट भर लेते थे, जो एक टॉनिक का कार्य करता था।

गाँव के लोग गुड़–भेली बहुत खाते थे। सुबह नाश्ते के रूप में चना की घुघरी या गेहूँ और मटर से बनी घुघरी को खाकर राब का रस पीकर मस्त हो जाते थे, दोपहर तक भोजन की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। उस समय गाँवों में डायबिटीज एवं ब्लडप्रेशर के

मरीज नहीं थे, लोगों में आपसी प्रेम एवं भाई–चारा था, उस समय संयुक्त परिवार होता था। परिवार के लोग बड़े–बुजुर्गों की आज्ञा का पालन एवं उनका सम्मान करते थे। गाँव के नौजवान हृष्ट–पुष्ट एवं निरोगी होते थे। गाँवों में दूध प्रचुर मात्रा में पाया जाता था इस कारण दूध–दही, घी एवं छाछ की बहुलता थी। गाँवों में चाय का प्रचलन नहीं था, देशी चीजों एवं घर की बनी हुयी चीजों से ही मेहमानों का स्वागत किया जाता था । उस समय मोटे अनाज जैसे चना, मटर, ज्वार, बाजरा, सावाँ, काकुन, कोदो, पेटुआ (पटसन) तिल आदि की बहुत पैदावार होती थी। गाँवों में उस समय देशी आम की बहुत बड़ी–बड़ी बागें होती थीं, जिसमें प्रतिवर्ष अधिक मात्रा में फल लगते थे और लोगों का 2 महीना बागों में बीतता था। लोग आम का फल एवं उससे बनी हुयी अमावट खाते थे, जिससे वे काफी स्वस्थ बने रहते थे। बागों में इतना ज्यादा फल होता था कि खट्टे आम जानवर भी नहीं खाते थे। सावन के महीने में पेड़ की डालों पर झूले पड़ जाते थे, नवयुवतियाँ और महिलायें झूला झूलती, कजरी एवं सावन गीत गातीं थीं, नवयुवक लोग झूले पर पेंगें मारते थे, बहुत मनोहर एवं मनोरंजक वातावरण रहता था। झूला झूलती महिलायें एवं नवयुवतियाँ तथा नवयुवक आनन्दित एवं प्रसन्नचित होते थे। त्योहारों में देशी घी की पूड़ी, गुलगुला, गुझियां से गाँव महक उठता था। लोग आपस में मिल–जुलकर त्योहार मनाते थे, किसी में कोई बैर भाव नहीं था। गाँव के नवयुवक बड़े बुजुर्गों के सामने कोई उद्दण्डता नहीं करते थे। उस समय बिरहा, आल्हा, फगुआ गीत द्वारा लोग मनोरंजन प्राप्त करते थे। गाँवों में घरों पर गाय–बैल, भैंस द्वार की शोभा बढ़ाते थे। उस समय कोई दूध नहीं बेचता था। गाँव का वातावरण एवं हवा–पानी बहुत शुद्ध था। घर के आंगन में तुलसी के पौधे से घर की शोभा बढ़ती थी। अतिथि लोग कई दिनों तक रुकते थे, गाँव के लोग उनका आदर एवं सत्कार भली–भाँति करते थे। उस समय जहरीले फास्ट फूड का प्रचलन नहीं था, दलहन का उत्पादन अधिक मात्रा में होता था।

उस समय के खेल कबड्डी, गुल्ली–डण्डा, सुर्र, शेरपैंतिया, कुश्ती आदि थे। कुश्ती के लिये जगह–जगह दंगल का आयोजन होता था। दंगल में जिले के प्रसिद्ध पहलवान आते थे, गाँव के लोग इकट्ठा होकर के बड़े उत्साह के साथ दंगल को देखते थे। गाँव में ही कबड्डी का आयोजन होता था, नवयुवक कवड्डी खेलते थे और पूरे गाँव के लोग इकट्ठा हो करके कबड्डी का आनन्द लेते थे। अच्छे आल्हा गायक को बुलाकर आल्हा गायन के माध्यम से वीर रस प्राप्त कर मनोरंजन एवं ऊर्जा प्राप्त करते थे। विरहा के माध्यम से

भक्तिरस प्राप्त कर लोग आध्यात्मिकता का आनन्द लेते थे।

वर्मा जी की बाल्यावस्था बड़ागाँव एवं ननिहाल दोहरीपुर में बीता था। बाल्यावस्था में वर्मा जी कबड्डी, गुल्ली–डण्डा, सुर्र एवं अन्य खेल–कूद के शौकीन थे। अपनी उम्र के बालकों के साथ कबड्डी, छलांग लगाना एवं दौड़ना उनको अच्छा लगता था। इस खेल के लिये बालकों में प्रतिस्पर्धा होती थी। कबड्डी उस जमाने का प्रसिद्ध खेल था, उस समय अपने देश में क्रिकेट के खेल का प्रचलन नहीं था, बच्चों में ढेले द्वारा निशाना साधनें की प्रतिस्पर्धा होती थी। वर्मा जी को निशाना साधने में बहुत आनन्द आता था। बार–बार ढेले द्वारा निशाना साधने के कारण वे अच्छे निशानेबाज बन गये थे। आम के पेड़ पर पका आम देख करके उस पर ढेले द्वारा निशाना साधकर पका आम तोड़ देते थे। वर्मा जी का बचपन गाँव में ही बीता था। गाँव के किसानों का अभावग्रस्त जीवन देखकर उन्हें बहुत दुःख होता था। गाँव के लोग अधिकतर निरक्षर थे। उस समय गाँव में बहुत गरीबी थी किन्तु वर्मा जी के परिवार की आर्थिक स्थिति तुलनात्मक अच्छी थी।

गाँव में आपका परिवार एवं घर बड़ा था, दालान लम्बी थी, घर के सामने देशी आम की बड़ी बाग है, आपके माता–पिता शुद्ध शाकाहारी थे, उनकी माताजी धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं, श्रीरामजी और श्रीहनुमानजी की अनन्य भक्त थीं। वर्माजी के नाना–नानी एवं उनका परिवार संस्कारवान एवं सज्जन था। वर्माजी के नाना एवं नानी श्री शिवजी के भक्त थे। बाल्यावस्था में उनकी माता नेपाली देवी छत्रपति शिवाजी, राजा हरिश्चन्द्र, राजा विक्रमादित्य एवं पाण्डवों की कहानियाँ सुनाती थीं। माता–पिता एवं नाना–नानी के संस्कार का गहरा प्रभाव वर्मा जी के मन–मस्तिष्क पर पड़ा। वर्गा जी बचपन से ही गाँव, देश एवं समाज के उत्थान एवं उन्नति के बारे में विचार करते रहते थे, इस कारण उन्होंने अपने को तपाने का जाये तो ज्यादा अच्छा रहेगा। वर्मा जी ने कहा वरिष्ठ अध्यापक को छोड़कर जूनियर अध्यापक को कैसे प्रमोशन दे दूँ, मुझे कलंकित कराना चाहते हो? जिसका जो अधिकार है उसी को प्राप्त होना चाहिए। किसी के साथ अन्याय नहीं होना चाहिए। इस बात को सुनकर पैरवी करने वाले लोग बहुत शर्मिन्दा हुए। वर्मा जी ने सर्वदा सत्य का ही साथ दिया था। किसी के अधिकारों का कभी भी हनन नहीं किया। मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता देकर उच्च आदर्श को स्थापित किया था। आप समाज की सभी जातियों को सम्मान देते थे। किसी के प्रति विरोध का भाव नहीं रखते थे। आप गरीबों के

विकास के पक्षधर होने के साथ–साथ उनको मान–सम्मान देने का समदर्शी भाव रखते थे। समाज के विकास में सभी लोगों की भागीदारी आवश्यक मानते थे।

दूसरा प्रसंग, टाण्डा तहसील में चकबन्दी चल रही थी, किसान जो खेती करता है या बटाई पर देकर दूसरों से करवाता है वह सभी लोग किसान की श्रेणी में आते हैं। लेकिन कुछ जातियों को खेती से प्रेम बहुत होता है अगर कहीं जमीन बिक रही है तो उसे खरीदने के लिए पूरी जोर आजमाइश करके उसको खरीदने का भरसक प्रयास करते हैं। कुछ जातियों का खेती–किसानी ही उनकी जीविका का मुख्य साधन है।

चकबन्दी के समय सभी लोग अपनी–अपनी सुविधा देखते हैं और अच्छी जमीन जहाँ पर होती है वहाँ पर अपने खेत का चक (गाटा संख्या) बनवाने का भरपूर प्रयास करते हैं। स्वार्थी और बेईमान किस्म के लोगों की दृष्टि केवल अपने फायदे के लिए होती है। दूसरे लोगों के नुकसान एवं अहित से उनका कोई मतलब नहीं होता है। चकबंदी के समय स्वार्थी एवं चालाक स्वाभाव के किसान रिश्वत देकर अपने गनमाफिक अच्छी जमींन पर अपना चक बनवाने का काम करते हैं। चकबन्दी के नायब तहसीलदार ने जयराम वर्मा जी से मिलकर उनसे पूछा कि श्रीमानजी आपका चक कहाँ पर बना दूँ? जयराम वर्मा जी ने उत्तर दिया उस स्थान पर हमारा चक बनाइये जहाँ पर किसी किसान का नुकसान न हो। नायब तहसीलदार ने कहा श्रीमानजी जहाँ पर अच्छी खेती होती है। वहीं पर आपका गाटा संख्या बना दूँ। जयराम वर्मा जी ने कहा कि मैं समाज के कल्याण के लिए उनको सुख–सुविधा देने के लिए संघर्ष करता हूँ। उन्हीं लोगों के लिए राजनीति करता हूँ। इसलिए हमारे किसी काम से किसी भी व्यक्ति को दुःख न पहुँचे बल्कि दूसरों को सुख पहुँचाने का प्रयास करता हूँ। समाज के मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए बहुत कुछ त्याग एवं बलिदान करना पड़ता है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

इस श्लोक को सुनाकर टाण्डा तहसील के चकबन्दी नायब तहसीलदार के सारे प्रश्नों का उत्तर संक्षेप भाषा में आपने दे दिया।

जयराम वर्मा और पूर्व मुख्यमंत्री कमलापति त्रिपाठी

पंडित कमलापति त्रिपाठी जी और जयराम वर्मा जी पुराने साथी थे। आजादी के आन्दोलन में कमलापति त्रिपाठी जी और जयराम वर्मा जी का विशेष योगदान था। कमलापति त्रिपाठी जी उ०प्र० के मुख्यमंत्री तथा भारत सरकार में कई बार मंत्री रह चुके थे। काँग्रेस पार्टी में दो गुट चलता था, एक गुट का नेतृत्व डॉ० सम्पूर्णानन्द जी करते थे तो दूसरे गुट का नेतृत्व चन्द्रभानु गुप्ता। डॉ० सम्पूर्णानन्द जी की मृत्यु के उपरान्त इस गुट का नेतृत्व पं० कमलापति त्रिपाठी करने लगे थे। जयराम वर्मा जी से और कमलापति त्रिपाठी जी से अच्छा मित्रवत सम्बन्ध था। पं० कमलापति त्रिपाठी जी जब उ.प्र. सरकार में वित्त मंत्री थे तो उस समय जयराम वर्मा उपमंत्री वित्त तथा न्याय थे। वर्मा जी का विशेष सम्मान करते थे। वर्मा जी की ईमानदारी, अहिंसावादी व सात्विक विचार के कारण पण्डित कमलापति त्रिपाठी जी वर्मा जी को अपना बड़ा भाई मानते थे। जयराम वर्मा जी डॉ० सम्पूर्णानन्द जी के गुट के होने के कारण चन्द्रभानु गुप्ता वर्मा जी से असंन्तुष्ट रहते थे इसलिए चन्द्रभानु गुप्ता अपने मंत्रिमण्डल में वर्मा जी को उपमंत्री ही बनाते थे।

जयराम वर्मा जी के इकलौते पुत्र कमलापति वर्मा जी ने अपने पिता जयराम वर्मा जी से नौकरी प्राप्त करने के लिए सिफारिश करने को कहा तो जयराम वर्मा जी ने कहा कि मैं अपने साथियों से यह नहीं बताना चाहता कि हमारे अयोग्य बेटे को नौकरी दिला दीजिए अगर आपके (कमलापति वर्मा) के पास योग्यता है तो नौकरी अवश्य मिलेगी। कमलापति वर्मा जी ने काशी विद्यापीठ में सहायक प्रोफेसर के पद पर आवेदन किया था। इस पद के इण्टरव्यू की चयन कमेटी में पं० कमलापति त्रिपाठी जी भी थे। पं० कमलापति त्रिपाठी जी ने इण्टरव्यू के अभ्यर्थियों की सूची में कमलापति वर्मा पुत्र जयराम वर्मा का नाम देखा तो असमंजस में पड़ गये । जब कमलापति वर्मा का नाम इण्टरव्यू के लिए नाम पुकारा गया तो पंण्डित कमलापति त्रिपाठी जी ने कमलापति वर्मा से पूछा कि कॉग्रेस पार्टी के नेता एवं मंत्री जयराम वर्मा के पुत्र हैं या किसी दूसरे व्यक्ति का नाम जयराम वर्मा है। कमलापति वर्मा ने उत्तर दिया कि जो काँग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं मंत्री है उन्हीं जयराम वर्मा जी का ही पुत्र हूँ।

पं. कमलापति त्रिपाठी जी ने कहा कि लेकिन बड़े भाई जयराम वर्मा जी ने हमसे बताया तक नहीं कि हमारा बेटा भी काशी विद्यापीठ में इण्टरव्यू देने जा रहा है। पं०

कमलापति त्रिपाठी जी ने कमलापति वर्गा से कहा कि तुम्हें इण्टरव्यू देने की आवश्यकता नहीं है तुम इतने विद्वान व्यक्ति के पुत्र हो इसलिए तुम्हारा काशी विद्यापीठ में सहायक प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति हो गयी है और अपने घर जाकर बड़े भाई जयराम वर्मा जी से बता देना कि मैं इण्टरव्यू में पास हो गया हूँ, हमारा सहायक प्रोफेसर के पद पर सिलेक्शन हो गया है।

वर्ष 1973 के बाद चौधरी चरण सिंह जी से मतभेद होने के कारण जयराम वर्मा जी ने राजनीति में सक्रियता कम कर दिया था। कुछ दिनों के बाद जयराम वर्मा जी ने बी०के०डी० (भारतीय क्रान्ति दल) से त्याग–पत्र दे दिया। तत्कालीन मुख्यमंत्री पं० कमलापति त्रिपाठी जी ने कई बार जयराम वर्मा जी से निवेदन किया कि आप अपने पुराने घर कॉंग्रेस पार्टी में वापस चले आवें। जयराम वर्मा जी कोई न कोई बात का बहाना बनाकर बात को टाल देते थे। जयराम वर्मा जी के प्रभाव एवं जनाधार से पं कमलापति त्रिपाठी जी भलीभाँति परिचित थे इस कारण उनका प्रयास थ कि जयराम वर्मा जी के कॉंग्रेस पाटी में शामिल हो जाने से पार्टी को अधिक मजबूती प्रदान होगी। पं० कमलापति त्रिपाठी जी लगातार प्रयासरत थे कि वर्मा जी को कॉंग्रेस पार्टी की सदस्यता दिलाकर ही दम लूँगा ।तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी जी भी जयराम वर्मा जी की कॉंग्रेस पार्टी में वापसी चाहती थीं। श्रीमती इन्दिरा गाँधीजी ने कमलापति त्रिपाठी जी से कहा कि किसी भी प्रकार जयराम वर्मा जी को पुनः कॉंग्रेस पार्टी में वापसी कराकर पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराओ। वर्मा जी के पार्टी में आ जाने से कॉंग्रेस पार्टी को उ०प्र० में मजबूती प्रदान होगी। पं० कमलापति त्रिपाठी जी ने प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा जी को आश्वासन दिया कि बहुत जल्दी जयराम वर्मा जी को कॉग्रेस पार्टी में शामिल कर दूँगा।

पं. कमलापति त्रिपाठी जी के अथक प्रयास से उनकी गहरी दोस्ती के कारण जयराम वर्मा जी कॉंग्रेस पार्टी में शामिल हो गये। पं० कमलापति त्रिपाठी जी और जयराम वर्मा जी का अंतिम सांसों तक का साथ रहा है। पं० कमलापति त्रिपाठी जी वर्मा जी को बड़े भाई की तरह सम्मान एवं आदर करते थे। पं० कमलापति त्रिपाठी जी प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधीजी से वर्मा जी की ईमानदारी एवं गाँधीवादी विचारधारा की प्रशंसा भी करते थे।

वर्मा जी सामाजिक मान्यताओं के रक्षक तथा रूढ़ि बाद के विरोधी

हर धर्म में समाज को चलाने के लिए कुछ मान्यताएं व प्रथायें प्रचलित होती हैं। यह मान्यताएं धर्म के पैगम्बर, ऋषि–मुनि द्वारा स्थापित की जाती हैं। जिससे मनुष्य उन मान्यताओं (नियम) पर चलकर कर्तव्य एवं धर्म का पालन करते हुए जीवन व्यतीत करता हैं। माता–पिता, गुरु अपने से बड़े बुजुर्ग लोगों का आदर–सम्मान करना, अपने से छोटे को प्यार देना, दूसरे लोगों की भलाई करना, गरीब व असहाय लोगों की सहायता करना, गरीब कन्याओं की शादी करवाना, गरीब परिवार के बच्चों को शिक्षा दिलाने में सहायता करना आदि अनेक सामाजिक परम्परायें स्थापित हैं। वर्मा जी के छोटे भाई जगमोहन वर्मा का निधन हो गया । सनातन हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुरूप दाहसंस्कार होने के बाद तेरहवीं आदि कर्म करने का विधान बना हुआ है। तेरहवीं संस्कार में ब्राह्मणों के भोजन करने के बाद वर्मा जी से कहा गया कि आप ब्राह्मणों के जूठे पत्तल उठाकर फेंक दीजिए। इस बात पर कुछ लोगों ने कहा कि आप (जयराम वर्मा जी) रहने दीजिए हम लोग पत्तल उठाकर फेंक देते हैं। इस बात पर वर्मा जी ने कहा कि जो परम्परा जिस व्यक्ति के लिए बनी है। उसी को करनी चाहिए क्योंकि दाहसंस्कार हमने किया है, इसलिए पत्तल उठाने का कार्य हमें ही करना चाहिए।

वर्माजी ब्राह्मणों के द्वारा जूठे पत्तल फेंकने के बाद वहाँ उपस्थित लोगों ने कहा कि महाभारत काल में राजा युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया था। उस यज्ञ को सफल बनाने के लिए सब लोगों के लिए अलग–अलग कार्यों की जिम्मेदारी का बंटवारा कर दिया गया। अन्त में श्रीकृष्ण जी ने राजा युधिष्ठिर से पूछा कि हम इस यज्ञ में कौन से कार्य की जिम्मेदारी का निर्वहन करें। राजा युधिष्ठिर ने कहा कि भगवान सारे कार्यों को करने वाले सब लोग उपस्थित हैं, आप हम पाण्डवों के रक्षक हैं। आप केवल हमारा मार्गदर्शन करें। श्री श्रीकृष्णजी ने कहा कि सभी कार्यों की जिम्मेदारी सबने ले ली है केवल एक कार्य ही बाकी है और उस कार्य की मैं स्वयं जिम्मेदारी ले रहा हूँ। मैं इस यज्ञ में अतिथियों के भोजन करने के उपरान्त उनके जूठे पत्तलों को उठाकर फेंकने का कार्य करूँगा। पाँचों पाण्डवों ने हाथ जोड़कर निवेदन किया कि भगवन आप इतना छोटा कार्य क्यों करेंगे? आपके द्वारा इस कार्य को करने से हम पाण्डवों के यहाँ आपका अपमान होगा, इस पर श्रीकृष्ण जी ने कहा कि इस यज्ञ का सबसे पुण्य का कार्य यही है इस प्रसंग को जयराम

वर्मा जी ने सुनाकर वहां उपस्थित सभी लोगों की संतुष्ट एवं प्रसन्न कर दिया। वर्मा जी रूढ़िवाद के प्रबल विरोधी थे। वे समाज में व्याप्त छुआछूत, बाल–विवाह प्रथा, दहेज प्रथा, अशिक्षा, अन्धविश्वास, आदि अनेक बुराइयों के विरोधी थे। इन बुराइयों को दूर करने के लिए वर्मा जी ने अथक प्रयास किया था। ''समाज सुधार'' नामक संस्था का गठन करके पूरे प्रदेश में उपरोक्त बुराइयों को दूर करने के लिए जनजागरण अभियान चलाया था वर्मा जी कहते थे कि यह अपना है, यह पराया है, इस प्रकार की गणना करना संकुचित हृदय वाले व्यक्ति की सोच है, जो लोग उदारचित्त वाले होते हैं, उनके लिए आपने यह सारा संसार ही अपने परिवार के समान है। वर्मा जी ने इसी उत्तम विचार को आधारभूत मानकर पूरा जीवन व्यतीत किया था समाज की उन्नति एवं उसके आर्थिक विकास के लिए निरंतर चिंतित रहते थे। गलत परम्पराओं का विरोध करते थे। सही चीजों का समर्थन करते थे।

वर्मा जी के पुत्र कमलापति वर्मा का पी.जी.आई. चण्डीगढ़ में गुर्दा का प्रत्यारोपण

वर्मा जी के पुत्र कमलापति वर्मा जी के गुर्दे का इलाज बहुत दिनों से चल रहा था। उनका स्वास्थ्य दिनो दिन गिरता जा रहा था। जयराम वर्मा जी ने अपने पुत्र कमलापति वर्मा के गुर्दे के अच्छे इलाज के लिए पी०जी०आई०, चण्डीगढ़ में भर्ती कराया। पी०जी०आई०, चण्डीगढ़ में कमलापति वर्मा का जांचोंपरान्त पता लगा कि उनका गुर्दा काम करना बन्द कर दिया है। कमलापति वर्मा जी को स्वस्थ्य रखने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति का गुर्दा प्रत्यारोपण करना पड़ेगा। जयराम वर्मा जी ने अपने बेटे के लिए गुर्दा की व्यवस्था करने के लिए समाचार–पत्रों में विज्ञापन के माध्यम से अपने शुभचिन्तकों एवं समर्थकों को सूचित किया कि गुर्दा दानदाता की आवश्यकता है और समाचार–पत्र के विज्ञापन में यह भी बात प्रचारित की गयी कि एक गुर्दा देने से उस व्यक्ति के स्वास्थ्य पर कोई. बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। गुर्दा दान देने वाला व्यक्ति पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेगा।

ऐसा पी०जी०आई०, चण्डीगढ़ के वरिष्ठ सर्जन एवं वरिष्ठ फिजीशियन व डॉक्टरों का कहना है। यह समाचार पूरे प्रदेश में प्रचारित हो गया। कमलापति वर्मा के गुर्दा खराब होने के समाचार को सुनकर वर्मा जी के शुभचिन्तकों एवं समर्थकों को गहरा दुख पहुँचा। इस दुख की घड़ी में वर्मा जी को चाहने वालों की भीड़ लग गई।

आपत्सु मित्रं जानीयाद् युद्धे शूरमृणेशुचिम्।
भार्यां क्षीणेषु वित्तेषु व्यसनेषु च बान्धवान्।।

भावार्थ :— आपत्तिकाल में मित्र की, युद्धकाल में वीर की, ऋण देने व लेने के व्यवहार में सत्यता की, निर्धनावस्था में पत्नी की तथा संकटकाल में बान्धवों की परीक्षा होती है।

पी०जी०आई०, चण्डीगढ़ के डॉक्टरों ने कमलापति वर्मा जी को डायलिसिस कर रखा था उनके स्वास्थ में लगातार सुधार हो रहा था। फैजाबाद जिला चिकित्सालय में खून की जाँच कराने वालों की भीड़ लग गई। जिला चिकित्सालय में खून की जाँच कराने वालों की भीड़ को देखकर अस्पताल के डॉक्टर एवं कर्मचारी परेशान हो गये थे । उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी ने स्वास्थ्य मंत्री को निर्देशित किया था कि जयराम वर्मा के बेटे के लिए जो व्यक्ति खून जाँच कराने के लिए जिला चिकित्सालय में आये वह व्यक्ति खून जाँचों परान्त ही वापस जाये। स्वास्थ्य मंत्री ने सभी मुख्य चिकित्साधिकारियों को निर्देश दिया था कि जो भी व्यक्ति जिला चिकित्सालय में जयराम वर्मा के पुत्र को गुर्दा देने के लिए खून जाँच कराना चाहे तो उसका तुरन्त खून जाँच कर लिया जाय। स्वास्थ्य मंत्री के निर्देश के अनुपालन में जिला चिकित्सालयों में एक डॉक्टर की स्पेशल ड्यूटी लगा दी गई थी।

काफी संख्या में लोगों ने अपने खून की जाँच कराया लेकिन उनका खून गुर्दा देने के लिए उपयुक्त नहीं हो रहा था। जयराम वर्मा जी की चिन्ताएं बढ़ने लगीं। उन्होंने अपने खास लोगों को पत्र भेजकर गुर्दा के दान दाताओं को खोजने का कार्य सौंपा। कुछ दिनों के पश्चात् कुछ लोगों के खून जांचोपरान्त गुर्दा दान करने में उपयुक्त पाये गये। जिसमें से जयराम वर्मा जी के चचेरे भाई रामनयन वर्मा के पुत्र ठाकुर प्रसाद वर्मा तथा वर्मा जी के चचेरे भाई पाटनदीन वर्मा के पुत्र बाबूराम वर्मा के दामाद राम अशीष वर्मा थे। राम अशीष वर्मा बापू स्मारक इंटर कालेज, नाऊसाण्डा, केदारनगर, फैजाबाद (वर्तमान में अम्बेडकरनगर) में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत थे। ठाकुर प्रसाद वर्मा व रामअशीष वर्मा तथा अन्य लोग पी०जी०आई० चण्डीगढ़ पहुँचे। पी०जी०आई० चण्डीगढ़ में इन लोगों की फिर से नये सिरे से जाँच की गई। जिसमें राम अशीष वर्मा जी का खून गुर्दा दान करने के लिए ठाकुर प्रसाद वर्मा के खून से ज्यादा उपयुक्त पाया गया।

पी0जी0आई0, चण्डीगढ़ के डाक्टरों ने रामअशीष वर्मा को गुर्दा प्रत्यारोपण के लिए अस्पताल में भर्ती कर लिया। पी०जी०आई०, चण्डीगढ़ के डॉक्टर चुग (मेडिसिन) ने कमलापति वर्मा तथा रामअशीष वर्मा के खून में प्रोटीन की मात्रा में कुछ कमी के कारण उसकी पूर्ति के लिए प्रतिदिन सुबह–शाम एक–एक अण्डा खाने की सलाह दिया। इस बात की जानकारी जब जयराम वर्मा जी को हुई तो उन्होंने डॉक्टर चुग (मेडिसिन) के वेम्बर में जाकर उनसे मुलाकात की और डॉक्टर चुग (मेडिसिन) से पूछा कि प्रोटीन की कमी की पूर्ति के लिए अण्डा खाने के अलावा कोई दूसरा विकल्प है ? तो डॉ० चुग ने बताया कि अगर 100 ग्राम पनीर सुबह–शाम खिलाया जाय तो भी प्रोटीन की पूर्ति हो सकती है। वर्मा जी जो चाहते थे उसका विकल्प उन्हें मिल चुका था। क्योंकि वर्मा जी का पूरा परिवार शुद्ध शाकाहारी था। इस कारण अण्डा खाने की बात सुनकर वे थोड़ा असहज हो गये थे।

कुछ दिनों के पश्चात् दिनांक – 27.10.1980 को कमलापति वर्मा जी का गुर्दा कमलापति वर्मा जी को प्रत्यारोपित कर दिया गया। कमलापति वर्मा जी को देखने के लिए हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री चौ० श्री देवीलाल, उ०प्र० के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह, राज्यसभा के उपसभापति, श्री श्यामलाल यादव, पूर्व मुख्यमंत्री श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा, पूर्व प्रधानमंत्री चौ0 चरण सिंह, उ०प्र० कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री लक्ष्मीशंकर यादव, पूर्व मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी, तत्कालीन रेलमंत्री श्री कमलापति त्रिपाठी, मंत्री चौ० नरेन्द्र सिंह, तत्कालीन केन्द्रीय राज्य मंत्री रामपूजन पटेल, रामवचन यादव, राज्यसभा सदस्य महादेवप्रसाद वर्मा, राम केवल वर्मा, प्रकाश चन्द्र वर्मा आदि दिग्गज नेताओं ने पी०जी०आई०, चण्डीगढ़ पहुँचकर उन्हें पूर्णरूप से स्वस्थ होने की शुभकामना दी। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी जी समयाभाव के कारण नहीं पहुँच पायी थीं।

उन्होंने अपने मंत्रिमण्डल के वरिष्ठ मंत्री श्री कमलापति त्रिपाठी को एक पत्र सौंपकर जयराम वर्मा जी के पुत्र कमलापति वर्मा जी के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए पूर्ण रूप से स्वस्थ होने की शुभकामना देते हुए अपना शुभ संदेश भेजा था। हरियाणा के मुख्यमंत्री चौ० श्री देवीलाल के मंत्रिमण्डल के अनेक मंत्री भी पी०जी०आई०, चण्डीगढ़ में आकर कमलापति वर्मा जी के स्वास्थ्य का हालचाल लिया। कमलापति वर्मा जी का

आपरेशन वरिष्ठ सर्जन डॉ० आर०बी०एस० यादव, पी०जी०आई०, चण्डीगढ़ ने किया था। वहा पर जयराम वर्मा के पीआरओ राम केवल वर्मा, पीसी वर्मा, अनिल कुमार वर्मा भी मौजूद रहे। किडनी लगने के बाद राम केवल वर्मा व अनिल वर्मा लखनऊ वापस आये।

कमलापति वर्मा जी को देखने के लिए, फैजाबाद– अम्बेडकरनगर, बस्ती, सुल्तानपुर, बाराबंकी, लखनऊ आदि अनेक जिलों से अधिक संख्या में लोग पी०जी०आई०, चण्डीगढ़ पहुँचे थे। उन सभी लोगों को रुकने की व्यवस्था हरियाणा के मुख्यमंत्री चौ० श्री देवीलाल जी ने गेस्ट हाउस चण्डीगढ़ में किया था जयराम वर्मा जी की दिनचर्या के अनुसार पी०जी०आई०, चण्डीगढ़ में भी प्रतिदिन चरखा चलाकर सूत कातने का कार्य करते थे। वर्मा जी नियमपूर्वक प्रतिदिन चरखा चलाकर सूत कातने का कार्य करते थे। पी०जी०आई०, चण्डीगढ़ में देखने वाले लोगों को आश्चर्य होता था कि इस संकट की घड़ी में भी वर्मा जी कैसे चरखा चला पाते हैं? इसी प्रश्न को कुछ लोगों ने वर्मा जी से पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि सुख–दुख, लाभ–हानि, जय–पराजय, यश–अपयश ये सब जीवन में आते–जाते रहते हैं, यह आपके ऊपर निर्भर है कि आप उसका किस प्रकार से निर्वहन करते हैं। वर्मा जी एक कर्मयोगी सन्त थे। संकट के समय में भी सामान्य तरीके से रहकर संकट का सामना करते थे।

जयराम वर्मा जी का महाप्रयाण

श्री जयराम वर्मा जी विद्यार्थी जीवन से ही समाज के गरीबों, दीन–दुःखियों, दलितों– महिलाओं तथा कमजोर वर्गों की दीन–दशा को देखकर उनके मन में पीड़ा होती थी। आपने शोषित संघ बनाकर सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए समाज सुधार का कार्य प्रारम्भ किया तथा जीवन– पर्यन्त इस कार्य को आगे बढ़ाते रहे। जयराम वर्मा जी ने सम्पूर्ण राष्ट्रीय भावनाओं को अपना विषय बनाया था सत्य, अहिंसा, धार्मिक आचरण, समानता तथा समाज की सेवा भावना उनकी विचारधारा थी। आप भारत में निवास करने वाली सभी जातियों, सभी वर्गों के लोगों और सभी सम्प्रदायों को समानाधिकार की बात करते थे। विश्व – बन्धुत्व, विश्व प्रेम, उदारता, त्याग, समन्वय भावना, प्राणिमात्र के लिए मंगलकामना, बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा मानवतावाद के गुण उनमें समाहित थे तथा भौतिकवाद से दूर थे। वर्मा जी कहते थे कि सौम्य, शान्त और तनाव रहित जीवन जीना सभी प्राणियों का जन्मसिद्ध अधिकार है। आप शिक्षा एवं

सामाजिक विकास के अजेय योद्धा थे। विधानसभा और लोकसभा में जयराम वर्मा जी ने दलितों, गरीबों, आदिवासियों, दस्तकारों, किसानों, पिछड़ों तथा महिलाओं के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए अनवरत संघर्ष किया। कृषि क्षेत्र में विकास के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका की वैज्ञानिक तकनीकी, उन्नतशील बीज, कीटनाशक दवाओं, उर्वरक, सिंचाई के लिए ट्यूबेल, पम्पिंग सेट, नहर, जुताई के लिए ट्रैक्टर आदि आधुनिकश साधन तथा कृषि उपज का लाभकारी मूल्य दिलाने के लिए लगातार संघर्ष करते रहे। किसानों को धरती का भगवान एवं अन्नदाता कहते थे।

आजादी प्राप्त होने के पहले समाज में विकास लाने के लिए अनेकों विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की स्थापना करवाकर समाज के सभी लोगों के लिए शिक्षा का द्वार खोलकर शिक्षित बनाने का महत्वपूर्ण कार्य करके देश एवं प्रदेश में नवयुवकों एवं नवयुवतियों को सेवा करने का सुअवसर प्रदान किया। आप समाज को स्वावलम्बी एवं कर्तव्यनिष्ठ बनाने के लिए प्रतिदिन चरखा चलाकर सूत कातते थे और समाज को आत्मनिर्भर, एवं स्वावलम्बी बनाने का संदेश दिया। सच्चाई एवं ईमानदारी तथा अहिंसावादी रास्ते पर जीवन पर्यन्त चलकर संदेश देने का प्रयास किया कि सच्चाई एवं ईमानदारी के बल पर जीवन यापन करके स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन जिया जा सकता है। सादा जीवन उच्च विचार उनका अस्त्र था। धैर्य, गम्भीरता एवं साहस उनका आत्मबल था। जन–जन का प्यार, स्नेह एवं जनता का जनसमर्थन उनकी भुजाएं थीं। दीन–दुखियों, गरीबों, दलितों, दस्तकारों, आदिवासियों, किसानों, महिलाओं एवं छात्रों के लिए संघर्ष करना उनका शौर्य था महान व्यक्तियों, ऋषियों, ज्ञानियों, बुद्धिजीवियों एवं ईश्वर के प्रति श्रद्धापूर्वक नतमस्तक होना उनका स्वभाव था। धर्म एवं अध्यात्म से जुड़े लोगों को आप हमेशा सम्मान देते थे। विधानसभा एवं लोकसभा को अपने दीर्घकालीन राजनीतिक अनुभवों एवं ज्ञान से प्रकाशित करते रहे। 13 जनवरी की रात में श्री वर्मा को बलरामपुर अस्पताल में भर्ती कराया गया। एम्बुलेंस में उनके पीआरओ श्री रामकेवल वर्मा साथ में थे। बाद में पी.सी. वर्मा भी पहुँचे।

देश एवं समाज की सेवा करते हुए इस महान कर्मयोगी योद्धा ने 13 जनवरी 1987 को बलरामपुर हॉस्पिटल, लखनऊ में रात्रि के लगभग 9 बजे अपने प्राण त्याग कर स्वर्गवासी हो गये। और अपनी यश–कीर्ति इस धरती पर छोड़ गये, जयराम वर्मा जी ने

मानवता की सेवा में कभी विश्राम नहीं किया। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन ने उनके निधन का समाचार प्रसारित किया । मृत्यु का समाचार जंगल में आग की तरह समूचे उ०प्र० और सारे राष्ट्र में फैल गया। प्रदेश के कोने–कोने से विशाल जनसमूह उनके अन्तिम दर्शन के लिए, फैजाबाद पहुँच गया।

जयराम वर्मा जी महाप्रयाण 13.01.1987

श्री जय राम वर्मा जी दिनांक 13.01.1987 को लखनऊ सार्वजनिक उपक्रम एवं संयुक्त निगम समिति की बैठक में हिस्सा लेने आये थे। उस समय आप समिति के अध्यक्ष थे। विद्युत बोर्ड के मसलों की महत्वपूर्ण बैठक में दो बजे तक अध्यक्षता की। उसी बीच अपने निजी सचिव श्री विजय नारायण सिंह द्वारा मुझे (श्री राम केवल वर्मा) को बुलाया और कहा कि डा. देविका नगा प्रोफेसर न्यरोलॉजी ने 3 माह बाद दिखाने के लिये कहा था, और 5 माह बीत गये और दिखाया नहीं गया। मैंने शाम को दिखाने की बात की। शाम 5 बजे जब मैं बंगले पर पहुंचा तो देखा कि चपरासी बाबू जी के हाथ का मालिश कर रहा था, संयोगवश उस दिन कालीदास मार्ग पर बंगले नम्बर 10 के आगे के सभी बंगलों के टेलीफोन खराब थे। उस समय मोबाइल की प्रथा नहीं थी चपरासी ने यह भी बताया कि आधा घण्टे पहले साहब कुछे देर के लिये बेहोश हो गये थे। उनकी सरकारी गाड़ी को दूसरे चेयरमैन श्री सच्चिदानन्द बाजपेई कही लेकर चले गये थे, मैंने पड़ोसी बंगले के मंत्री श्री श्याम सूरत उपाध्याय से एक घण्टे के लिये गाड़ी मांगी और बाबू जी की अचानक बीमारी की बात बतायी लेकिन उन्होंने गाड़ी देने से मना कर दिया। चूंकि उन दिनों मोबाइल की सुविधा नहीं थी इसलिये मुझे वहां से बहुत दूर पी.सी.ओ. जाकर फोन करना पड़ता था, अन्त में मैने बलरामपुर अस्पताल के वरिष्ट डाक्टर डा. वीरेन्द्र बहादुर सिंह को जो मेरे बहुत खाश थे, को फोन से तुरन्त देखने हेतु बुलाया। उन्होंने तुरन्त ही वरिष्ठ अधीक्षक डा. जी.वी. सक्सेना को लेकर आये और बाबू जी को देखा और मुझे अपने साथ बलरामपुर अस्पताल ले जाकर दवा उपलब्ध करायी, दवा खिलाने के बाद लगभग 9 बजे रात्रि में वे पुनः कुछ क्षणों के लिये बेहोश हो गये, तब मैंने कृषि मंत्री चौ. नरेन्द्र सिंह चौधरी को फोन कर बाबू जी के अचानक बेहोश हो जाने की सूचना दी। वह पंडित उमा शंकर दीक्षित के पुत्र एवं श्री शीला दीक्षित के पति श्री विनोद दीक्षित, जो वित्त विभाग के सचिव थे, के अन्तेष्ठी में भाग लेने दिल्ली जाने के लिए कार में बैठ गये थे, को सूचित किया। श्री

चौधरी ने मेरे अनुरोध पर अपना कार्यक्रम रद्द कर तुरन्त बंगले आये और डा. एस.सी. राय जो प्रमुख अधीक्षक थे को बुलवाने के लिये कहा। मैंने उन्हें बताया कि मेरे मित्र श्री प्रकाश चन्द्र वर्मा जी स्टैडिंग काउसिल हाईकोर्ट है राय साहब को लेने के लिये गये हुये है, थोडी देर में डा० राय साहब एम्बुलेन्स सहित बंगले आ गये और बाबू जी को देखा चौधरी नरेन्द्र सिंह ने डा० एस०सी० राय से परामर्श करने के बाद यह निर्णय लिया कि इनको तुरन्त बलरामपुर अस्पताल में भर्ती करा दिया जाय। मैं बाबू जी के साथ एम्बुलेन्स में बैठा मुझे महसूस हुआ कि रास्ते में बाबू जी से को पुनः दिल के दौरे का झटका लग गया है। जैसे ही बलरामपुर अस्पताल में ई०सी०जी० लगाना शुरू हुआ डा राय ने मुझसे कहा कि पी.आर.ओ. साहब मुझे बहुत दुख है कि मैं आप के मंत्री जी को बचा नहीं पाया। तो उसी समय रात्रि 11.30 बजे बाबू जी ने अपना शरीर त्याग दिया। मैं वही से सीधे चौ० नरेन्द्र सिंह के बंगले पर पहुंचा और पूर्व राज्यमंत्री श्री महिपाल सिंह शास्त्री के साथ बंगले आया और आगे का प्रोग्राम तय किया, चौधरी साहब ने मुझे निर्देश दिया कि तुम मेरी गाड़ी ले जाकर मुख्यमंत्री श्री वीर बहादुर सिंह के बंगले जाकर सभी सम्बन्धित लोगों को सूचित कर दो और मैंने ऐसा ही किया । दिनांक 14.01.1987 प्रातः महामहिम श्री राज्यपाल के सचिव, वित्त एवं नियोजन राज्यमंत्री ओम प्रकाश रिछारिया, श्री माता प्रसाद – सचिव नियोजन, सहित तमाम अधिकारियों, मंत्रियों एवं विधायकों ने बाबू जी का श्रद्धा सुमन, अर्पित किये, फिर बाबू जी की अस्थियों को लेकर राज्यमंत्री नसीर अहमद अंसारी, रामकेवल वर्मा, उ०प्र० कांग्रेस कमेटी के मुख्यालय ले गये और वही से फैजाबाद होते हुये उनके गांव ले गये और दि० 15.01.1987 को गांव से पुनः अयोध्या ले आये और तत्कालीन पूर्व कृषि मंत्री चौ० नरेन्द्र सिंह, नसीर अहमद अंसारी – राज्यमंत्री श्री इन्दु कुमार पाण्डेय जिलाधिकारी, श्री कर्मवीर सिंह एस०एस०पी० फैजाबाद सहित जिले के सभी पार्टियों के नेतागण जिले के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित हजारों लोगों की उपस्थिति में उनका राष्ट्रीय सम्मान के साथ दाह–संस्कार किया गया। उनके पौत्र श्री राकेश वर्मा ने उनका अन्तिम संस्कार किया। इस अवसर पर उनके पी.आर.ओ. राम केवल वर्मा, पी.सी. वर्मा, दामाद श्री परसनाथ चौधरी उपस्थित थे।

3 मार्च 1987 उत्तर प्रदेश विधानसभा के वर्तमान विधानसभा सदस्य एवं पूर्व मंत्री श्री जयराम वर्मा के निधन पर शोकोद्‌गार मुख्यमंत्री (वीरबहादुर सिंह)

मान्यवर, बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि उत्तर प्रदेश, विधान सभा के सदस्य एवं पूर्व मंत्री तथा भूतपूर्व सांसद श्री जयराम वर्मा जी का निधन दिनाँक 13 जनवरी 1987 की रात्रि को लखनऊ के बलरामपुर अस्पताल में हो गया। वे लगभग 83 वर्ष के थे। श्री वर्मा जी का जन्म दिनाँक 4 फरवरी, 1904 को जिला फैजाबाद के एक ग्राम में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से गणित में स्नातकोत्तर उपाधि प्रदान की थी। वे 1946 में प्रथम बार उत्तर प्रदेश विधानसभा सदस्य निर्वाचित हुए। 1952, 1967, 1962 एवं 1967 के सामान्य निर्वाचनों में कॉंग्रेस के टिकट पर लगातार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित होते रहे। 1970 में भा०क्रा० दल के टिकट पर उपनिर्वाचन में वे पुनः निर्वाचित हुए और रामनारायण त्रिपाठी पूर्व उपाध्यक्ष विधान सभा को करीब 7000 मतो से हरा दी। 1980 में कॉंग्रेस से लोक सभा एवं 1985 के सामान्य निर्वाचन मे पुनः जिला फैजाबाद के टाण्डा विधानसभा के कांग्रेस दल के सदस्य बने। अपनी लम्बी राजनीतिक अवधि में वे अनेक बार विभिन्न विभागों के उपमंत्री एवं मंत्री बनाये गये।

विधानसभा की लोक लेखा समिति तथा सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम समिति के सदस्य रहे निधन के समय भी वे सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम समिति के सभापति थे वे व्यक्तिगत सत्याग्रह एवं भारत छोड़ो आन्दोलन के अंर्तगत कई बार जेल गये वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी थे। उन्होंने देश की आजादी और फैजाबाद की उन्नति के लिए, वहाँ के लोगों की उन्नति उठाने के लिए, गरीबों तथा हरिजनों को उठाने के लिए बहुत से ऐसे कार्य किये, जिससे वे शुभचिन्तक बन गये। वे किसानों के बीच में हमेशा जाते थे और पिछड़े वर्ग के लोगों की उन्नति के लिए बहुत प्रयास किया। उनके न रहने से फैजाबाद ही नहीं, अपितु उत्तर प्रदेश ने एक वयोवृद्ध व कुशल राष्ट्रवादी राजनीतिज्ञ खो दिया।

मानयवर! मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि मेरी, मेरे दल की ओर से इस सदन की सम्वेदना शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री मुलायम सिंह यादव पूर्व मुख्यमंत्री

स्व० श्री जयराम वर्मा जी इस प्रदेश के गरीब, पिछड़े तथा किसानों के हमदर्द नेताओं में से थे। उन्होंने जीवन पर्यन्त नैतिक मूल्यों और सादगी से जीवन जिया वह हमारे देश के ईमानदार नेताओं में गिने जाते थे। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि जिस दिन उनका निधन हुआ उस दिन भी उन्होंने कमेटी के चेयमैन होने के नाते कमेटी की बैठक में हिस्सा लिया। जब वह बीमारी की हालत में बलरामपुर अस्पताल गये तो 2 बजे तक उनके साथ उनके पीआरओ रामकेवल वर्मा साथ में थे। वे श्री वर्मा के एम्बुलेंस में बैठे थे। श्री नरेन्द्र सिंह को लेकर को आये और चौधरी साहब के निर्देश पर उनकी गाड़ी से मुख्यमंत्री के बंगले जाकर सभी को संदेश दिया। आज यह बात सामने आई कि इतनी बार वह विधानसभा के सदस्य रहे विभिन्न उच्च पदों पर रहे, किन्तु उनके मकान और परिवार को देख लें तो यह अवश्य होगा कि उन्हें सम्पत्ति के प्रति कोई मोह नहीं था। देश की सच्ची महसूस सेवा वही कर सकता है, जिसको संतान और सम्पत्ति का मोह न हो।

मैं उनके प्रति अपने व अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और आपसे प्रार्थना करता हूँ कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी सम्वेदना भेजने की कृपा करें।

कुँवर रेवती रमण सिंह

मान्यवर, श्री जयराम वर्मा जी भी हमारे बीच नहीं रहे। वह एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, एक योद्धा थे, और इतना ही नहीं, वर्मा जी में ऐसे गुण थे कि इतनी आयु होने पर भी लगातार अनेकों बार वे इस विधानसभा के सदस्य हुए, संसद के भी सदस्य चुने गये मान्यवर, वर्मा जी ने गरीबों एवं पिछड़ी जातियों के लिए निरन्तर संघर्ष किया। उनके लिए सतत् प्रयास किया। उन्होंने अपने जीवन को सादगी का प्रतीक, बनाकर रखा। मंत्री होने के बाद भी ये सुख–वैभव से सर्वथा दूर थे और निर्लिप्त भाव से उन्होंने जनता की सेवा की आज उनके न रहने से न केवल गरीबों एवं पिछड़ी जातियों को या केवल किसी एक वर्ग को, बल्कि पूरे प्रदेश को एक ऐसे अनुभवी, कुशल और ईमानदार व्यक्ति की कमी सदैव अखरती रहेगी। मान्यवर, मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से श्री वर्मा जी के शोक संतप्त परिवार को संवेदनाएं देते हुए आपसे आग्रह करता हूँ कि इनको उनके परिवार तक पहुँचाने की कृपा करें।

श्री कल्याण सिंह, पूर्व मुख्यमंत्री

आदरणीय श्री जयराम वर्मा जी भी हमारे बीच में नहीं रहे। वे सादा जीवन उच्च विचार की प्रतिमूर्ति थे। उत्तर प्रदेश विधानसभा की सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम समिति के सभापति के पद पर कार्यरत थे। मुझे उनके साथ कार्य करने का सौभाग्य उस समिति में मिला था जनता की गाढ़ी कमाई के एक–एक पैसे के प्रति कितनी पीड़ा उनमें रहती थी. यह हमें समिति की कार्यवाहियों में देखने को मिला पिछड़ों के प्रति, दलितों के प्रति, सामाजिक दृष्टि से, शैक्षिक दृष्टि से जिनको कोई पूछने वाला नहीं है, ऐसे लोगों के प्रति उनके मन में एक असीम दर्द था एक पीड़ा थी और समय–समय पर वह उस पीड़ा को व्यक्त भी करते रहते थे। मुझे अच्छी तरह से याद है जब मिर्जापुर ओबरा बिजली परियोजना के निरीक्षण के सम्बंध में हम लोग समिति के साथ गये थे, वहां प्रभावित किसानों से सम्बंन्धित दो आवश्यक सवालों पर वह लगातार दो घंटे विचार–विमर्श करते रहे। एक, यह कि जिन किसानों की जमीन अधिगृहीत की गयी, उनको क्षतिपूर्ति दी गयी अथवा नहीं। दूसरे, उन प्रभावित किसानों के लड़को को नौकरी में लिया गया या नहीं।

दो घंटे लगातार इस सवाल पर विचार–विमर्श से यह प्रकट होता है कि एक–एक व्यक्ति के लिए कितना दर्द था उनमें मान्यवर, इस प्रकार के अच्छे आदर्श रखने वाले, अनुकरणीय आदर्श रखने वाले, हमारे बीच से उठते चले जा रहे हैं। यह एक ऐसी क्षति है, जो अपूर्णनीय है। यह केवल किसी एक पार्टी की क्षति नहीं है किसी एक प्रदेश की क्षति नहीं है मैं इसे पूरे देश की क्षति मानता हूँ। वर्तमान पीढ़ी की क्षति मानता हूँ माननीय जयराम वर्गा जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे यह प्रार्थना करता हूँ कि मेरी ओर से तथा मेरे दल की ओर से उनके शोक–संतप्त परिवार तक हमारी शोक संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री मित्रसेन यादव, पूर्व एम.पी. फैजाबाद

हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री जयराम वर्मा जी आज हमारे बीच में नहीं है। वह बड़े ही ईमानदार और खादी के प्रति उनका अटूट प्रेम था। महात्मा गाँधीजी में उनका अटूट विश्वास था जीवन के प्रति सादगी के लिए वे हम सब के लिए प्रेरणा स्रोत हैं वह एक ऐसे व्यक्ति थे। जिन्होंने अपने और अपने परिवार के लिए कुछ नहीं कमाया एक कुटिया में रहकर उन्होंने अपने समूचे जीवन का निर्वहन किया। वह एक ऐसे तपस्वी

व्यक्ति थे जिन्होंने हमेशा अपने संघर्षशील जीवन के कारण किसानों के हित की बात सोची। उनके निधन से निश्चय ही फैजाबाद को अपूर्णनीय क्षति हुई है। जिन–जिन क्षेत्रों में उन्होंने कार्य किया है वह अद्वितीय है। वह हम सब लोगों के लिए प्रेरणास्रोत है ऐसे महान व्यक्ति के चले जाने से हमें बहुत दुःख है मेरा कहना तो यह है कि मरते दम तक भी वह अपना चरखा अपने साथ लिये हुए जीवन भर स्वयं सूत कातकर कपड़े पहनते थे आज वे हम लोगों के बीच में नहीं है। इसलिए मान्यवर, आपसे अनुरोध है कि उनके शोक सन्तप्त परिवार तक मेरी और से ओर मेरे दल की ओर से ये संवेदना के भाव पहुँचाने की कृपा करें।

श्री कौशिक रमाशंकर, पूर्व मंत्री

माननीय स्व० श्री जयराम वर्मा जी के सादगीपूर्ण जीवन, ईमानदारी और गांधीवादी चरित्र के विषय में जितना कहा जाय वह थोड़ा है। वे एक महान नेता थे उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आगरी निवेदन करता हूँ कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी ये संवेदना के भाव भेजने की कृपा करेंगे।

श्री राजकिशोर सिंह

माननीय जयराम वर्मा जी आज हमारे बीच नहीं रहे। कौन जानता था कि वे हमारे बीच से छीन लिये जायेंगे। जाना तो सभी को है लेकिन जब ऐसी महान विभूतियाँ उठ जाती है तो अखरता है। वह प्रदेश के गाँधी कहे जाते थे और 50 वर्षों तक राजनीति में छाये रहे। वे अपने जीवन भर गाँधीजी के बताये रास्ते पर चले अन्तिम दम तक उन्होंने चरखा काता और चरखा कातते हुए ही अपने अन्तिम सांस छोड़ी। वे हरिजनों व गरीबों के मसीहा थे। अपनी अन्तिम समय तक हरिजनों की और गरीबों की सेवा करने में कोई कोताही नहीं की थी। अन्तिम समय में जब उन्हें देखा था तो आश्चर्य हो रहा था कि कैसे वे इतनी उम्र में काम करते हैं, लेकिन वे एक साहसी पुरुष थे। श्री नारायणदत्त तिवारी के मंत्रिमण्डल में जब उन्हें लिया गया था तो आश्चर्य हो रहा था कि किस तरह से इतनी उम्र के बावजूद वे नियोजन का कार्य सम्भाल पायेंगे लेकिन जितने दिन वे मंत्रिमण्डल में रहे बड़ी कर्मठता के साथ उन्होंने अपने पद के दायित्वों का निर्वहन किया। उनके निधन से प्रदेश की राजनीति में एक बहुत बड़ा स्थान रिक्त हो गया है। मैं अपनी और अपनी पार्टी की तरफ से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और आपसे आग्रह करता हूँ कि मेरी और

मेरी पार्टी की तरफ से उनके परिवार को शोक–संवेदना संदेश भेजने का कष्ट करें।

श्री रामनरेश यादव, पूर्व मुख्यमंत्री

श्री जयराम वर्मा जी के निधन से आज प्रदेश शोकाकुल है हमारे पडोसी होने के नाते मेरा उनसे गहरा सम्बन्ध रहा है। वे सामाजिक कुरीतियों के सम्बन्ध में सदैव जागरूक रहे और उन्होंने इस बुराई को दूर करने के लिए शोषित संघ के नाम पर आन्दोलन चलाया था सामाजिक विषमता की दीवार को ढहाने के लिए यह सारे काम किये थे। समाज क लिए उन्होंने जो किया वह उनकी अनुपम देन है समाज के लिए शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण संस्थानों की स्थापना का उनका महत्वपूर्ण प्रयास था । महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलकर स्वाधीनता संग्राम के दिनों में चरों को प्रतीक मानकर जो वे चले तो देश को स्वाधीन बनाने के बाद भी वे सदैव बापू के चरण चिन्हों पर चलते रहे। वर्मा जी को भी चर्चे से विशेष प्रेम था।

श्री वर्मा जी अपने पहनने के वस्त्र के लिए सूत स्वयं ही चखें से, तैयार करते थे। ऐसा उदाहरण कम ही देखने को मिलेगा। वह इसी के द्वारा सामाजिक विषमताओं को दूर करना चाहते थे और चाहते थे कि किसी तरह स्वच्छ तथा नये समाज का निर्माण किया जा सके। मैं चाहता हूँ कि मेरी भावनाओं को आप उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री देवकुमार यादव

मान्यवर, माननीय जयराम वर्मा जी के बारे में बहुत कुछ कहा जा चुका है। वह एक ऐसे प्रतीक थे, जो गाँधीजी के विचारों और उनके जीवन के आदर्शों के प्रति आस्था रखते थे तथा गांधी जी के विचारों के मूल्यों का उन्होंने अपने जीवन में बहुत हद तक अपनाया और उनका साकार किया। वह जीवन भर गाँधीजी के विचारों के प्रति और उनके आदर्शों के प्रति संघर्ष करते रहे। इन शब्दों के साथ में अपनी ओर से और अपने दल की ओर से माननीय वर्मा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ कि मेरी शोक–संवेदनायें उनके परिवार तक पहुँचाने की कृपा करें।

श्री फजलुल बारी

जनाब जगराम वर्मा जी जिनको हम मोहब्बत से मास्टर साहब कहा करते थे, वे भी

हमारे बीच में नहीं रहे। वे रामझते थे कि आज देश के अन्दर तबाही हो रही है, मुल्क टूटता हुआ नजर आ रहा है। हमारे देश में सामाजिक न्याय नहीं रह गया है। इसके बगैर यह देश समता और समानता नहीं पा सकता है और इसीलिये इस मुल्क की तरक्की रुकी हुई है। मास्टर साहब यही समझते थे और इसी के लिये वे लड़ाई भी लड़ते रहे। ये अजीम शख्सियतें एक जमाना थे। और आज वह जमाना हमारी नजरों से दूर हो रहा है। हम एक अन्धेरे जमाने की ओर बढ़ रहे हैं। पता नहीं इस मुल्क की किस्मत में क्या लिखा और कल क्या होने वाला है कि ऐसी शख्सियतें टूट रहीं हैं। मेरी ख्वाहिश है कि इन शख्सियतों के प्रति दूसरे नेताओं ने और अन्य लोगों ने जो अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। आपने सिर्फ उनके सौम्य परिवार को ही नहीं बल्कि मुल्क के तमाम सम्मानजनक इंसानों तक हमारी श्रद्धांजलि पहुंचा दें। इन शब्दों के साथ मैं अपनी श्रद्धांजलि इन अजीम शख्सियत के प्रति अर्पित करता हूँ।

विधानसभा अध्यक्ष (श्री नियाज हसन)

जहाँ तक माननीय जयराम वर्मा जी का ताल्लुक है वे आखिरी दिन तक काम करते रहे। वह प्रदेश के पूर्व मंत्री एवं पूर्व सांसद भी रहे हैं। वह एक कमेटी के सभापति थे और निधन से दो दिन पहले मुझसे उसी सिलसिले में बात करने आये थे एकायक मालूम हुआ कि वह उठ गये हैं। मैं आप सब की तरफ से इनके परिवार तक संवेदना पहुंचा दूंगा। मैं आपसे अनुरोध करूँगा कि दो मिनट मौन खडे होकर माननीय जयराम वर्मा जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करें।

उ.प्र. के गाँधी श्री जयराम वर्मा जी के पुत्र कमलापति वर्मा जी को गुर्दा देने वाले राम अशीष वर्मा जी का जीवन–परिचय

उ०प्र० के गाँधी जयराम वर्मा जी के पुत्र कमलापति वर्मा, जी पी०जी०आई०, चण्डीगढ़ में गुर्दा के आपरेशन के लिए भर्ती थे। पी०जी०आई०, चण्डीगढ़ में मिलने वालों की भीड़ लगी रहती थी। उस समय हरियाणा के मुख्यमंत्री चौधरी श्री देवीलाल जी थे। मुख्यमंत्री चौधरी श्री देवीलाल जी का जयराम वर्मा जी से घनिष्ठ सम्बन्ध था। श्रीरामअशीष वर्मा जी जयराम वर्मा बापू स्मारक इण्टर कालेज, नाऊ साण्डा केदारनगर जिला फैजाबाद में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत थे। रामअशीष वर्मा जी ने अदम्य साहस, दृढ़ प्रतिज्ञा एवं परोपकार की भावना का परिचय देते हुए अपना एक गुर्दा कमलापति वर्मा जी

को दान करने का निश्चय किया।

27 अक्टूबर 1980 को पी०जी०आई० में भर्ती कमलापति वर्मा को रामअशीष वर्मा जी का एक गुर्दा प्रत्यारोपण कर दिया गया, राम अशीष वर्मा जी पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं। एक गुर्दा देने के कारण उनके स्वास्थ्य पर भी कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ा। महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जयराम वर्मा की चिन्ता की लकीरें गुर्दा प्रत्यारोपण होने के कारण समाप्त हो गयीं। 30 सितम्बर 1996 को राम अशीष जी का माध्यमिक शिक्षा आयोग द्वारा जयराम वर्मा बापू स्मारक इण्टर कालेज, नाऊसाण्डा, केदारनगर फैजाबाद के प्रधानाचार्य के पद पर चयन किया गया ।

रामअशीष वर्मा जी गाँव कजरी, जमालुद्दीननगर पोस्ट–सुल्हनतारा तहसील – अकबरपुर फैजाबाद (वर्तमान में अम्बेडकरनगर) के मूल निवासी हैं। इनकी माता का नाम श्रीमती धनपती वर्मा तथा पिता का नाम श्री सीताराम वर्मा है। सीताराम वर्मा के पाँच पुत्र हैं सबसे बड़े पुत्र का नाम रामअशीष वर्मा, रामआसरे वर्मा, रामनवल वर्मा, रामजतन वर्मा तथा छोटे पुत्र का नाम डॉ० रामनिहाल वर्मा है राम अशीष वर्मा जी का विवाह जयराम वर्मा के चचेरे भतीजे श्री बाबूराम वर्मा की पुत्री सुशीला वर्मा जी के साथ सम्पन्न हुआ। रामअशीष वर्मा जी के चार पुत्र एक पुत्री है। सबसे बड़े पुत्र श्रीशकुमार वर्मा, इंण्डियन ऑयल में डिप्टी मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं। दूसरे पुत्र डॉ० शिशिर कुमार वर्मा जी भूमि संरक्षण अधिकारी के पद पर कार्यरत है। तीसरे पुत्र अवनीश वर्मा एमटेक करके एच०सी०सी० कम्पनी में कार्यरत हैं। चौथे पुत्र रजनीश वर्मा डिप्टी एस०पी० के पद पर कार्यरत है राम अशीष वर्मा जी की पुत्री सुमित चौधरी एम०एससी० पास करके पी–एच०डी० कर रही हैं। श्रीमती सुमित चौधरी जी का खाद्य सुरक्षा औषधि अधिकारी पर चयन हो चुका है और इस पद पर कार्यरत हैं। रामअशीष वर्मा के छोटे भाई इं० राम जतन वर्मा बिल्डिंग डिजाइनिंग के इंजीनियर हैं तथा वे लखनऊ के डी०–362 विभूति खण्ड गोमतीनगर में पटेल डिजाइन के नाम से अपना कार्यालय खोलकर जनता की सेवा कर रहे हैं। इं० रामजतन वर्मा जी स्व० जयराम वर्मा जी के प्रति अटूट श्रद्धा रखते हैं।

रामअशीष वर्मा जी ने जयराम वर्मा स्मारक इण्टर कालेज, नाऊसाण्डा. में 23 वर्ष एक माह चार दिन प्रवक्ता के पद पर अध्यापन का कार्य किया था। 17 वर्ष 9 माह प्रधानाचार्य के पद पर कुशलतापूर्वक अपने दायित्यों का निर्वहन किया है। रामअशीष वर्मा जी का स्वभाव सरल गम्भीर तथा मृदुभाषी है। रामआशीष वर्मा जी के कार्यकाल में

जयराम वर्मा का बापू स्मारक इण्टर कालेज, नाऊसाण्डा, केदारनगर का बहुत विकास हुआ था । उनके कार्यकाल में कई कमरों का निर्माण हो चुका है। रामआशीष वर्मा जी उत्तर प्रदेश के गाँधी एवं महान स्वतंत्रता सेनानी जयराम वर्मा जी के प्रिय व्यक्तियों में से थे जयराम वर्मा जी के प्रति रामआशीष वर्मा के मन में श्रद्धा एवं सम्मान का भाव हमेशा रहता है।

वर्मा जी की बधू श्रीमती पुष्पावती वर्मा

जयराम वर्मा जी के पुत्र कमलापति वर्मा का विवाह जनपद फैजाबाद के तहसील सोहावल के अन्तर्गत गाँव अस्कुना के निवासी रामदास गाँधी के यहाँ सम्पन्न हुआ। पुष्पावती वर्मा का अरकुना गाँव में ननिहाल था। रामदास गाँधी, पुष्पावती वर्मा के मामा थे। पुष्पावती वर्मा के पिता श्री कामताप्रसाद वर्मा, अहमदाबाद में रहते थे। अहमदाबाद में उनका अपना व्यवसाय था। कामताप्रसाद वर्मा सपरिवार, अहमदाबाद में रहते थे। कामताप्रसाद वर्मा के आकस्मिक निधन हो जाने के कारण पुष्पावती वर्मा के विवाह की जिम्मेदारी रामदास गाँधी ने संभाली। जयराम वर्मा के पुत्र कमलापति वर्मा के विवाह के लिए अनेक धनाढ्य लोगों का आना–जाना प्रारम्भ हो गया। सभी लोग दहेज का लालच देने लगे। वर्मा जी सभी लोगों की बातों को सुनकर कहते थे कि विचार करके आपको सूचित कर दूँगा। इसी बीच अरकुना गाँव के निवासी रामदास गाँधी जी भी जयराम, वर्मा जी से मिलने के लिए आये और बताया कि मैं अपनी भाँजी पुष्पावती वर्मा का विवाह आपके पुत्र कमलापति से करने के लिए रिश्ता माँगने आया हूँ।

जयराम वर्मा जी ने पूछा कि लड़की के पिताजी कहाँ हैं तो पुष्पावती वर्मा के मामा रामदास गाँधी ने बताया कि पिता का स्वर्गवास हो चुका है इसलिए विवाह की सारी जिम्मेदारी का दायित्व मुझे निभाना है। वर्मा जी उच्चकोटि के विचारक एवं चिन्तक थे। मानवीय मूल्यों की रक्षा करने तथा सामाजिक दायित्व का निर्वहन करने का प्रश्न उनके समक्ष खड़ा हुआ। वर्मा जी ने गंभीरतापूर्वक विचार किया कि सामाजिक परिवर्तन करने के लिए आजादी की लड़ाई से लेकर आज तक संघर्ष कर रहा हूँ। उसकी रक्षा करने के दायित्व का प्रश्न है। पुष्पावती वर्मा इस समय अपने मामा पर आश्रित है इसलिए इसको मान–सम्मान देना पुण्य कार्य है। इन सब बातों का अपने मन में विचार करके जयराम वर्मा जी ने कमलापति वर्मा के लिए पुष्पावती वर्मा के विवाह का रिश्ता स्वीकार कर लिया और कमलापति वर्मा का विवाह पुष्पावती वर्मा के साथ सम्पन्न हुआ।

इस विवाह से जयराम वर्मा जी चारो दिशाओं से उनके उच्च विचारों को सम्मान देते हुए प्रशंसा एवं बधाइयाँ मिलने लगी। राजनीतिक क्षेत्र में चर्चा का विषय बन गया कि जयराम वर्मा ने सारे अच्छे रिश्तों को इंकार करते हुए एक बेसहारा लड़की को अपनी पुत्रवधू बनाकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया। श्रीमती पुष्पावती वर्मा मृदुभाषी, सुशील एवं संस्कारवान गृहणी थीं। गृहकार्य में कुशल एवं दक्ष थीं। श्रीमती पुष्पावती वर्मा अपने पति कमलापति वर्मा की सेवा के साथ–साथ अपने ससुर जयराम वर्मा जी की भक्तिभाव से सेवा करती थीं। वह दुर्गा जी अनन्य भक्त थीं। सुबह चार बजे उठकर नित्यक्रिया के उपरान्त सबसे पहले कपड़ा धोना इसके बाद स्नान करना, पूजा–पाठ करने के बाद चाय–नाश्ता तैयार करना प्रतिदिन की दिनचर्या थी ।

वर्मा जी से मिलने वालों की भीड़ लगी रहती थी। सभी लोगों के लिए चाय–नाश्ता एवं भोजन का प्रबन्ध वह स्वयं करती थीं। वर्मा जी संख्या में बता देते थे कि इतने लोगों का भोजन बनाना है, श्रीमती पुष्पावती वर्मा प्रेम एवं श्रद्धा के साथ भोजन तैयार करके सबको खिला देती थीं। पाकशाला की विद्या में निपुण थीं उनका बनाया भोजन पाने के बाद लोग प्रशंसा करते करते थक जाते थे। विधानसभा का सत्र चलने पर वर्मा जी दिन में दो बार कुर्ता–धोती एवं टोपी बदल–बदल कर जाते थे।

विधानसभा में उनके साथी मंत्री एवं विधायक पूछते थे कि वर्मा जी आप कपड़ों की सफाई इतनी अच्छी कैसे कर लेते हैं यह प्रश्न एक बार चौ0 चरण सिंह एवं कमलापति त्रिपाठी जी ने भी पूछा? वर्मा जी ने उत्तर दिया कि यह सब कमाल हमारी पुत्रवधू का है वह हमारे कपड़ों को साफ–सुथरा रखने का बहुत ध्यान रखती है और कहती है कि बाबूजी आप कुर्ता–धोती तथा टोपी एक बार पहनने के बाद दूसरा कुर्ता–धोती एवं टोपी पहना कीजिए और कपड़ों की सफाई की जिम्मेदारी हमारी है। इसलिए पुत्रवधू के निवेदन का सम्मान करता हूँ हमारी पुत्रवधू हमारे घर की साक्षात् लक्ष्मी है। कमलापति वर्मा अपनी पत्नी के सेवाभाव से बहुत खुश रहते थे। बच्चों की देखभाल, पिता की सेवा तथा अन्य कार्यों को देखकर अपने मन में सोचते थे कि ऐसी पत्नी बहुत कम लोगों को मिलती है। कमलापति वर्मा एवं पुष्पावती वर्मा के तीन सन्ताने थी, बड़े पुत्र की चाय पीते समय स्वांस नली में ब्रेड फंस जाने के कारण डॉ. श्याम प्रसाद मुखर्जी (सिविल) अस्पताल लखनऊ में इलाज के दौरान मृत्यु हो गयी थी। बच्चे को श्री राम केवल वर्मा अपनी गोद में लेकर डॉ. की मोटर साइकिल पर बैठकर अस्पताल पहुंचे थे। राकेश वर्मा तथा ऊषा वर्मा के रूप में दो सन्ताने है राकेश वर्मा जी सड़क दुर्घटना में घायल होने के कारण दिनांक 8 अक्टूबर 2018 को मृत्यु हो गयीं।

जयराम वर्मा की पुत्री सावित्री वर्मा के साथ लेखक श्री रामकेवल वर्मा जी

वर्मा जी के एक पुत्र कमला पति वर्मा तथा एक पुत्री सावित्री वर्मा हैं। वर्मा जी विस्तारवादी विचार के नेता थे वह अपनी रिश्तेदारियाँ जिले से बाहर दूसरे जिलों में स्थापित करते थे।

वह अपने जिले से बाहर रिश्तेदारियाँ इसलिए स्थापित करते थे. जिससे उनका गहरा संबन्ध पूरे प्रदेश भर में स्थापित हो जाय। अपनी पुत्री सावित्री वर्मा का विवाह जनपद बरती के अन्तर्गत कुसौरा करवा (बाजार) के निवासी श्री त्रिवेनीराम चौधरी के पुत्र श्री पारसनाथ चौधरी के साथ सम्पन्न कर दिया। श्री पारसनाथ चौधरी जी सिंचाई विभाग में अवर अभियन्ता के पद पर कार्यरत थे, जो अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं और स्वर्ग सिधार गये है।

श्री पारसनाथ चौधरी और श्रीमती सावित्री वर्मा के तीन संतानें हैं। जिसमें दो

पुत्रियाँ तथा एक पुत्र हैं। पुत्रियों का नाम सरोजनी वर्मा तथा किरन वर्मा है पुत्र का नाम अनिलकुमार है। श्री पारसनाथ चौधरी की दोनों पुत्रियाँ स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त कर चुकी हैं। पुत्र अनिल कुमार जी परास्नातक की शिक्षा प्राप्त करके पी–एच० डी० डिग्री ले चुके है। और वर्तमान समय में प्रोफेसर एवं हेड यूनिवर्सिटी ऑफ मिसौरी कैन्सस सिटी राज्य अमेरिका में कार्यरत हैं।

सरोजनी वर्मा का विवाह जनपद बस्ती के ग्राम दतुआखोर पोस्ट बघाड़ी के निवासी श्री कृष्णचन्द्र वर्मा के साथ सम्पन्न हुआ। श्री कृष्णचन्द्र वर्मा, लोक निर्माण विभाग में अधीक्षण अभियन्ता के पद पर कार्यरत हैं। श्री कृष्णचन्द्र वर्मा और श्रीमती सरोजनी वर्मा के तीन पुत्रियाँ है। इनका नाम डॉ० पारुल वर्मा (एम०एस०) जिनकी शादी डॉ० मोहित, मोहन सिंह डी०एम० (कार्डियो) से 7 दिसम्बर 2015 को हुई है। सोनल वर्मा (बीटेक)– कार्नेगी मेलन यूनीवर्सिटी अमेरिका से एम०एस० डिग्री प्राप्त कर आस्ट्रेलिया में अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी बी०डी०ओ० में कार्यरत है तथा इं० प्रियल वर्मा (बीटेक) गलगोटिया कालेज, ग्रेटर नोयडा में अध्ययनरत है।

श्री कृष्णचन्द्र वर्मा जी सामाजिक संगठनों में बढ़–चढ़कर भागीदारी निभाते हैं। वह बचपन से ही मेधावी विद्यार्थी थे। इन्होंने गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया मेरिट स्कालरशिप परीक्षा 1976 में पास किया था। राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट श्रेणी के 500 विद्यार्थियों में मेरिट आने के कारण बिड़ला विद्या मन्दिर, नैनीताल में 9 वीं कक्षा से 12 वीं कक्षा तक पूरी शिक्षा का व्ययभार भारत सरकार ने स्कालशिप के रूप में किया। वर्ष 1978 में प्रेसीडेन्ट स्काउट के रूप में राष्ट्रीय पदक मिल चुका है। लायन्स क्लब राजधानी अनिन्द लखनऊ के सदस्य हैं। कूर्मि क्षत्रिय महासभा के उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय उपाध्यक्ष हैं। वर्तमान समय में 3 / 148 विशालखण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ में निवास करते हैं।

श्री पारसनाथ चौधरी और सावित्री वर्मा की दूसरी पुत्री किरन वर्मा, का विवाह जनपद अम्बेडकरनगर के तहसील टाण्डा के अन्तर्गत ग्राम बहादुरपुर पोस्ट – खूखूतारा के निवासी श्री बद्रीप्रसाद वर्मा के पुत्र श्री रामजीत वर्मा (एमटेक) के साथ सम्पन्न हुआ श्री रामजीत वर्मा डायरेक्टर केन्द्रीय जल आयोग, नई दिल्ली के पद पर कार्यरत हैं। श्री रामजीत वर्मा और श्रीमती किरन वर्मा के एक पुत्र और एक पुत्री हैं। पुत्र का नाम कौस्तुभ वर्मा तथा पुत्री का नाम कशिश वर्मा है।

उत्तर प्रदेश के गाँधी जयराम वर्मा जी के संस्कार का प्रभाव पुत्री के परिवार के

सभी लोगों पर पड़ा है। इं. कृष्णचन्द्र वर्मा की गणना प्रभावशाली अधिकारी के रूप में की जाती है। ई० पारसनाथ और श्रीमती सावित्री वर्मा की दोनों पुत्रियाँ श्रीमती सरोजनी वर्मा तथा श्रीमती किरन वर्मा सुशील, सभ्य एवं गृहकार्य में निपुण तथा कुशल गृहणी हैं। श्रीमती सरोजनी वर्मा के विनम्र व्यवहार की लोग प्रशंसा करते हैं। श्री कृष्णचन्द्र वर्मा जी का पुस्तक के प्रकाशन में विशेष सहयोग रहा है।

जयराम वर्मा जी की पौत्री ऊषा वर्मा

ऊषा वर्मा का जन्म 09.11.1964 को बड़ागाँव, इब्राहिमपुर तहसील टाण्डा, जनपद– अम्बेडकरनगर में महान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, जयराम वर्मा जी के यहाँ हुआ इनके पिता स्व० कमलापति वर्मा काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, बनारस में सहायक प्रोफेसर के पद पर सेवारत थे। इनकी माता का नाम श्रीमती पुष्पावती वर्मा था इनके माता एवं पिता के देहान्त हो जाने के बाद पालन–पोषण का भार दादा जी जयराम वर्मा के ऊपर आ गया था। ऊषा वर्मा का पालन पोषण, लखनऊ में कालिदास मार्ग पर स्थित बंगला नं० एक में हुआ था। इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा बाल विद्या मन्दिर, नरही – लखनऊ से प्राप्त किया था। जूनियर हाईस्कूल एवं हाईस्कूल राजकीय कन्या इन्टर कालेज, फैजाबाद से प्राप्त किया। इण्टरमीडिएट की शिक्षा कन्या इण्टर कालेज, टाण्डा–अम्बेडकरनगर से प्राप्त किया। बी.ए. एवं एम.ए. की शिक्षा बी.एन. डिग्री कालेज, अकबरपुर–अम्बेडकरनगर से प्राप्त किया जयराम वर्मा जी शिक्षा के महत्व को जानते थे इसलिए परिवार के सभी सदस्यों को आपने स्नातक एवं परास्नातक स्तर की शिक्षा दिलायी थी। उस समय लड़कियों को शिक्षित करने की परम्परा कम थी। जूनियर हाईस्कूल एवं हाईस्कूल की शिक्षा दिलाने के बाद लोग शादी–विवाह कर देते थे।

ऊषा वर्मा की शिक्षा पूरी हो जाने के बाद उनके विवाह के लिए वर ढूंढ़ने का कार्य अपने शिष्य राम केवल वर्मा तथा मातादीन वर्मा को सौंप दिया। जनपद बाराबंकी के तहसील नवाबगंज के अन्तर्गत ग्राम नौबस्ता पोस्ट– नैनामऊ के निवासी मैकूलाल वर्मा के पुत्र डा० विनोद कुमार वर्मा के साथ ऊषा वर्मा का विवाह 20 अप्रैल 1984 को सम्पन्न हुआ। डा० बिनोद कुमार वर्मा, आचार्य नरेन्द्रदेव कृषि विश्वविद्यालय, कुमारगंज जनपद–फैजाबाद में कार्यरत थे सड़क दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई है। श्रीमती ऊषा वर्मा की तीन संतानें हैं जिनका नाम वैभव वर्मा, गौरव वर्मा एवं पूर्णिमा वर्मा है। श्रीमती ऊषा वर्मा अपनी माता स्व० श्रीमती पुष्पावती वर्मा की तरह मृदुभाषी, संस्कारवान एवं

सरल स्वभाव की महिला हैं। इनके पति डा० विनोद कुमार वर्मा विनम्र एवं– सज्जन स्वभाव, धर्म में आस्था रखने वाले कृषि विशेषज्ञ डाक्टर हैं।

श्रीमती ऊषा वर्मा की तीनों सन्तानें माता–पिता की तरह संस्कारवान, स्वस्थ विचार की धनी एवं विनयशील है। स्व० जयराम वर्मा के आचार–विचार, त्याग–बलिदान एवं उनके सिद्धान्तों का प्रभाव इस परिवार पर पड़ा है। श्रीमती ऊषा वर्मा के परिवार के सभी सदस्य परास्नातक हैं। श्रीमती ऊषा वर्मा जी एक सफल एवं कुशल गृहणी हैं। आपके सभी बच्चे बी०टेक् की शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। जिसमें से वैभव वर्मा एक्सेंचर टेक्नोलॉजी, गुड़गाँव–हरियाणा में सेवारत हैं। पुत्री पूर्णिमा वर्मा प्रथमा बैंक, रामपुर में सहायक प्रबन्धक के पद पर कार्यरत हैं। गौरव वर्मा अभी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। वर्तमान समय में डी0–1/212 विराजखण्ड, गोमतीनगर लखनऊ में निवास करती हैं। डॉ0 विनोद कुमार वर्मा जी की सड़क दुर्घटना में 17.10.2017 को मृत्यु हो चुकी है।

वर्मा जी के नाना–नानी निवासी गाँव दोहरीपुर

जयराम वर्मा जी का ननिहाल, अरिया बाजार के पास गाँवसभा : अलावलपुर के मजरा (पुरवा) दोहरीपुर में था। अकबरपुर–टाण्डा के सड़क मार्ग पर अरिया बाजार के पास शारदा सहायक नहर की पटरी पर एक पक्की सड़क पूरब दिशा की ओर गयी है। शारदा सहायक नहर की पहली पुलिया से आर०सी०सी० सड़क दोहरीपुर गाँव को जोड़ती है। इस आर०सी०सी० सड़क का निर्माण दुग्ध एवं विकास के मंत्री के पद पर रहते हुए मा० राममूर्ति वर्मा जी ने कराया था। वर्मा जी के नाना का नाम श्री सन्त बक्स चौधरी था तथा उनकी नानी का नाम श्रीमती लक्ष्मी देवी था। वर्मा जी के नाना–नानी सनातन धर्म को मानने वाले संस्कारवान व्यक्ति थे। उनके नाना–नानी भगवान सदाशिव के अनन्य भक्त थे। श्री संतबक्श चौधरी के दो पुत्र तथा एक पुत्री थी । पुत्रों का नाम बलदेव वर्मा तथा नन्नन वर्मा था । पुत्री का नाम नैपाली देवी था।

उस समय देश में गुलामी एवं गरीबी थी। गाँव के अधिकतर लोग निरक्षर थे। बलदेव वर्मा की पत्नी का नाम श्रीमती महराजी देवी थी।

वर्मा जी का जन्म ननिहाल – दोहरीपुर में हुआ था। इनका बचपन दोहरीपुर एवं बड़ागाँव इब्राहिमपुर में ही बीता था। वर्मा जी के नाना–नानी ने वर्मा जी का पालन–पोषण बड़े प्यार और दुलार से किया था। उनके दोनों मामा एवं मामी वर्मा जी को बहुत

लाड–प्यार करती थीं। कक्षा 6 से लेकर कक्षा 8 तक की पढ़ाई ननिहाल में रहकर किया था। मामी महराजी देवी ने जीवन पर्यन्त वर्मा जी का मान–सम्मान किया था। राजनीति की ऊँचाई पर पहुँचने के बाद भी अपनी मामी महराजी देवी की कुशलता का समाचार लगातार लेते रहते थे।

महराजी देवी एक साहसी महिला थीं। महराजी देवी की पुत्रवधू कैलाशपती पत्नी सत्यनारायण वर्मा ने एक घटना का उल्लेख करते हुए कहा है कि गाँव का एक व्यक्ति इनके बाग में जबरन कब्जा कर उसमें मकान बनवाना चाहता था महराजी देवी प्रातःकाल थानाध्यक्ष अकबरपुर के पास गयीं और किसी सिपाही के द्वारा थानाध्यक्ष के पास संदेश भिजवाया कि मंत्री जयराम वर्मा जी की मामी आयी हैं और उनसे मिलना चाहती है। थानाध्यक्ष, अकबरपुर उस समय सो रहे थे। सिपाही ने जैसे ही जयराम वर्मा जी की मामी का नाम लिया, थानाध्यक्ष तुरन्त उठकर महराजी देवी के पास आकर आने का कारण पूछा। वर्मा जी के मामी बताया कि हमारे बाग में एक व्यक्ति जबरन कब्जा कर मकान बनाना चाहता है।

इस बात का संज्ञान अपने माँजे जयराम वर्मा जी को इसलिए नहीं बताया कि छोटे–छोटे मुद्दों में उनकी सिफारिश क्यों करायी जाय। कोई हल नहीं निकलेगा तब मंत्री जयराम वर्मा जी को सूचना दी जायेगी! इस बात को सुनकर थानाध्यक्ष ने हाथ जोड़कर कहा कि अच्छा किया जो आपने मंत्री जी को नहीं बताया। आप अपने घर चलिए मैं तुरन्त मय फोर्स के साथ पहुँच रहा हूँ। वर्मा जी की मामी के घर पहुँचते ही थानाध्यक्ष महोदय ने पुलिस बल के साथ दोहरीपुर गाँव पहुँचकर मामले का तुरन्त निपटारा कर दिया।

जयराम वर्मा जी ने अपने ननिहाल दोहरीपुर गाँव में लगातार अपने सम्पर्क एवं सम्बन्धों को बनाये रखा। वर्मा जी का कार्यक्रम जब अकबरपुर व उसके आस–पास लगता था तो अपने ननिहाल दोहरीपुर में अवश्य जाते थे और अपने मामा–मामी एवं गाँव के अपने सहयोगियों का समाचार प्राप्त करने के पश्चात् राजनीति से सम्बन्धित चर्चा करके उनसे विचार–विमर्श करते थे। इस कारण इस गाँव पर वर्मा जी के राजनैतिक विचार एवं चिन्तन का गहरा प्रभाव पड़ा जहाँगीर वर्मा जी रेलवे में नौकरी करते थे। अवकाश लेकर दोहरीपुर गाँव में आने पर जयराम वर्मा जी के साथ कभी–कभी सम्पर्क हो जाता था। जहाँगीर वर्मा तथा उनके दोनो पुत्र वासुदेव वर्गा एवं बाबूलाल वर्मा तथा गाँव के अन्य लोगों के साथ जयराम वर्मा जी देश एवं प्रदेश की हर समस्याओं एवं राजनीति के

द्वारा समाज के हित में किये गये कार्यों की चर्चा करते थे। सारे गाँव के बड़े–बुजुर्ग एवं नौजवान तथा बच्चे उनकी बातों को गम्भीरतापूर्वक सुनते थे।

वर्मा जी कहते थे कि पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् हम भी अपने.. परिवार का पालन–पोषण करने हेतु नौकरी कर सकते थे लेकिन हमने देश एवं समाज की सेवा को सर्वोपरि माना और इस दिशा में कदम बढ़ाकर आज यहाँ तक पहुँचा हूँ। आजादी के संघर्ष से लेकर वर्ष 1946 में विधायक पद प्राप्त होने तथा मंत्री पद प्राप्त होने तक की राजनीति का विस्तारपूर्वक वर्णन किया तथा साथ में भारतीय क्रान्तिदल तथा चौधरी चरण सिंह के द्वारा किसानों के हित में किये गये कार्यों की चर्चा की। राजनीति में उतार–चढ़ाव के बारे में विस्तारपूर्वक वर्णन किया। वर्मा जी ने नवयुवकों और बालकों की तरफ मुखातिब होकर कहा कि राजनीति के माध्यम से पूरे देश एवं समाज के वंचित, गरीब, शोषित किसान एवं नौजवानों के हितों की लड़ाई को लड़ा जा सकता है और उनके हित में कोई कदम उठाया जा सकता है। जिससे पूरे रामाज को लाभ पहुँचे। इरा तरह जब भी वर्मा जी दोहरीपुर गांव में आते इसी प्रकार की सीख गाँव वालों तथा नवयुवकों एवं बालकों को देते थे। स्व० जयराम वर्मा जी के संघर्षों से प्रेरणा प्राप्त कर राममूर्ति वर्मा छात्रों, किसानों एवं मजदूरों के लिए संघर्षरत हो गये। राममूर्ति वर्मा जी जुझारू व्यक्तित्व के धनी हैं। वे लगातार सामन्ती ताकतों से लड़कर प्रदेश के गाँधी जयराम वर्मा एवं डॉ० राममनोहर लोहिया के समाजवाद पर चलकर प्रदेश एवं अम्बेडकरनगर की जनता के लिए संघर्षरत हैं। राममूर्ति वर्मा जी के लगातार संघर्ष के कारण वर्ष 2012 में वह अकबरपुर, विधानसभा जनपद अम्बेडकरनगर से विधानसभा का चुनाव जीतने में सफल हुए।

उ०प्र० में मा० अखिलेश यादव जी ने मुख्यमंत्री के पद का कार्यभार संभाला और अपने मंत्रिमण्डल में राममूर्ति वर्मा जी को दुग्ध एवं विकास विभाग का मंत्री पद दिया । मा० राममूर्ति वर्मा जी ने मंत्री के रूप में उ.प्र. के साथ–साथ अम्बेडकरनगर एवं अकबरपुर विधानसभा में जनहित में अनेक विकास का कार्य किया अकबरपुर विधान सभा 1952 तथा 1967 में जयराम वर्मा जी विधायक बनकर इस विधानसभा का दो बार प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। उसी क्रम में राममूर्ति वर्मा जी ने प्रदेश के अम्बेडकरनगर की जनता की सेवा का संकल्प लिया है। पूर्व मंत्री राममूर्ति वर्मा जी उ०प्र० के गाँधी के रूप में प्रसिद्ध जयराम वर्मा जी की जयन्ती समारोह में भी बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं तथा उनके त्याग बलिदान एवं आदर्शों की प्रशंसा करते हैं। वर्मा जी के नाना नानी, मामा–मामी एवं दोहरीपुर गाँव के

निवासी धन्य हैं। जिन्होंने हर कदम पर जयराम वर्मा जी का साथ दिया।

वर्ष 1976 में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने श्री जयराम वर्मा को नेशनल सीडकार पोटेशन ऑफ इण्डिया तथा गर्वमेंट फार्म्स का चेयरमैन नियुक्त किया था।

राजनैतिक जीवन

वर्मा जी कांग्रेस में वापस आये थे। इन्दिरा जी ने इनको महत्व दिया था। सन् 1977 का लोक सभा का चुनाव आया। वर्मा जी को कैसरगंज बहराइच से टिकट मिलना सुनिश्चित हुआ दिल्ली से वापस आये। कांग्रेस प्रत्याशियों की लिस्ट की प्रतीक्षा होने लगी। रुद्रप्रताप सिंह को टिकट मिला।

उस समय बहुगुणा जगजीवनराम आदि कांग्रेस छोड़ चुके थे। हम लोगों ने वर्मा जी से कहा 'कांग्रेस छोड़ दीजिए। आपका टिकट सुनिश्चित था। इंदिरा जी ने अपने मुंह से कैसरगंज, बहराइच सुनिश्चित करके काट दिया।' समझाया 'पार्टी का अनुशासन होता है। पार्टी का अनुशासन बनाना पार्टी के प्रति निष्ठा—भक्तिभाव है। पार्टी के हित को ध्यान में रखकर ही मेरा टिकट कटा होगा। तो मैं व्यक्तिगत हितों के लिए पार्टी के हित को कैसे त्याग दूँ। टिकट नहीं मिला तो क्या हुआ।'

'हम लोग चुप हो गए।' कुछ दिन बीतने पर 'इंदिरा जी का फोन आया मुख्यमंत्री नारायणदत्त तिवारी के पास। तिवारी जी ने डी० एम० के पास फोन किया— वर्मा जी को सूचित करो लखनऊ आ जायं। डी० एम० ने वर्मा जी को सूचित किया। नारायणदत्त तिवारी ने कहा—इंदिरा जी की राय है कि आप पूरे उत्तर प्रदेश का दौरा करें। पार्टी की ओर से जहाँ ज्यादा आवश्यक समझे वहाँ—वहाँ जायें।'

वर्मा जी दौरा करने लगे। इंदिरा जी रायबरेली आई। यहाँ वर्मा जी को मिलने के लिए बुलवाया। वर्मा जी इंदिरा जी से मिलने के लिए गये। प्रधान मंत्री जी सरकिट हाउस से मीटिंग में गई थीं। वर्मा जी बरामदे में खड़े थे प्रतीक्षा कर रहे थे इतने में इंदिरा जी आई, जैसे ही बरामदे में पहुँची तो इंदिरागांधी हाथ जोड़कर नमस्कार किया। मास्टर साहब ने भी हाथ जोड़कर नमस्कार किया। मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी ने परिचय देते हुए कहा— ये जयराम वर्मा जी हैं। त्यों ही इंदिरा जी मुड़कर कहा कि इनका परिचय आप करा रहे हैं। आप मेरे पिता जी के साथी हैं। नारायणदत तिवारी झेंपकर तीन—चार पग पीछे हो गये। मास्टर साहब इंदिरा जी के साथ अन्दर चले गये। तिवारी जी बाहर ही खड़े

रहे। थोड़ी देर बाद इंदिरा जी ने बुलाया 'सुनिये नारायणदत्त जी'। पुकारने पर अन्दर गये, इतने सहम गये। इंदिरा जी ने वर्मा जी से कहा– ''मुझे सी०आई०डी० रिपोर्ट मिली है कि आपका प्रभाव जनता पर नहीं पड़ रहा है। जनता सवाल पूछती है कांग्रेस ने आपके साथ क्या किया। इसलिए आप को राष्ट्रीय बीज निगम का चेयर मैन बना रही हूँ। मास्टर साहब ने कहा– 'चुनाव समाप्त हो जाने के बाद ही मैं ज्वाइन करूंगा।' मास्टर साहब ने चुनाव खत्म होने के बाद ज्वाइन किया। इसके बाद कांग्रेस हारी। जनता पार्टी की सरकार बनी। चौधरी चरण ने कहा– 'आप कांग्रेस छोड़कर जनता पार्टी में चले आइए।' इन्होंने साफ–साफ इन्कार कर दिया। प्रतिक्रिया स्वरूप चौधरी ने कहा– यदि आप जनता पार्टी में शामिल नहीं होंगे तो हमें कठिनाई होगी चेयर मैन बनाये रखने में।

'मैं इस्तीफा दे दूँगा।'

दफ्तर में पहुँचे। स्टेनो ने प्रोफार्मा आगे बढ़ाया। वर्मा जी ने देख्कर कहा– 'अंग्रेजी में है। इसलिए मैं हस्ताक्षर नहीं करूंगा।'

स्टेनों को बोलकर हिन्दी में त्यागपत्र तैयार करा कर हस्ताक्षर किये। यह था उनका देश की भाषा के प्रति सम्मान।

इंदिरा जी हार चुकी थी, मुलाकात हुई हाल बताया। इंदिरा जी ने कहा, 'इस्तीफा न दीजिएगा।'

''मैंने इस्तीफा दे दिया। कौन व्यर्थ में विवाद में फंसे।' पद के प्रति घोर आसक्ति से आप दूर रहे थे।

सन् 1977 से 1980 तक आप किसी पद पर नहीं रहे आप के जीवन का कृष्ण पक्ष रहा है। सन् 1980 में आपने फैजाबाद लोक सभा का चुनाव जीता। 1980 से 1985 तक आप सांसद रहें सन् 1985 में आप टाण्डा विधान सभा क्षेत्र से गोपी के मुकाबले विजयी हुए। आप को पहले प्रोटीम स्पीकर की शपथ दिलाई गई और फिर नियोजन मंत्री की।

पी०जी०आई० चण्डीगढ़ में चरखा कातते हुए:

मनुष्य की मनःस्थिति बड़ी विचित्र है। विपत्ति में मनुष्य की सारी शक्ति क्षीण सी लगने लगती है। धैर्य, साहस लुन्ज–पुन्ज हो जाता है, सूझ–बूझ समाप्त हो जाती है। व्यक्ति जिंदा लाश जैसा अपने को महसूस करने लगता है।

मा. श्री जयराम वर्मा जी महामहिम राज्यपाल द्वारा मंत्री पद की शपथ ले रहे है
साथ में मा. मुख्यमंत्री श्री नारायण तिवारी जी वर्ष 1985

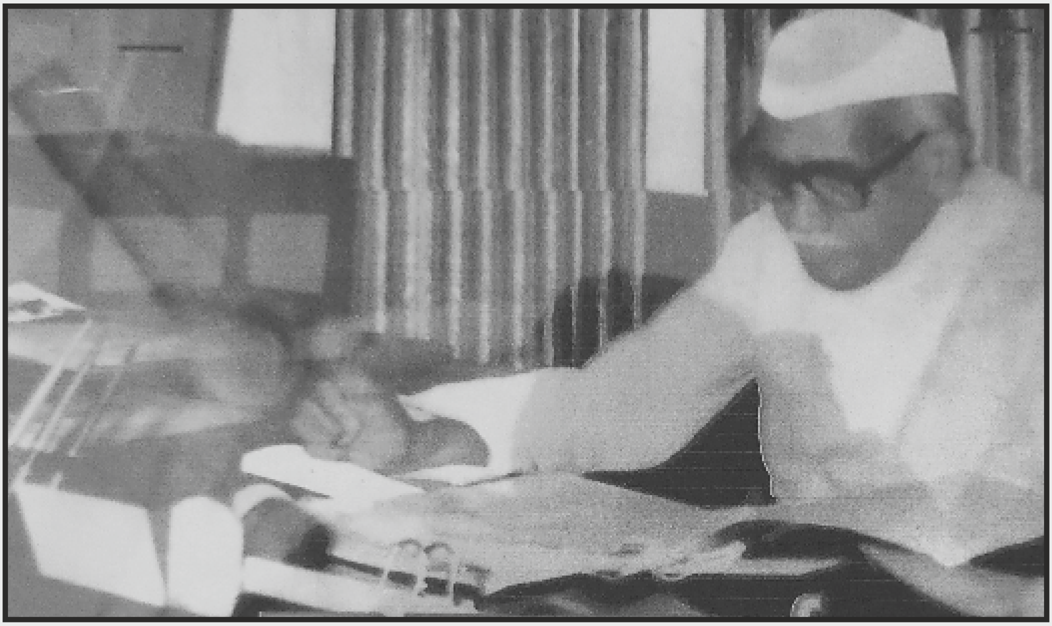

अपने मंत्री कार्यालय में फाइलों पर हस्ताक्षर करते हुए मा. श्री जयराम वर्मा मंत्री
उ.प्र. सरकार वर्ष 1967 की फोटो

मा. श्री जयराम वर्मा जी अपने निवास 1 कालीदास मार्ग पर चर्खा काट रहे है।

श्री जयराम वर्मा जी का हस्त लिखित पत्र

संसद सदस्य
(लोक सभा)

[illegible]

श्री जयराम वर्मा जी के हाथ का लिखा पत्र

संसद सदस्य
(लोक सभा)

[illegible]
१८-१२-८२

[illegible]

[illegible]

५८, महादेव रोड,
नई दिल्ली।
८-१-८१

प्रिय शालिग्रामजी,

नववर्ष के शुभ अवसर पर स्नेहाभिवादन। आपके निस्पृह जीवन को यशस्वी बनाने वाले हर कार्यों में सफलता की शुभ कामना हेतु बहुत धन्यवाद है। भगवान करे यह वर्ष आपके लिये भी मंगलमय हो और सम्पूर्ण देश में प्रेम-शान्ति का वातावरण उत्पन्न करे।

शुभ कामनाओं सहित,

भवदीय
जयराम शर्मा,
भा. पी.

श्री शालिग्राम शर्मा,
सहायक संख्याधिकारी,
प्रतिनिधि संस्थान मित्र निगम,
82, कुकरैल भवन,
उ० प्र० सचिवालय,
लखनऊ

मा० श्री जयराम शर्मा के हाथ का लिखा पत्र

रेलमंत्री श्री अब्दुल गनी खां चौधरी का पत्र श्री जयराम के नाम

DO NO.MR-I(d)/84

2.8.1984

Dear Shri Varma,

Please refer to your letter dated 12.7.84 addressed to the Prime Minister, regarding diversion of Sabarmati Express.

I am happy to inform you that we have decided to continue running of 165/166 Ahmedabad-Faizabad/Varanasi Sabarmati Express according to the existing pattern, except that the train would now carry seven more coaches for Muzaffarpur which will be attached/detached at Lucknow so that this will be an added advantage and service to the travelling public of Northern Eastern U.P. and North Bihar and thereby become a very useful train.

On 24.6.1984 when I was at Lucknow, Raghavan was with me most of the time and I do not remember the question of Sabarmati Express having been discussed on that day. It appears there has been some misunderstanding on this account, and it would be better if this could be forgotten.

With regards.

Yours sincerely,

Sd/-

(A.B.A. Ghani Khan Choudhury)

Shri Jairam Varma, M.P.,
18, Mahadev Road,
New Delhi.

True Copy
Attested
[illegible]
20/6/05

([illegible])
जन सम्पर्क अधिकारी
[illegible]

वर्ष 1984 में तत्कालीन रेल मंत्री अब्दुल गनी खां चौधरी ने फैजाबाद से अहमदाबाद के बीच चलने वाली साबरमती एक्सप्रेस का परिचालन बन्द कर गोरखपुर से अहमदाबाद के बीच चलाने का निर्णय लिया था। फैजाबाद के लोग प्रदर्शन कर रहे थे। फिर श्री जयराम वर्मा एम.पी. फैजाबाद ने प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

25 INDIA 25

सेवा में,

श्री राम केवल शर्मा,
सहायक संरक्षण अधिकारी
प्रतिलिपि संरक्षक, मित्र विभाग
48, शहीद स्मारक भवन,
उ० प्र० सचिवालय,
लखनऊ।

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

कामराज शर्मा,
एम० पी०
नई दिल्ली

पिन PIN 110001

received.

2. जमाकर्ताओं की सुविधा के लिए पास-बुक के महत्व तथा निकासी विधि के विनियम से संबंधित नियमों के कुछ उद्धरण पास-बुक के अंत में दिए गए हैं।

For facility of the depositors, certain extracts from the rules concerning the importance of the pass-book and governing the mode of withdrawals have been reproduced at the end of the pass-book.

3. कृपया संक्षेपाक्षरों का अर्थ जानने के लिए आवरण पृष्ठ के अंदर देखिए।

Please see inside back cover for meanings of abbreviations.

भारतीय स्टेट बैंक

STATE BANK OF INDIA

बचत बैंक

SAVINGS BANK

U P Civil Secretariat Lko 6893

जमाकर्ता (ओं) का नाम

Name(s) of Depositor(s) Jai Ram Verma

M.L.A.

व्यवसाय

Occupation : 1362, ...

पता

Address : ...

खाता सं०

Account No. : S-3812

19/4/1996 Branch Mgr.

दिनांक Date		विवरण Particulars	Amount withdrawn रु. Rs.	पै. p.	Amount deposited रु. Rs.	पै. p.	शेष Balance रु. Rs.	पै. p.	हस्ताक्षर Initials
		B.P					463	24	
Dec	18	B.T.			4441	86			
	22	Toch - 697	600	-			8475	09	
	1	Sal			2800	-			
	6	Toch - 698	6200	-			5073	09	

लेखक श्री राम केवल वर्मा जी का जीवन परिचय

जनपद अम्बेडकर नगर के तहसील अकबर पुर परगना मिझौड़ा विकास क्षेत्र कटेहरी के अन्तर्गत ग्राम नकटहा में श्री वासुदेव वर्मा के घर में दिनांक 03 फरवरी 1940 को राम केवल वर्मा का जन्म हुआ। हाई स्कूल तथा इंटरमीडिएट की पढ़ाई बी.एन. इंटर कालेज अकबर पुर तथा बी काम और एम. काम की पढ़ाई लखनऊ विश्वविद्यालय से की। लखनऊ विश्वविद्यालय के महमूदाबाद हास्टल में रहते थे।

अर्थ एवं संख्या विभाग राज्य नियोजन संस्थान में ये इटाव, बस्ती, रामपुर, सुल्तानपुर, वाराणसी में भी कार्यरत थे। वाराणसी में 1970 में भारत सरकार के गृह विभाग के अधीन सेंसस विभाग में भी कार्यरत रहे। लखनऊ में मण्डलीय अर्थ एवं संख्याधिकारी लखनऊ मण्डल लखनऊ और फिर बाद में उप निदेशक (अर्थ एवं संख्या) लखनऊ मण्डल भी रहे।

उत्तर प्रदेश सचिवालय के वित विभाग में वे ज्येष्ठान्वेषक, शोध अधिकारी उप सचिव सहित कई पदों पर कार्य किये।

वर्ष 1985 में वे उत्तर प्रदेश के नियोजन मंत्री श्री जयराम वर्मा के जन सम्पर्क अधिकारी (पी.आर.ओ.) नियुक्त हुए। उल्लेखनीय कि जब श्री जयराम वर्मा फैजाबाद लोक सभा जीते उस समय भी श्री रामकेवल वर्मा उनके पी.आर.ओ. रहे। लखनऊ में मंत्रियों, राज्यपाल के यहाँ जाने आने के समय सदा साथ रहते थे। मंत्री जी जब कैबिनेट की मीटिंग में जाते थे तब भी वे उनके साथ मंत्रि परिषद कक्ष तक जाते थे। जब श्री वर्मा जी संसद सदस्य थे तो उन्हें चारबाग स्टेशन तक पहुँचाने अथवा वहॉ से जाकर उ.प्र. कृषक समाज मे ठहराने की व्यवस्था करते थे।

वर्ष 1971 में डिप्टी डायरेक्टर सेसस आपरेशन वाराणसी रीजन के कार्यालय में स्टैटिस्टिकल के पद पर कार्य करते समय उन्हें भारत के राष्ट्रपति द्वारा सिल्वर मेडल का सिक्का एवं प्रशस्तीपत्र भी प्राप्त हुआ था।